शुक्ल पक्ष, 23 वर्ष, अंक 172 पृष्ठ 08 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | गुरूवार 18 जुलाई 2024 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

हरियाणा में अग्निवीरों को 10 प्रतिशत आरक्षण

हरियाणा में अग्निवीरों को प्रदेश में नौकरियों में भर्ती में छूट मिलेगी- मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी

बिना ब्याज मिलेगा लोन, सीएम नायब सैनी ने किए ये बड़े एलान, अग्निवीरों को आर्म्ड लाइसेंस दिया जाएगा

चंडीगढ़

हरियाणा सरकार ने अग्निवीरों के लिए बड़ी घोषणा की है। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने बुधवार को एलान किया है कि अग्निवीरों को प्रदेश में 10 प्रतिशत आरक्षण दिया जाएगा। चंडीगढ़ स्थित हरियाणा निवास में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने बुधवार को प्रेस वार्ता की। इस दौरान सीएम सैनी ने अग्निवीरों के लिए कई बड़े एलान किए हैं। उन्होंने कहा कि हरियाणा में अग्निवीरों को प्रदेश में नौकरियों में भर्ती में छूट मिलेगी। उन्होंने कहा कि लगभग दो साल पहले 14 जून 2022 को अग्निवीर योजना लागू की गई थी। इसके तहत चार वर्ष के लिए भारतीय सेना में तैनाती की जाती है। अग्निवीर योजना से स्किल्ड और एक्टिव युवा तैयार होता है। मुख्यमंत्री ने एलान किया कि अग्निवीरों को पुलिस कांस्टेबल, माइनिंग, गार्ड, जेल गार्ड और एसपीओ की भर्ती में 10 प्रतिशत आरक्षण दिया जाएगा। ग्रुप सी में तीन वर्ष की आयु में छूट दी जाएगी। ग्रुप बी में पांच प्रतिशत ग्रुप ए में एक प्रतिशत आरक्षण दिया जाएगा। अग्निवीर सैनिकों को 500000 तक बिना ब्याज का लोन दिया जाएगा। सरकार अग्निवीर सैनिकों को यातायात दुर्घटना में घायल होने पर मुआवजा देगी। सड़क दुर्घटना में घायलों का पूरा खर्च भी सरकार उठाएगी। इसके लिए हर जिले में कमेटी का गठन किया गया है। अगर पीड़ित की मौत हो जाती है तो परिजनों को मुआवजा मिलेगा। इस स्कीम के तहत बीमाकृत तथा बीमा रहित वाहनों और टक्कर मारकर भागने वाले मोटर वाहन दुर्घटनाओं के पीड़ितों को कैशलेस उपचार की सुविधा प्रदान की जाएगी।

अग्निवीर अपना उद्यम स्थापित करेगा तो उसमे पांच लाख तक कोई ब्याज नहीं मिलेगा: सीएम

सीएम सैनी ने कहा कि यदि कोई अग्निवीर अपना उद्यम स्थापित करेगा तो उसमे पांच लाख तक कोई ब्याज नहीं मिलेगा। अग्निवीरों को आर्म्ड लाइसेंस दिया जाएगा। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा, "पीएम मोदी द्वारा 14 जून 2022 को अग्निपथ योजना लागू की गई है।

इस योजना के तहत अग्निवीरों को 4 साल के लिए भारतीय सेना में तैनात किया जाता है। उन्होंने कांग्रेस पर भी निशाना साधा और कहा कि कांग्रेस ने अग्निवीर योजना को लेकर दुष्प्रचार किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अग्निवीर प्रधानमंत्री की लोकहित योजना है। इसलिए कांग्रेस इसके बारे में लोगों को भ्रमित करने का काम कर रही है।

संसद में उठे अग्निवीर मुद्दे के बाद मुद्दा चर्चा में बना हुआ

संसद में उठे अग्निवीर मुद्दे के बाद यह मुद्दा लगातार चर्चा में बना हुआ है। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने हाल ही में सेना में भर्ती की अग्निपथ योजना पर सवाल खड़ा किया था, जिसके बाद इस विषय पर लगातार बहस जारी है। इस बीच हरियाणा सरकार ने अग्निवीरों के लिए बड़ी घोषणा की है।

अग्निवीरों को ग्रुप बी और सी में सरकारी पदों के लिए निर्धारित अधिकतम आयुसीमा में तीन साल की छूट देने का एलान किया है। इसके साथ ही उन्होंने सिविल पदों पर अग्निवीरों की सीधी भर्ती पर आरक्षण की भी घोषणा की है। अग्निवीरों को हरियाणा पुलिस, माइनिंग गार्ड की भर्ती कैटेगरी में 10 फीसदी का आरक्षण भी मिलेगा। इससे पहले केंद्र सरकार ने पूर्व अग्निवीरों के लिए 10 फीसदी पद अर्धसैनिक बलों के लिए आरक्षित करने का घोषणा किया था।

इस घोषणा के बाद सीआईएसएफ ने इसकी तैयारी शुरू कर दी है और इस फैसले के आधार पर सीआईएसएफ जल्द ही भर्तियों के लिए ये नियम लागू करेगी। इसके अलावा अलग-अलग राज्यों ने अग्निवीरों को क्या छुट देगी

एमपी : सरकार 360 घंटे देगी नि:शुल्क प्रशिक्षण

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने अग्निवीरों को लेकर घोषणा की थी कि अग्निवीर योजना में शामिल होने के इच्छुक युवाओं को 360 घंटे का निःशुल्क प्रशिक्षण प्रदान करेगी। सीएम यादव ने यह घोषणा राज्य में रोजगार दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए की थी। इस निःशुल्क प्रशिक्षण में अग्निवीर योजना में शामिल होने के इच्छुक युवाओं को एक बैच में 360 घंटे का मुफ्त प्रशिक्षण मिलेगा।

उत्तर प्रदेश के पुलिस भर्ती में मिलेगी प्राथमिकता

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी ने अग्निवीरों को लेकर घोषणा की है कि उत्तर प्रदेश में अग्निवीरों को पुलिस भर्ती और अन्य संबंधित सेवाओं में प्राथमिकता दी जाएगी।

बजट सत्र से पहले आज हो सकती है केंद्रीय कैबिनेट की बैठक

नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई में केंद्रीय कैबिनेट की बैठक गुरुवार को होने वाली है। यह बैठक सुबह साढ़े 10 बजे से शुरू होगी। समाचार एजेंसी एएनआई ने यह जानकारी दी है। मालूम हो कि यह बैठक 23 जुलाई को पेश किए जाने वाले केंद्रीय बजट 2024 से ठीक पहले हो रही है। इसके अलावा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कल शाम 6 बजे भाजपा मुख्यालय भी जा सकते हैं। इस दौरान वह पार्टी कार्यकर्ताओं को भी संबोधित कर सकते हैं। मालूम हो कि 22 जुलाई को संसद का मानसून सत्र शुरू होने जा रहा है। वहीं, इस सत्र में बीते सत्रों की सरह हंगामा न हो इसके लिए सरकार ने 21 जुलाई को सर्वदलीय बैठक बुलाई है। मानसून सत्र के दौरान ही बजट पेश किया जाना है। ये सत्र 22 जुलाई से शुरू होकर 12 अगस्त तक चलने वाला है। इसी दौरान केंद्र सरकार अपना पूर्ण बजट पेश करेगी।

केजरीवाल को राहत नहीं: सिंघवी के कड़े सवालों पर सीबीआई का जवाब

नई दिल्ली

दिल्ली उच्च न्यायालय ने बुधवार को मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल द्वारा दायर उस याचिका पर अपना फैसला सुरक्षित रख लिया जिसमें आबकारी नीति मामले से संबंधित भ्रष्टाचार के मामले में केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा उनकी गिरफ्तारी को चुनौती दी गई है। केजरीवाल ने अपनी गिरफ्तारी को अवैध बताया है। वहीं सीबीआई ने कहा कि पूरे साक्ष्य आने पर ही कानून के तहत गिरफ्तारी की। जस्टिस नीना बंसल कृष्णा ने केजरीवाल की अंतरिम जमानत याचिका पर भी आदेश सुरक्षित रखा है।

कोर्ट रूम में दोनों पक्षों में हुई बहस

ये एक बीमा गिरफ्तारी- केजरीवाल के वकील

केजरीवाल की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने तर्क दिया कि सीबीआई द्वारा केजरीवाल की गिरफ्तारी एक 'बीमा गिरफ्तारी' है जो कि धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत ईडी मामले के संबंध में शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट द्वारा दी गई अंतरिम जमानत के बाद की बात है। सिंघवी ने जोर देकर कहा कि सर्वोच्च न्यायालय की अंतरिम जमानत के बावजूद, केजरीवाल बीमा गिरफ्तारी के कारण फिर से शुरूआती स्थिति में आ गए हैं।

उन्होंने कहा क्योंकि कुछ लोग चाहते हैं, चाहे किसी भी तरह से वह सलाखों के पीछे रहे। सिंघवी ने आगे कहा कि केजरीवाल के पक्ष में तीन रिहाई आदेश हैं और इसलिए सुझाव दिया कि सीबीआई की गिरफ्तारी एक बीमा गिरफ्तारी है।

शंकराचार्य को केदारनाथ मंदिर ट्रस्ट प्रमुख ने सबूत पेश करने की दी चुनौती

नई दिल्ली

बद्रीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति के अध्यक्ष अजेंद्र अजय ने केदारनाथ मंदिर में सोने के घोटाले के दावों पर ज्योतिर्मठ के शंकराचार्य पर पलटवार किया।दरअसल, ज्योतिर्मठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने दावा किया है कि केदारनाथ मंदिर से 228 किलोग्राम सोना चोरी हुआ है। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए

अजय ने कहा कि केदारनाथ धाम में सोना गायब होने के बारे में स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद का बयान बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने शंकराचार्य से तथ्य और इस मामले में सबूत पेश करने की चुनौती दी है।

शंकराचार्य को चुनौती

अठक ने अजेंद्र अजय से शंकराचार्य के सोना चोरी हो जाने वाले दावे पर जवाब मांगा। इस पर उन्होंने कहा कि 'मैं स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद का सम्मान करता हूं, लेकिन वह दिन भर प्रेस कॉन्फ्रेंस करते रहते हैं...विवाद पैदा करना, सनसनी फैलाना और खबरों में बने रहना स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद की आदत हो गई है। केदारनाथ धाम में सोना गायब होने पर उनका बयान बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। मैं उनसे आग्रह करता हूं और चुनौती भी देता हूं कि वह तथ्य और सबूत सामने लाएं।'

24 घंटे की ये 5 वारदातें नीतीश सरकार पर भारी

पटना

पूर्व मंत्री और विकासशील इंसान पार्टी के संस्थापक मुकेश सहनी के पिता की हत्या के बाद नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव राज्य की कानून व्यवस्था को लेकर एक बार फिर सरकार पर हमलावर हैं। वे बीते काफी दिनों से अपराध से जुड़ी घटनाओं की न्यूज बुलेटिन जारी करते रहे हैं। लेकिन बीते तीन-चार दिनों से यह सिलसिला थम गया था। सहनी के पिता जीतन सहनी की हत्या के बाद वे एक बार फिर कानून व्यवस्था पर सवाल उठा रहे हैं। उच्च कोटि के दूतों द्वारा प्रमाणित डबल इंजन संचालित एनडीए शासित बिहार में ये विगत चंद घंटों की घटनाएं हैं।

निजी उद्योगों में कन्नड़ भाषी लोगों के लिए आरक्षण पर घिरे सिद्धारमैया

बंगलूरू

कर्नाटक में कन्नड़ों को निजी कंपनियों में नौकरी के लिए आरक्षण देने वाले विधेयक पर विवाद गहराता जा रहा है। खुद मुख्यमंत्री सिद्धारमैया इसे लेकर मुश्किलों में घिर गए हैं। दरअसल, उन्होंने पहले एक ट्वीट कर निजी उद्योगों में 'सी और डी' श्रेणी के 100 प्रतिशत पदों को कन्नडिगा (कन्नड़भाषी) लोगों के लिए आरक्षित करने की बात कही। इस पर जब विवाद बढ़ा तो उन्होंने इसे डिलीट कर नया ट्वीट किया। इसमें उन्होंने लिखा, 'सोमवार को हुई कैबिनेट बैठक में राज्य के निजी उद्योगों और अन्य संगठनों में कन्नड़ लोगों के लिए प्रशासनिक पदों के लिए 50% और गैर-

प्रशासनिक पदों के लिए 75% आरक्षण तय करने वाले विधेयक को मंजूरी दे दी गई। हमारी सरकार की इच्छा है कि कन्नड़ लोगों को उनकी ही धरती पर नौकरियों से वंचित न होना पड़े और उन्हें मातृभूमि में आरामदायक जीवन जीने का अवसर मिले। हम कन्नड़ समर्थक सरकार हैं। हमारी प्राथमिकता कन्नड़ लोगों के कल्याण का ध्यान रखना है।'

विवाद क्यों?

दरअसल, कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने एक दिन पहले ही कहा था कि कर्नाटक मंत्रिमंडल ने राज्य के सभी निजी उद्योगों में ह्यसी और डीह्ल श्रेणी के पदों के लिए 100 प्रतिशत कन्नडिगा (कन्नड़भाषी) लोगों की भर्ती अनिवार्य करने वाले विधेयक को मंजूरी दे दी है। उन्होंने कहा था कि राज्य सरकार की प्राथमिकता कन्नड़ लोगों के कल्याण की देखभाल करना है। इस विधेयक का उद्योगपतियों से लेकर विपक्ष तक ने विरोध किया। इसके बाद मुख्यमंत्री ने बुधवार को अपना ट्वीट डिलीट कर दिया।

कई उद्योगपतियों ने विरोध जताया

इससे पहले कई उद्योगपतियों ने बुधवार को इस विधेयक का विरोध जताया। उन्होंने कहा कि यह भेदभावपूर्ण है और आशंका जताई कि टेक उद्योग को नुकसान हो सकता है। मणिपाल ग्लोबल एजुकेशन सर्विसेज के अध्यक्ष मोहनदास पई ने कहा कि विधेयक फासीवादी और असंवैधानिक है।

ओमान के तट पर पलटे तेल टैंकर की मदद के लिए नौसेना ने भेजा आईएनएस तेग

नई दिल्ली

ओमान के तट पर पलटे तेल टैंकर की मदद के लिए भारतीय नौसेना ने अपना युद्धपोत आईएनएस तेग और एक सर्विलांस विमान पी-8 आई को तैनात किया है। भारतीय नौसेना, ओमान की नौसेना के साथ मिलकर समुद्र में बचाव और राहत अभियान चला रही है। तेल टैंकर के क्रू में शामिल 16 सदस्य लापता हैं, जिनमें से 13 भारतीय हैं। जिस जगह तेल टैंकर पलटा, भारतीय युद्धपोत उसी क्षेत्र में परिचालन कर रहा था। जिसके बाद भारतीय युद्धपोत को 15 जुलाई को खोज और बचाव अभियान चलाने का निर्देश दिया गया था। युद्धपोत ने 16 जुलाई की सुबह पलटते हुए तेल टैंकर का पता लगा लिया था।

अदन बंदरगाह जा रहा था जहाज

समुद्री सुरक्षा केंद्र के अनुसार, समुद्र में पलटे जहाज की पहचान प्रेस्टीज फाल्कन के रूप में हुई है।

यह जहाज दुबई के हमरिया बंदरगाह से यमन के अदन बंदरगाह जा रहा था।

जो हमारे साथ, हम उनके साथ: शुभेंदु अधिकारी

बोले- बंद करें ये, 'सबका साथ, सबका विकास' और अल्पसंख्यक मोर्चा

कोलकाता

पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता में भाजपा की प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक हो रही है। इस बैठक में भाजपा नेता शुभेंदु अधिकारी ने अहम बयान दिया। उन्होंने कहा कि 'मैं राष्ट्रवादी मुस्लिमों की बात करता था और आपने भी नारा दिया था कि 'सबका साथ, सबका विकास', लेकिन अब मैं ऐसा नहीं कहूंगा। इसकी जगह मैं कहूंगा कि 'जो हमारे साथ, हम उनके साथ'। बंद करिए ये 'सबका साथ, सबका विकास' का नारा। हमें अल्पसंख्यक मोर्चे की भी जरूरत नहीं है।'

'हम हिंदुओं और संविधान को बचाएंगे'

रिपोर्ट्स के अनुसार, भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक में शुभेंदु अधिकारी ने कहा कि 'हम जीतेंगे, हम हिंदुओं को बचाएंगे और संविधान को बचाएंगे।' इसके बाद शुभेंदु अधिकारी ने जय श्री राम के नारे लगाए और भाजपा कार्यकर्ताओं ने भी तालियां बजाकर उनका स्वागत किया। लोकसभा चुनाव में भाजपा को छह सीटों का नुकसान उठाना पड़ा और पिछले लोकसभा चुनाव में 18 सीटें जीतने वाली भाजपा इस बार 12 पर सिमट गई।

लोकसभा चुनाव में पार्टी के खराब प्रदर्शन के लिए शुभेंदु अधिकारी भी लोगों के निशाने पर हैं क्योंकि मीडिया रिपोर्ट्स में ऐसा कहा गया है कि टिकट बंटवारे में शुभेंदु अधिकारी को काफी तवज्जो दी गई थी।

जनसांख्यिकी बदलाव मेरे लिए जीने-मरने का सवाल: असम सीएम

रांची

असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्व सरमा ने देश में हो रही अवैध घुसपैठ को लेकर गहरी चिंता जाहिर की। उन्होंने राज्य सरकारों पर वोटबैंक की राजनीति के चलते अवैध घुसपैठियों के खिलाफ कार्रवाई न करने का भी आरोप लगाया। असम सीएम ने कहा कि जनसांख्यिकी बदलाव उनके लिए जीने-मरने का मुद्दा है।

असम सीएम ने लगाए गंभीर आरोप

रांची पहुंचे असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्व सरमा ने मीडिया से बात अवैध घुसपैठ को लेकर कहा कि 'घुसपैठिए पहले असम और पश्चिम बंगाल से घुसते हैं और फिर वहां से झारखंड, बिहार और छत्तीसगढ़ पहुंचते हैं। झारखंड हाईकोर्ट ने भी राज्य सरकार को निर्देश दिया था वह घुसपैठियों की पहचान करे और उन्हें वापस भेजे। घुसपैठियों की पहचान करना और उन्हें वापस भेजने की जिम्मेदारी राज्य सरकार की है। यह केंद्र सरकार की जिम्मेदारी नहीं है। मैं असम में ये काम रोजाना करता हूं, अगर आप अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाएंगे और ये कहेंगे कि दिल्ली में बैठी केंद्र सरकार को ये काम करना चाहिए तो फिर आप कुर्सी पर क्यों हैं? आपको कुर्सी छोड़ देनी चाहिए और फिर हम ये काम करके दिखाएंगे।'

'जनसांख्यिकी बदलाव जीवन-मरण का मामला'

असम सीएम ने जनसांख्यिकी बदलाव को लेकर कहा कि 'जनसांख्यिकी में बदलाव मेरे लिए बड़ा मुद्दा है।

असम में मुस्लिम जनसंख्या आज बढ़कर 40 प्रतिशत हो गई है, जबकि साल 1951 में ये सिर्फ 12 प्रतिशत थी। हम कई जिले खो चुके हैं।

जो होना तय है, उसे कौन रोक सकता है... जो आया है उसे एक न एक दिन जाना ही है...

साकार हरि ने तोड़ी चुप्पी, बोले- होनी को कौन टाल सकता, जो आया है... उसे जाना है

कासगंज

हाथरस हादसे के बाद एक बार फिर भोले बाबा उर्फ नारायण साकार हरि उर्फ सूरजपाल मीडिया के कैमरे के सामने आए। उन्होंने कहा कि 2 जुलाई की घटना से मैं दुखी और उदास हूं। लेकिन, जो होना तय है, उसे कौन रोक सकता है। जो आया है उसे एक न एक दिन जाना ही है। हमारे अधिवक्ता डॉ. एपी सिंह और प्रत्यक्षदर्शियों ने हमें जहरीले स्प्रे के बारे में बताया है। उसके अनुसार यह सच है कि इसमें निश्चित रूप से कोई साजिश है। हमारे अनुयायियों को एसआईटी और न्यायिक आयोग पर पूरा

भरोसा है। टीम सच्चाई सामने लाएगी। बताते चलें कि हाथरस के सिकंदराराऊ में 2 जुलाई को भोले बाबा उर्फ साकार हरि ने सत्संग किया था। इसमें करीब 2.5 लाख लोग शामिल हुए। सत्संग के समापन के समय भगदड़ मच गई। इसमें 121 श्रद्धालुओं की जान चला गई। इसके बाद से बाद से मामले में एसआईटी जांच कर रही है। अब बुधवार को भोले बाबा उर्फ साकार हरि अपने पैतृक गांव कासगंज के बहादुरनगर में बने आश्रम पहुंच गए हैं। उनके वकील एपी सिंह ने यह जानकारी दी। गांव में बाहरी लोगों के प्रवेश पर रोक लगा दी गई है। आश्रम के बाहर सेवादारों का भी कड़ा पहरा है।

साकार हरि विश्व उर्फ भोले बाबा ने अपना पहला आश्रम अपने पैतृक गांव बहादुर नगर में वर्ष 1999 में स्थापित किया था। इसके बाद अन्य आश्रम बनाने का सिलसिला शुरू हुआ, लेकिन अपने पैतृक गांव के आश्रम में बाबा पिछले करीब 12 वर्षों से नहीं पहुंचे थे।

बुधवार को वह अचानक अपने पैतृक गांव स्थित आश्रम में अपने अधिवक्ता के साथ पहुंचे और सीधे अंदर चले गए। इस दौरान उनके दर्शनों के लिए काफी संख्या में अनुयायी मौजूद रहे। हाथरस हादसे के बाद भोले बाबा बुधवार को पहली बार इस आश्रम में पहुंचे। लेकिन, भक्तों से नहीं मिले।

बाबा के आश्रम पर आने की जानकारी मिलते ही भक्तों का तांता आश्रम पर लग गया।

धोती पहने बुजुर्ग को मॉल में नहीं मिली एंट्री तो मचा बवाल

बेंगलुरु। कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु की एक वीडियो वायरल होने के बाद से बवाल मच गया है। दरअसल, मंगलवार की शाम को एक बुजुर्ग किसान को जीटी वर्ल्ड मॉल में एंट्री करने से रोक दिया। मॉल के सुरक्षा गार्ड ने बुजुर्ग किसान को अंदर जाने से इसलिए रोका क्योंकि वह धोती पहने हुआ था। काफी बहस के बाद बुजुर्ग की मॉल में एंट्री कराई गई। वीडियो के वायरल होने के बाद सोशल मीडिया में यह मुद्दा तूल पकड़ने लगा। किसानों और कन्नड़ समर्थक संगठन ने इस कृत्य की निंदा की और बुधवार को सभी ने मिलकर जीटी वर्ल्ड मॉल के सामने विरोध प्रदर्शन किया।

मांडा थाना क्षेत्र के विभिन्न गांवों से कुल 51 ताजिया कर्बला पहुंचा

जुलूस के साथ मांडा खास राजा कोठी ग्राउंड में सभी ताजियों को मिलान कर कर्बला ले जाकर सुपुर्द ए खाक किया गया

अखण्ड भारत संदेश

मांडा। यमुनापार क्षेत्र के मांडा थानांतर्गत विभिन्न कस्बों में परंपरागत तरीके से बुधवार को मोहर्रम का जुलूस निकाली गयी। कई अंजुमनों ने मातम कर शहीद इमाम हुसैन समेत उनके साथियों को श्रद्धांजलि पेश की। जुलूस के साथ मांडा खास राजा कोठी ग्राउंड में सभी ताजियों को मिलान कर कर्बला ले जाकर सुपुर्द ए खाक किया गया। मांडा क्षेत्र से विभिन्न कस्बो से ताजिया निकाल कर कर्बला पहुंचे जहां अकीदत मंदों ने फतेहा पढ़ कर शहीदों को याद किया। वही मांडा थाना क्षेत्र के हाटा, दोहथा,मांडा खास, गिरधरपुर, चिलबिला, भारतगंज, दिघीया आदि गांवों से कुल 51 ताजिया बड़े धूम धाम से निकाली गई और मौके पर नायब तहसीलदार, एडीसीपी अभिजीत कुमार एसीपी रवि शंकर गुप्ता व ईओ भारतगंज बंटी कुमारी, इन्स्पेक्टर मांडा शैलेंद्र सिंह, चौकी प्रभारी विनय कुमार के अलावा राजस्व टीम में अशोक कुमार पाण्डेय के साथ नगर पंचायत भारतगंज अध्यक्ष प्रतिनिधि जमीर अहमद उर्फ आमिर भाई, शकील टंकी , तबस्सुम ने त्योहार को सम्पन्न कराने में सहभागिता किया।चप्पे चप्पे पर सुरक्षा के मदेनजर पुलिस और प्रशासन के साथ पीएसी बल तैनात रहे। भारतगंज मे सकुशल मुहर्रम हुआ सम्पन सभी ताजिया दारों ने अपने अपने ताजिया को चौक से लेकर कर्बला पर ले गए जहाँ पर तुर्बत को ठंडा किया गया। बतादे की मुहर्रम का चाँद देखने के बाद पहले दिन से लगातार लगातार रात दिन जागकर 9 दिनों मे ताजिया को बनाते हैऔर दशवे दिन कर्बला पर लेजाकर तुर्बत को ठंडा करते है बतादे की मुहर्रम मुस्लिमो का पहला महीना भी माना जाता है।

फूलपुर क्षेत्र में मातमी धुनों के साथ निकाला गया ताजिया

फूलपुर। मुहर्रम की दसवीं तारीख को कर्बला की जंग में शहीद हुए इमाम हुसैन व उनके 72 साथियों की याद में मुस्लिम समुदाय के लोगों ने फूलपुर क्षेत्र में मातमी जुलूस के साथ ताजिया निकाला। मोहर्रम पर निकले ताजिया के जुलूस में बड़ों के अलावा छोटे बच्चें भी सीना पीट रहे थे। या हुसैन के नारें से पूरा क्षेत्र गूंजता रहा जो गली, चौराहो व सड़कों पर रुककर कर इमाम हुसैन की शहादत की कहानी बयां कर रहे थे। इस दौरान मौलाना ने तकरीर करते हुए कहा कि वर्षों पहले इराक में यजीद नाम का जालिम बादशाह इंसानियत का दुश्मन था जो खुद को खलीफा मानता था।कहा कि यजीद जनता पर हद से ज्यादा जुल्म किया करता था। वह चाहता था कि हजरत इमाम हुसैन उसके खेमे में शामिल हो जाएं। लेकिन हुसैन को यह मंजूर नहीं था। उन्होंने अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाई। यजीद ने इमाम हुसैन व उनके साथियों को कर्बला में शहीद करने के साथ ही उनके बेटे का भी कत्ल कर दिया था। हजरत मोहम्मद साहब के नाती हजरत इमाम हुसैन ने अपने नाना के सिद्धांतों की रक्षा के लिए कर्बला के मैदान में पूरे कुनबा के साथ जामे शहादत पिया था। तत्कालीन शासक यजीद जंग जीतने के बाद भी हार गया। जो कल जिंदाबाद था वह आज भी जिंदाबाद है। हुसैन जिंदाबाद के आज भी नारे बुलंद हैं। क्षेत्र के भरौटी ,बाबूगंज कटरा, पूरेभुलई, वीरकाजी , टटिहरा सहित अन्य जगहों पर जुलूस के साथ ताजिया निकाला गया। ताजिया जुलूस में मौलाना के साथ मोहम्मद इकराम, मोहम्मद यूसुफ, अरमान अहमद, सलीम टाइगर, इश्तियाक अहमद, अली अहमद हाशमी, जैनुल आबदीन के साथ गांव के अन्य लोग शामिल हुए।

न्यूज झरोखा

वेदांता हास्पिटल दिल्ली में अंतिम सांस ली एकौनी कौंधियारा प्रधान कलावती

हृदयगति रुकने से महिला प्रधान की असमायिक निधन से प्रधानों में शोक

करछना। विकासखंड कौंधियारा के ग्राम पंचायत एकौनी गांव की प्रधान कलावती श्रीवास्तव का दिल्ली के वेदांता हास्पिटल में हृदयाघात होने से रविवार शाम को देहांत हो गया। जिससे पूरे ग्रामसभा में शोक की लहर दौड़ गई। एकौनी गांव मूलतः पिछड़ा और अनुसूचित जाति बाहुल्य गांव है। जहां से अबकी बार हुए पंचायत चुनाव में ऐतिहासिक उलटफेर करते हुए सामान्य महिला आरक्षित सीट से कलावती श्रीवास्तव ने पंचायत चुनाव में प्रधान निर्वाचित होकर पूरे क्षेत्र को चौंका दिया था। प्रधान बनने के बाद कलावती श्रीवास्तव ने गांव के कई संपर्क मार्गो का जीर्णोद्धार किया और विशेष रूप से निराश्रित महिलाओं की विधवा पेंशन , और वृद्धा पेंशन योजना का लाभ गांव के लोगों को दिलाने में विशेष सक्रिय रही, प्रधानमंत्री मंत्री आवास योजना का लाभ जरुरतमंदों तक पहुंचाना। मनरेगा योजना का सफल क्रियान्वयन करके रोजगार के अवसर वृद्धि में सहयोग सराहनीय रहा। गांव की महिलाएं और लोग उनके सरल और मृदु स्वभाव को याद करके शोक संतप्त है।

अरैल में श्री बरम बाबा मंदिर प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव सकुशल सम्पन्न

नैनी। नैनी अरैल क्षेत्र में श्री बरम बाबा मंदिर प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव सकुशल संपन्न हुआ। जिसमें भव्य भंडारे का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अजय मिश्रा उर्फ पीलू मिश्रा अरैल पार्षद प्रदीप महरा शास्त्री, पार्षद राकेश जायसवाल, बृजेश मिश्रा, आशीष मिश्र, संतोष दीक्षित, प्रमोद दीक्षित तमाम प्रमुख समाजसेवी वह क्षेत्रवासी उपस्थित रहे।

मांडारोड रेलवे क्रासिंग का छह दिन तक फाटक बंद

मांडा। मांडारोड रेलवे स्टेशन के पश्चिमी छोर पर बना रेलवे क्रासिंग 21 से 26 जुलाई तक सुबह आठ बजे से शाम छह बजे तक बन्द रहेगा। उक्त जानकारी सीनियर सेक्शन इंजीनियर उत्तर मध्य रेलवे ने दी। मांडारोड रेलवे के पश्चिमी छोर पर बना रेलवे क्रासिंग सुबह आठ बजे से शाम छह बजे तक मरम्मत के चलते छह दिनों तक फाटक बंद रहेगा। आम जनता से अपील की है कि रेलवे क्रासिंग फाटक बंद रहने तक बामपुर ओवर ब्रिज से आवागमन करें।

जंघई बनवासी बस्ती के निवासी दूषित पानी पीने को मजबूर

जंघई। बाईपास जंघई के पीछे बनवासी बस्ती के निवासी बारिश के मौसम में दूषित पानी पीने को मजबूर हैं। लोगों ने बताया कि बस्ती में एक ही इंडिया मार्का हैंडपंप लगा हुआ है हैंडपंप के पास बना सोख्ता भर गया है और बारिश का पानी भी इकट्ठा होकर दूषित हो गया है जिसके कारण हैंडपंप का पानी और बारिश का पानी इकट्ठा होकर निकल रहा है। लोग गंदा पानी पीने के लिए मजबूर हैं गंदगी के कारण बीमारी फैलने की आशंका भी बढ़ गई है।

मां गायत्री समूह संस्थान के अध्यक्ष अनिल श्रीवास्तव हुए सम्मानित

करछना। भारती हैबिटेट सेंटर, दिल्ली में आयोजित समारोह में , मां गायत्री समूह संस्थान के चेयरपर्सन और अध्यक्ष अनिल कुमार श्रीवास्तव को संयुक्त राज्य अमेरिका के मैरीलैंड विश्वविद्यालय के कार्यकारी और प्रतिनिधियों द्वारा मानद डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गयो शिक्षा जगत में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया जो उनकी 29 वर्षों से अधिक की अटूट प्रतिबद्धता और कड़ी मेहनत को मान्यता देता है उनके नेतृत्व में मां गायत्री समूह संस्थाओं को उत्कृष्टता का प्रतीक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई है, जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर रहे हैं और शैक्षणिक विकास को प्रोत्साहित कर रहे हैं यह प्रतिष्ठित सम्मान अनिल श्रीवास्तव जी की महत्वपूर्ण उपलब्धियां और भारत में शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए उनकी स्थाई प्रतिबद्धता का प्रमाण है
करछना एवं बराव विद्युत स्टेशन से सप्लाई मे अतिरिक्त कटौती

मिंटिनेंस कार्य हेतु बिजली सुबह 7 बजे से दोपहर 2 बजे तक अतिरिक्त कटौती रहेंगी

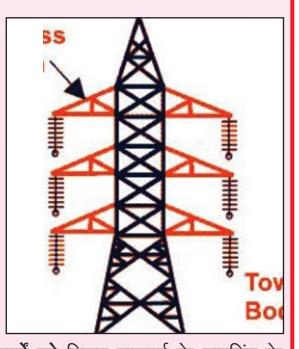

करछना। पावर हाउस के अंतर्गत सभी गांवों की सप्लाई 18 जुलाई से.31 जुलाई तक सुबह 7 बजे से दोपहर 2 बजे तक जरूरी कार्य हेतु सप्लाई बंद रहेगी, प्राप्त जानकारी विद्युत विभाग करछना की ओर से भुण्डा विद्युत सप्लाई स्टेशन से करछना विद्युत स्टेशन के बीच 33000 लाइन की सप्लाई को सही ढंग से संचालित करने के लिए जर्जर तार व पोल बदलने हेतु सुबह 7:00 से दोपहर 2 बजे तक सप्लाई बाधित रहेगी उपभोक्ताओं को सूचित किया जाता है कि वें अपने आवश्यक कार्यों को विद्युत सप्लाई के टाइमिंग के अनुसार दिन चर्या में सामंजस्य स्थापित करते हुए सहयोग प्रदान करें कि वह अपने आवश्यक कार्य समय से निर्धारित समय के अनुसार निपटा लें उक्त आशय की जानकारी विद्युत विभाग करछना के अवर अभियंता सुशील कुमार यादव एवं सीनियर लाईन मैन इंद्र सेन सिंह द्वारा दी गई है।

किसान के बेटे का एपीएफसी में चयन होने पर क्षेत्रीय लोगों में खुशी

मांडा। मंजिल उन्हीं को मिलती है, जिनके सपनों में जान होती है, पंख से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है। यह पंक्तियां लेडियाड़ी के रहने वाले योगेंद्र विकाल प्रजापति पर सटीक बैठती हैं। एक किसान का बेटा होते हुए भी शुरू से ही मेधावी रहे योगेंद्र विकाल प्रजापति ने बेहद कम उम्र में ही सफलता के कई आयाम हासिल किया है। इस बार योगेंद्र विकाल प्रजापति ने एपीएफसी की परीक्षा पास कर भारत में 13वी रैंक हासिल कर असिस्टेंट प्रोविडेंट फंड कमिश्नर पद पर हुआ। कोरांव तहसील के ग्राम लेडियारी के निवासी श्रीराम प्रजापति के पुत्र योगेन्द्र का चयन संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित असिस्टेंट प्रोविडेंट फंड कमिश्नर (APFC) के पद पर हुआ है। योगेन्द्र की आल इंडिया रैंक 13वीं है। बता दें कि बीते सोमवार को असिस्टेंट पीएफ कमिश्नर का रिजल्ट घोषित किया गया जिसमें लेडियारी गांव के एक किसान के बेटे ने 13वीं रैंक लाकर फिर से एक बार अपने गांव व क्षेत्र का नाम रोशन किया है पूरे परिवार में खुशी का माहौल बना हुआ है वहीं पूरे क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है। योगेंद्र विकाल प्रजापति अपने 5 भाइयों में तीसरे नंबर पर हैं जिन्होंने अपने पूरे क्षेत्र में ये कामयाबी हासिल करने वाले पहले युवा हैं। इनके पिता श्रीराम प्रजापति वरिष्ठ समाजिक कार्यकर्ता हैं और इनकी माता आंगनबाड़ी में कार्यरत हैं। वही योगेन्द्र विकाल प्रजापति ने इस कामयाबी का श्रेय अपने माता, पिता व गुरुजनों को दिया।

ट्रेन से गिरकर युवक हुआ घायल

मांडा। हाजीपुर से प्रयागराज के लिए गोदिया एक्सप्रेस से यात्रा कर रहा यात्री बीती मध्यरात्रि ट्रेन से नीचे गिरकर युवक गंभीर रूप से घायल गया। रेलकर्मी सहित रेलवे पुलिस ने इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल मे भर्ती कराया। जहाँ उपचार के बाद नाजुक दशा मे घायल युवक को डाक्टरों ने शहर के लिए रेफर कर दिया। सूचना पर पहुचें परिजनों को आरपीएफ की टीम ने लिखापढ़ी के बाद सुपुर्द किया। दिल्ली हावड़ा रेलमार्ग के मांडा रोड़ रेलवे स्टेशन के मध्य बीती मध्यरात्रि लगभग एक बजे अप लाइन से गुजर रही ट्रेन संख्या 15231 गोदिया एक्सप्रेस से हाजीपुर- प्रयागराज की यात्रा कर रहा युवक खम्भा संख्या 770/23 के समीप गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया। इस दौरान प्वाइंट्स मैन पवन कुमार मिश्रा ने स्टेशन अधीक्षक को सूचना दी। उक्त सूचना पर पहुचें आरपीएफ दरोगा मनोज कुमार त्रिपाठी, कांस्टेबल अशोक कुमार राय टीम के साथ घटनास्थल पहुचें। उन्होंने ने तत्काल घायल युवक को ट्रेक से हटाकर प्लेटफार्म संख्या तीन पर सुरक्षित पहुंचाया। इसके बाद एम्बूलेंस की मदद से इलाज हेतु मांडा सीएचसी मे दाखिल कराया। लेकिन गहरी चोट के कारण डाक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद घायलवस्था मे युवक को स्वरूप रानी नेहरू चिकित्सालय के लिए भेज दिया। रेलवे पुलिस ने घायल युवक की पहचान नितीश कुमार (30) पुत्र राम बहाल सिंह निवासी चकईमान अली लेबर कालोनी नैनी के रूप मे किया। इसके बाद परिजनों को सूचना दी। उधर सूचना पर घायल के पिता राम बहाल, भाई विपिन कुमार अस्पताल पहुचें। जहाँ रेलवे पुलिस ने परिजनों की मांग पर लिखापढ़ी के बाद सुपुर्द कर दिया।

कोरांव इलाका के कई क्षेत्रों में अकीदत के साथ मनाया गया मोहर्रम का त्योहार

क्षेत्र के सभी स्थानों पर शांतिपूर्ण ढंग से निकली ताजिया, लोगों ने मनाया मातम, किए लंगर

कोरांव। कोरांव बाजार समेत क्षेत्र के विभिन्न इलाकों में बड़े अकीदत के साथ मोहर्रम का त्यौहार संपन्न हुआ। प्रत्येक वर्ष की भांति मोहर्रम की ताजिया बड़े ही शांतिपूर्ण ढंग से निकाली गई। लोगों ने मातम मनाते हुए लंगर आयोजित किए। इसके साथ ही फातिहा ख्वानी की। नगर पंचायत कोरांव में आधा दर्जन से अधिक ताजिया का मिलन प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारियों की मौजूदगी में मांडा वाली रोड पर संपन्न हुआ। इसी के साथ बड़ोखर, महुली, अल्हवा, देवघाट, छड़गड़ा, कोसफरा, लेडियारी, खीरी विभिन्न स्थानों पर ताजिया निकाली गई। रीति रिवाज के अनुसार मुस्लिम अनुयायियों ने अपने-अपने धर्म के मुताबिक कार्यक्रम को आयोजित किया। और एक दूसरे ताजियाओं से मिलन कराने के पश्चात सीधे अपने-अपने ताजिया दफन करने के लिए कर्बला पर ले गए। इस आयोजन को सफल बनाने में मुस्लिम समुदाय की शांति कमेटियां और पुलिस प्रशासन एवं भाजपा नगर पंचायत के अध्यक्ष ओमप्रकाश केसरी सभासदगण सहित विभिन्न राजनीतिक दलों के नेता जनप्रतिनिधि मौजूद रहे। ताजिया में शामिल मोहम्मद नौशाद खान, जिला पंचायत सदस्य सोमदत्त सिंह पटेल, राजेश पांडेय, यादवेंद्र अहीर, महताब खान, पूर्व प्रधान हरिशंकर मिश्रा, तहसीलदार राजेश कुमार पाल,थाना प्रभारी कोरांव राकेश कुमार भारती अपने अधीनस्थ कई दरोगाओं,पुलिस सिपाहियों सहित तथा जाफर अली मुन्ना सिंह शहजादे ग्राम प्रधान अल्हवा व्यापार मंडल के पदाधिकारी सहित भारी संख्या में लोग मौजूद रहे।

कांग्रेस नेता को मिली जान से मारने की धमकी

मऊआइमा। मऊआइमा नगर पंचय क्षेत्र के कांग्रेस नगर अध्यक्ष शकील इकबाल फारूकी का आरोप है कि उनके मोहल्ला मौलाना का युवक अनायास उसे गालियां दी और जान से मारने की धमकी दी। शकील इकबाल फारूकी का आरोप है कि जिस समय उन्हें धमकी दी जा रही थी उस समय कई लोग मौजूद थे। शकील इकबाल फारूकी ने मऊआइमा थाने में नामजद तहरीर दी है।

रंजिश को लेकर मार पीट दी जान से मारने की धमकी

मऊआइमा। मऊआइमा थाना क्षेत्र के थम्मन का पुरवा गांव में पुरानी रंजिश को लेकर युवक को गाली गुप्ता देते हुए मार पीटकर घायल कर दिया गया। भुक्तभोगी की तहरीर पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। मऊआइमा के ग्राम थम्मन का पुरवा निवासी प्रदीप कुमार पुत्र राजकुमार का आरोप है कि पुरानी रंजिश को लेकर गांव के ही कतिपय लोगों ने गाली गुप्ता देने लगे। विरोध करने पर मार पीटकर घायल कर दिए। प्रदीप कुमार की तहरीर पर पुलिस ने राजेंद्र उर्फ मुसई ,भग्गू ,नीरज ,मोहित, रोहित पुत्रगण राजेंद्र कुमार तथा गुड्डू पुत्र महेंद्र के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

नगर पंचायत सहित ग्रामीण क्षेत्रों में इमामबाडों पर ताजिया रख मानी गई मन्नतें

गांव क्षेत्र में निकला दसवीं का जूलूस नगर पंचायत में देर रात निकलेगा जुलूस

मऊआइमा। मऊआइमा में मोहर्रम के नवीं पर इमाबाडों पर ताजिया रख कर मानी गई मन्नतें चढाए गए अकीदत के फूल। जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में बुधवार को मोहर्रम का जुलूस निकला और बाद में कर्बला में दफन किया गया। मोहर्रम का नवीं पर पूरे मियां जी, कजियाना कलां, अबूहलीमपटटी आदि इमामबाडों पर ताजिया रख कर शीरीनी, लंगर वितरित किया गया। फूल, अगरबत्ती अकीदत से चढा कर मन्नतें मांगी गई।यह सिलसिला देर रात तक चलता रहा। अबूहलीम पटटी इमामबाड़े पर गुलाम मोहम्मद उर्फ अकरम, शहजादे, गुलजार, शाहिद अली, साजिद,अनवर अली, साकिब, शमीम उद्दीन बच्चा, बकरीदी,अकरम, इरफान, इमरान, आरिफ, दिलशाद आदि कमेटी के लोग मौजूद थे। इसी तरह नवीं पर इमाबाडों पर ताजिया पर लोग फूल अगरबत्ती अकीदत के चढाए।नगर पंचायत मऊआइमा में बुधवार को देर रात में हर स्थानों का ताजिया और जुलूस निकलेगा। जबकि गांव के मरखामऊ, तेजपुर, जाम्हा, सराय ख्वाजा, भाने मऊ, तिलई बाजार, रजवापुर, रामनगर गंसियारी, बांका जलालपुर, भौंका, राजेतारा गंसियारी, छीतेमऊ, महमदपुर सराय अली, मानी उमरपुर, अलावलपुर, वाजिदपुर अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में दसवीं का जूलूस निकाल कर कर्बला में दफन कर दिया गया। जुलूस को सकुशल संपन्न कराने के लिए पुलिस का पुख्ता इंतजाम किया गया था।

शानो-शौकत से निकला जंघई बाजार में मोहर्रम का ताजिया

जंघई। मोहर्रम का चांद दिखने के बाद ताजिया बनाकर दसवें दिन बुधवार को जामा मस्जिद जंघई से करबला के लिए हजरत हसन हुसैन की याद मे अकीकदमंदो द्वारा जामा मस्जिद से विभिन्न ताजिया को जंघई बाजार की विभिन्न भागों से होते हुए शानों शौकत के साथ भारी संख्या मे महिलाओं, बच्चों, पुरुषों के साथ करबला पहुँचाया गया। इस्लाम धर्म की मान्यता के मुताबिक, हजरत इमाम हुसैन अपने 72 साथियों के साथ मोहर्रम माह के 10 वें दिन कर्बला के मैदान में शहीद हो गए थे। उनकी शहादत और कुबार्नी के तौर पर इस दिन को याद किया जाता है कहा जाता है।जंघई मोहर्रम जुलूस में कानून व्यवस्था हेतु चौकी इंचार्ज जंघई संजय कुमार मौर्य, सौरभ यादव उप निरीक्षक, कांस्टेबल समीर सिंह, कांस्टेबल आकाश वर्मा एवं होमगार्ड के जवान मौजूद रहे। ताजिया जुलूस में इश्तियाक खान, ताहिर, सलीम मंसूरी, रियाज अहमद, फिरोज अंसारी, हाजी मुन्ना अंसारी, इलियास सिद्दीकी, पप्पू राइन, जलालुद्दीन, खालिक, सादिक बाबा, डॉ इरशाद अंसारी, नन्हे बप्पा, अरशद अली, शौकत अंसारी, इकबाल अहमद, इलियास अहमद, मोहम्मद गफ्फार, चांद शेख, एजाज शेख, राजू शेख, लियाकत अली, सिद्दिक अहमद, अलीम अहमद, मुन्ना पठान, तमसुद्दीन, एराजुद्दीन, शब्बीर अहमद, शेरु अहमद, अकिल, इश्तियाक, शब्बीर आदि लोग मौजूद रहे।

सरकारी जमीन पर भू-माफिया का कब्जा मुख्यमंत्री को दिया प्रार्थना पत्र

प्रतापपुर। सरायममरेज थानांतर्गत जंघई बाजार में आराजी संख्या 1383 नंबर नवीन परती भूमि है। उक्त नंबर की जमीन पर जंघई बाजार के कथित भू-माफिया ने हंडिया तहसील के राजस्व कर्मियों से मिलकर कूटरचित तरीके से अवैध कब्जा किया है।क्षेत्र पंचायत सदस्य जंघई मनोज कुमार जायसवाल ने मुख्यमंत्री, कमिश्नर, जिलाधिकारी, राजस्व विभाग को प्रार्थना पत्र देकर अवैध कब्जा हटाने का अनुरोध किया है। मनोज जायसवाल ने प्रार्थना पत्र में लिखा है कि भू-माफिया जितेंद्र कुमार जायसवाल नवीन परती गाटा संख्या 1383 को हड़पने की नियत से अपने छोटे पुत्र आशीष कुमार के नाम से फर्जी ढंग से बनावटी अधिकार विहिन शून्य बैनामा को दिखाकर ग्राम सभा की जमीन में फजीर्वाड़ा करके उसमें बिल्डिंग मैटेरियल की दुकान भी खोल लिया है। उक्त कार्य में उसके लड़के विनोद कुमार, विपिन कुमार, अचल कुमार लिप्त हैं। मनोज कुमार जायसवाल के प्रार्थना पत्र उप जिलाधिकारी हंडिया के निर्देश पर जंघई लेखपाल विपिन कुमार ने भोलानाथ उमरवैश्य, मुकेश कुमार उमरवैश्य, अमित कुमार उमरवैश्य पुत्रगण मुकुंदलाल उमरवैश्य निवासी जंघई एवं आशीष कुमार जायसवाल पुत्र जितेंद्र कुमार जायसवाल, सुखराज एवं नागेंद्र पुत्र पांचू राम निवासी अज्ञात के खिलाफ सार्वजनिक संपत्ति नुकसान निवारण

अधिनियम की धारा में मुकदमा पंजीकृत किया है। मनोज कुमार जायसवाल ने प्रशासन से मांग किया है कि लेखपाल विपिन कुमार भू-माफियाओं से मिलकर उचित कार्रवाई नहीं कर रहे हैं जिसके कारण लोगों में रोष व्याप्त है प्रशासन से मांग कि भू-माफियों के खिलाफ विसंगत धाराओं में मुकदमा पंजीकृत करके कठोर कार्रवाई करते हुए अवैध कब्जा एवं अवैध निर्माण को ध्वस्त किया जाए अन्यथा मै बहुत जल्द मुख्यमंत्री के समक्ष अपनी बात रखने लखनऊ जाऊंगा।

किसानों को आत्मनिर्भर बना रही डबल इंजन की सरकार : वाचस्पति

बीज भंडार पर किसानों को बांटा गया ज्वार और बाजरा का बीज

जसरा/बारा। राजकीय कृषि बीज भंडार कांटी-जसरा के द्वारा बुधवार को ज्वार और बाजरा के बीजों का निशुल्क वितरण किया गया। बारा विधायक डा. वाचस्पति ने बीजभंडार के दफ्तर पर किसानों को निशुल्क बीच का पैकेट बांटा और सभी किसानों को आधुनिक विधिक से खेती कर अधिक उत्पादन की अपील की। बारा विधायक डा. वाचस्पति ने कहा, बीते साल की अपेक्षा इस वर्ष 2024 खरीफ की बुवाई का रकबा बढ़ गया है। खरीफ की प्रमुख फसल धान के साथ-साथ दलहन और तिलहन की भी बुवाई प्रचुर मात्रा में की गई है। केंद्र सरकार के द्वारा किसान भाइयों को एमएसपी की सुविधा देकर आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है। उन्होंने किसानों से कहा कि वह धान, गेहूं जैसी परंपरागत फसलों के साथ-साथ ऐसी फसलों की खेती करें, जिससे कम समय में अधिक मुनाफा हो, इसमें सब्जी की खेती भी की जा सकती है। इस दौरान बारा विधायक ने किसान समय लाल, जीतलाल, शिवकरन, जय सिंह, अशोक कुमार तिवारी, शांति देवी, कौशलेष, अतुल कुमार समेत कई अन्य किसानों को निशुल्क बीज प्रदान किया। इस दौरान वस्तु विशेषज्ञ बारा मुकेश सिंह ने किसानों को खेती-किसानी से जुड़ी जानकारियां दी। मौके पर बीज गोदाम प्रभारी कमाल अहमद, तकनीकी सहायक जयवीर सिंह, गौतम सिंह और गरुदेव आदि मौजूद रहे।

या अली या हुसैन की सदाओं से गूंजा शहर, कड़ी सुरक्षा के बीच निकले ताजिए,रास्ते भर पिलाए गए शर्बत

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। या अली या हुसैन की सदाओं के बीच बुधवार को ताजिए निकाले गए। अटाला, खुल्दाबाद, नूरउल्लाह रोड, घंटाघर, जानसेनगंज, विवेकानंद मार्ग, जीरो रोड, कर्बला आदि इलाकों में ताजिया जुलूस निकाला गया। जगह-जगह शर्बत, ठंडा पानी, हलवा, नमकीन, मिठाइ और बिरयानी का वितरण किया गया। इस दौरान सुरक्षा व्यवस्था का व्यापक बंदोबस्त किया गया था। जुलूस के चलते शहर के कई इलाकों में ट्रैफिक डावर्जन किया गया। इसके चलते लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। माहे मुहर्रम की दसवीं को अकीदत के फूल दफन किए जाते हैं। हजारों लाखों शहीदों की शहादत के बाद जब जाकर इस्लाम पूरी दुनिया में फैला है। रसूल के नवासे हसन हुसैन की शहादत मना रहे हैं। सुबह से ही मेहंदी के फूल ताजियादार कर्बला में दफन करने के लिए निकल पडते हैं। बुड्ढा ताजिया अपने वक्त के मुताबिक उठाया जाता है। हुसैन के सौदाई अपने कंधों पर ताजिया लेकर चल पड़ते हैं। मुस्तफा काम्प्लैक्स बैरियर पर गश्त कराया जाता है। पानी, शरबत का पूरे रास्ते इंतजाम रहा। लंगर हो रहे थे। बड़े इत्मीनान से लोग लंगर ले रहे थे।बुड्ढा ताजिया, खुल्दाबाद बैरियर पहुंचता है। यहां पर अचानक भीड़ बहुत ज्यादा बढ़ जाती है। या अली या हुसैन के सदाएं गूंजने लगती है। कंधा देने वालों की तादाद बढ़ जाती है। ताजिया अपने मंजिले मकसूद कर्बला के जानीब धीरे-धीरे बढ रहा था। दसवीं मोहर्रम को बड़े ताजिया पर सुबह से भीड़ थी खाने पीने की दुकान लगी थी मिठाई और फूल बिक रहे थे। औरतें मन्नते मांग रही थीं। फातिया हो रही थी। लंगर की चीज लोगों को हाथों में दिया जा रहा था। ताजिया इमाम बाडे, रख दिया जाता है। अकीदत के फूल से ताजिया भर जाता है। ताजिया उठने का वक्त हो जाता है। जोहर की नमाज के बाद ताजिया या अली या हुसैन लब्बैक या हुसैन के बुलंद नारे के साथ ताजिया उठाया जाता है। मकान और छत्तो से फूल बरसाए जाते हैं। बड़े ताजिया में गश्त करने के बाद। ताजिया जॉनसेन गंज की रोड पर आता है। हुसैनी सैलाब उमड़ पड़ता है। औरतें जियारत के लिए बेचैन थीं। बच्चों को बोबोसा कराया जा रहा था। कंधा देने वालों पर पानी के फव्वारे, गुलाब जल केवड़ा बरसाए जा रहे थे। बड़ी तादाद में औरतें ताजिया का दीदार करने आई थीं उनकी आंखें नम थीं। बड़ा ताजिया गश्त करते हुए जानसेन गंज चौराहे की तरफ बढ़ रहा था।

आठ प्रवक्ताओं का चयन आयोग ने किया निरस्त

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग ने 2020-21 में जारी विज्ञापन के आधार पर राजकीय होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेजों में चयनित प्रवक्ता पैथालॉजी और प्रवक्ता सर्जरी के चार-चार अभ्यर्थियों का चयन निरस्त कर दिया है।संयुक्त सचिव वीके सिंह के अनुसार प्रवक्ता पैथालॉजी के पद पर शिवम कुमार, स्वाती पांडेय, कंचन सिंह और प्रस्तुति जायसवाल का चयन निरस्त करते हुए इनके स्थान पर उमेश चंद, मेराज अहमद अंसार, सुनृता दास और अंजनी कुमार सिंह के नाम की संस्तुति की गई है। इसी प्रकार प्रवक्ता सर्जरी के पद पर शिवम कुमार, स्वाती पांडेय, तृप्ति गुप्ता और अंकित श्रीवास्तव का चयन निरस्त करते हुए अनुज मिश्रा, सुमैय्या जहीन और मोनिशा सिंह के नाम की संस्तुति की गई है। एक पद पर अभ्यर्थी नहीं मिलने के कारण दोबारा विज्ञापित करने की संस्तुति की है।

न्यूज झरोखा

नैनी में ई-रिक्शा की टक्कर से घायल चाट विक्रेता ने दम तोड़ा

ई-रिवशा चालकों के खिलाफ अभियान चलाने की मांग किए पार्षद व व्यापार मंडल अध्यक्ष राकेश जयसवाल

नैनी। नैनी क्षेत्र में मंगलवार को सुबह मशहूर चाट विक्रेता ई-रिक्शा की टक्कर से घायल हो गए थे बुधवार की सुबह उनका निधन हो गया। शंकर ढाल के पास ई-रिक्शा चालक ने रामभवन गुप्ता चाट विक्रेता की बाइक में पीछे से टक्कर मार दी। इससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए थे अस्पताल में इलाज के दौरान बुधवार सुबह निधन हो गया। नाराज नैनी के व्यापार मंडल अध्यक्ष व पार्षद राकेश जायसवाल, मंगल प्रसाद केसरवानी, वरिष्ठ भाजपा नेता संजय श्रीवास्तव, राजेश साहू, धर्मराज पटेल, बबलू, शशि शर्मा, रमेश पटेल समेत दर्जनो व्यापारियों ने ई-रिवशा चालकों के खिलाफ अभियान चलाने की मांग किए हैं।

अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष के भाई की हृदया घात से मौत, शोकसभा आयोजित

नैनी। नैनी पत्रकार विकास परिषद भारत के प्रदेश कार्यालय में पत्रकार विकास परिषद के राष्ट्रीय सचिव/प्रदेश प्रभारी डीके मिश्र द्वारा शोक सभा का आयोजन किया गया उन्होंने बताया कि। स्थानीय तेजी बाजार थाना क्षेत्र के आयर गांव निवासी अधिवक्ता संघ मछली शहर अध्यक्ष जगदंबा प्रसाद मिश्रा के छोटे भाई छोटेलाल मिश्रा का हृदयाघात से मृत्यु हो गया है। वह पिछले एक हफ्ते से वाराणसी के निजी अस्पताल में भर्ती थे। उनके निधन की सूचना जब गांव में आई तो गांव में शोक की लहर दौड़ गई। भतीजे पत्रकार विकास परिषद भारत के प्रदेश संगठन मंत्री जिलाध्यक्ष जौनपुर डॉ चंद्र प्रकाश मिश्र ने बताया कि चाचा छोटे लाल मिश्र बहुत ही समाज प्रेमी व्यक्ति थे। गांव के लोगो के सुख दुख में तुरंत पहुंचते थे। खेती किसानी में बहुत रुचि रखते थे। गांव और क्षेत्र के लोग निज निवास आयर गांव में पहुंचकर शोक प्रकट किए। और उनके मृतक शरीर को इलाहाबाद स्थित छतनाग घाट पर मुखाग्नि दी गई। शोकसभा में संदीप सिंह, आशीष मिश्र, डॉ अरविंद कुमार, वरुण मिश्र, लोकेश तिवारी, तमाम पत्रकार उपस्थित रहे।

भंडारे में उमड़ी श्रद्धालुओ की भीड़

झूंसी। नई झूंसी रेलवे पुलिया के पास स्थित रोग हरण हनुमान जन्मोत्सव पर मंगलवार को देवरहा बाबा मंच न्यास की ओर से भजन संध्या व भंडारे का आयोजन किया गया था। आयोजक रामदास महाराज ने बताया कि भण्डारे के प्रसाद का बहुत बड़ा महत्व है। इस लिए प्रयास ग्रहण करने की होड़ मची थी। भजन संध्या में रत्नेश दुबे की प्रस्तुति सभी श्रोता झूम उठे। दौरान सतुआ बाबा, महापौर गणेश केशरवानी, ब्लाक प्रमुख डब्बू यादव, पार्षद अनिल यादव धुन्नू, पार्षद शिवनारायण यादव, पार्षद सियाराम मौर्य, महामंत्री गंगापार मनोज निषाद, अमर सिंह, राघवेंद्र सिंह, अरविंद राय, मुकेश पहलवान, दुर्गेश, विवेक मिश्रा, संस्कार सिन्हा, आदर्श, मोहित आदि मौजूद रहे।

ट्रैक्टर लगा कर मूंग की फसल जोतने एवं जान से मारने की धमकी पर मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम सराय केशव उर्फ बागी निवासी रमाकांत मिश्रा एडवोकेट पुत्र स्वर्गीय माता प्रसाद तथा रमाकांत के पुत्र प्रवीण कुमार, प्रदीप कुमार का आरोप है कि वह उनके विपक्षी एक राय होकर पांच ट्रैक्टरों से खेत में पकी मूंग की फसल को जोत दिए हाथों में असलाह से धमकाते हुए जान से मारने की धमकी दिए। गालियां देते हुए दौड़ कर जान बचाए। रमाकांत एडवोकेट ने मऊआइमा थाने में बागी का पडोसी गांव कटरादयाराम निवासी राम देव,राम अधार,सीता राम, प्रेमचन्द्र,अभय सिंह, विकास कुमार, विवेक कुमार, सुधीर कुमार, विमलेश कुमार, सुरेंद्र कुमार,रामबरन,अरूण कुमार शुक्ला के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

19 को उद्योग कार्यालय पहुंचे अभ्यर्थी

प्रयागराज। विश्वकर्मा श्रम सम्मान के तहत आवेदन करने वाले अभ्यर्थी 19 जुलाई को सुबह 11 से शाम चार बजे तक उपायुक्त उद्योग कार्यालय में अपने मूल दस्तावेजों के साथ संपर्क करें। उद्यमिता विकास केंद्र के पोर्टल www. diupmsme. upsdc. gov. in पर पिछले दिनों आवेदन हुए थे। दर्जी, हलवाई, बढ़ई, नाई, कुम्हार, लोहार, राजमिखी, सोनार, टोकरी बुनकर, मोची व धोबी ट्रेड के आवेदन पत्रों को स्कोर कार्ड से चयन किया जाना है।

नैनी में मोहर्रम जुलूस में प्रशासन के साथ एसपीओ टीम तैनात रही

नैनी। नैनी क्षेत्र में मोहर्रम जुलूस शांतिपुर ढंग से संपन्न हुआ। नैनी पुलिस मौके पर तैनात रही। सुरक्षा व्यवस्था में एसीपी करछना एवं नैनी कोतवाली प्रभारी यशपाल सिंह फोर्स के साथ गस्त करते रहे। वहीं प्रत्येक वर्ष की भांति पुलिस उपायुक्त यमुनानगर एसीपी करछना एसडीएम करछना एवं नैनी कोतवाली प्रभारी के आदेशानुसार एसपीओ प्रभारी अभयराज सिंह उप प्रभारी परवेज अहमद के निर्देश पर एसपीओ टीम के सदस्यों को जनसंपर्क अधिकारी शेख लियाकत अली संगठन सचिव रविन्द्र एवं रामजी जायसवाल के नेतृत्व ड्यूटी पर तैनात किया गया। इस दौरान एसपीओ प्रभारी अभयराज सिंह उप प्रभारी परवेज अहमद जनसंपर्क अधिकारी शेख लियाकत अली संगठन सचिव रविन्द्र सिंह थाना कमेटी प्रभारी रवि मिश्रा मीडिया प्रभारी वीरेंद्र पटेल रामजी जायसवाल सोनू भारतीया राजेश कुमार रामजी गौड़ सरोज कुमार सिंह यूपेंद्र सिंह, राजू सहनी, विवेक पाल, नौसद अहमद, प्रदीप कुमार, राकेश कुमारआदि सदस्य गण मौजूद रहे।

या अली या हुसैन के नारों से गूंजा इलाका

नई झूंसी व पुरानी झूंसी से निकला जुलूस पुरानी बाजार में एकत्र हुआ यहां ढोल का कम्पटीशन व लाठियों के करतब किया गया इसके बाद पुराने रास्ते से होता हुआ गंगा किनारे पहुंचा और वहां से दोनों गांव के ताजिए कर्बला पहुंचे और ताजिए के फूल को दफन किया गया

झूंसी। बुधवार मोहर्रम की दसवीं तारीख को नई झूंसी,पुरानी झूंसी, कनिहार आदि गांव में पूरे अकीदत के साथ जुलूस निकला। इस दौरान या अली या हुसैन के नारों से पूरा इलाका गूंज उठा। मोहर्रम की दसवीं तारीख बुधवार को इमाम हुसैन की शहादत की याद में मुस्लिम मोहल्लों में फातिहा व कुरान की पढ़ाई किया गया। इसके बाद मुल्क की अमन व तरक्की के लिए दुआ की गई। दोपहर बाद विभिन्न मुहल्लों से सैकड़ों लोग या अली या हुसैन का नारा लगाते हुए घरों से निकले। इस दौरान लंगर व मीठे शरबत को लोगों ने बांटा। नई झूंसी व पुरानी झूंसी से निकला जुलूस पुरानी बाजार में एकत्र हुआ। यहां ढोल का कम्पटीशन व लाठियों के करतब किया गया। इसके बाद पुराने रास्ते से होता हुआ गंगा किनारे पहुंचा और वहां से दोनों गांव के ताजिए कर्बला पहुंचे और ताजिए के फूल को दफन किया गया। जुलूस के साथ थाना अध्यक्ष उपेंद्र प्रताप सिंह फोर्स के साथ जुलूस के साथ चलते रहे जुलूस का नेतृत्व हाजी रकीब , खुर्शीद खान ,महताब खान, सरवर अली ,हाजी समीम ,नसीब खान,ने किया` इस दौरान तौहीद खान ,आमिर खान ,रिजवान अहमद, तबीब खान, पार्षद अनिल यादव उर्फ. धनु ,पार्षद गुलफरोज खान, मोहम्मद नाज, इस्तेखार अहमद, इमरान अहमद, तारिक, शमशेर, अमीन, साहिल, इशरत, आसिफ, सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

कमरे में मिली महिला की लाश

भाई बोला-बन की हत्या हुई, बेड पर शव के बगल में टूटी पड़ी थी चूड़ियां

अखंड भारत संदेश

पोस्टमार्टम हाउस पर परिजनों की भीड

प्रयागराज। 35 साल की महिला की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। ससुराल वाले घर छोड़कर फरार हैं। जबकि पुलिस ने पति को हिरासत में लिया है। उससे पूछताछ कर रही है। मृतका के भाई का आरोप है कि उसकी हत्या ससुराल वालों ने की है, क्योंकि बहन की लाश के बगल में बिस्तर पर ही टूटी चुड़ियां मिलीं थीं। हाथ, पैर व सिर में चोट के निशान भी मिले हैं। पुलिस का कहना है कि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत का कारण स्पष्ट होगा।

14 माह पहले हुई थी शादी :

शिखा का मायका तेलियरगंज स्थित बड़ी बगिया में है। उसकी शादी 14 महीने पहले लूकरगंज के रहने वाले प्रमोद कुमार के साथ हुई थी। प्रमोद अपने घर के पास ही किराने का दुकान चलाता है। मृतका के भाई संदीप कुमार ने पुलिस को दी गई तहरीर में बताया कि सोमवार की रात उसकी बहन पति के साथ अलोपीबाग स्थित बड़ी बहन के घर एक समारोह में गई थी, लौटकर भी आ गई। तब तक को सब सही रहा लेकिन सुबह कॉल आई कि उसकी बहन की मौत हो गई। उसके घर पहुंचने के पहले ही सब लोग लापता हो गए थे। हालांकि पुलिस ने पति को हिरासत में लिया है।

राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद की बैठक संपन्न, सुनाया एजेंडा

मंडलीय और जनपदीय शाखों के गठन एवं पुनर्गठन पर किया विचार, मांगों को लेकर आगामी आंदोलनात्मक कार्यक्रमों की तैयार हुई रूपरेखा

राज्य कर्मचारी संयुक्त बैठक में सम्मिलित सदस्य पदाधिकारी

प्रयागराज। बुधवार को पूर्व निर्धारित राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद की बैठक लखनऊ कामन बी हाल दारुल शफा में आयोजित की गई। जिससे जुड़े विभिन्न संगठनों के प्रदेश पदाधिकारी सहित मंडल व जनपद कर्मचारी प्रतिनिधि उपस्थित हुए। मुख्य रूप से अध्यक्ष आर के वर्मा, महामंत्री आर के निगम, उपाध्यक्ष प्रभात कुमार ने अपने संगठन आश्रित कल्याण संघ के प्रदेश अध्यक्ष व प्रदेश सचिव विनय त्रिपाठी सहित अन्य पदाधिकारियों ने प्रतिभाग किए। जिसमें यह आह्वाहन किया गया कि शत प्रतिशत मौजूद व्यवस्थाओं को प्रभावी यथावत रखने व आवश्यक सेवा लाभ प्रदान करने, लंबित भत्तों की समस्याओं पर विचार करने, आउटसोर्सिंग नियुक्ति प्रथा को विस्तारीकरण पर नियंत्रण करने और कार्यरत संविदा कर्मियों को सम्मानजनक जीविकोपार्जन के लायक मानदेय दिए जाने आदि विषय पर एकत्र होकर संघर्ष किया जाएगा। प्रतिनिधियों से संबंधित विभाग के आवश्यक प्रकरण मांग और सुझाव आमंत्रित किए गए।

मोहर्रम के ताजिया जुलूस मे दो पक्षों मे विवाद, तनाव की स्थिति, घटनास्थल पर पुलिस बल तैनात

डीसीपी यमुनानगर ने घटनास्थल का किया निरीक्षण, अपराधियों की गिरफ़्तारी के लिए गठित की गई टीम

बारा/प्रयागराज। लालापुर थाना क्षेत्र के अमिलिया ग्राम पंचायत में मोहर्रम के अवसर पर ताजिया ले जाते समय दो पक्षों में विवाद से क्षेत्र में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई। मोहर्रम के अवसर पर क्षेत्र के अमिलिया, पचवर, पडुआ, लौंद खुर्द एवं चकशिवचेर सहित 5 ग्राम पंचायतों मे 7 ताजिया निकाली गई। सभी जगह सुबह से ही लगातार पुलिस बल की तैनाती बनी रही। थाना प्रभारी अजय मिश्रा भी लगातार सातों ताजिया स्थल पर भ्रमण कर शान्ति व्यवस्था की जानकारी लेते रहे साथ ही अपनी टीम को लगातार अलर्ट मोड पर रहने के लिए निर्देश देते रहे। 6 जगह ताजिया शान्ति व्यवस्था के साथ निकाली गई। जानकारी के अनुसार अमिलिया ग्राम पंचायत मे लगभग 2 बजे ताजिया उठाई गई और गांव होते हुए कर्बला के लिए ले जा रहे थे। जुलूस जैसे ही अवधेश द्विवेदी के घर के पास पहुंचा तो मुस्लिम समुदाय के कुछ लोग अवधेश द्विवेदी के बाउंड्री पर बैठे गए जिस पर अवधेश द्विवेदी के लड़के ने मना किया कि यहां न बैठो तो दोनों मे कहासुनी हो गई। अवधेश द्विवेदी ने बताया कि ताजिया का जुलूस आगे बढ़ा तो ताजिया निकालने के लिए मेरा केबल काटने लगे मना करने पर अपशब्दों का प्रयोग करने लगे जिससे दोनों पक्षों मे कहासुनी हो गई। मामला इतना बढ़ गया कि मुस्लिम पक्ष के लोग अवधेश द्विवेदी की बाउंड्री डाककर अन्दर पहुँच गए और अवधेश द्विवेदी, उनके लड़के शिवम द्विवेदी, प्रियम द्विवेदी व उनकी लड़की अनुज्ञा द्विवेदी को बुरी तरह मारा पीटा गया। वहाँ पर तैनात पुलिस बल बीच बचाव के लिए पहुंची तो पुलिस से भी धक्का-मुक्की कर सभी भाग निकले। सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची भारी पुलिस बल ने मामला शांत कराया। बता दें कि कुछ ही देर बाद एसीपी बारा संतलाल सरोज, डीसीपी यमुनानगर श्रद्धा नरेन्द्र पाण्डेय व एडीसीपी भी घटनास्थल पर पहुँचकर मामले की बारीकी से जाँच कर अपराधियों की गिरफ़्तारी के लिए टीम गठित की। डीसीपी श्रद्धा नरेन्द्र पाण्डेय ने घायल अवधेश द्विवेदी को तत्काल इलाज के लिए अस्पताल भिजवाया। पीड़ित पक्ष के लोगों को आश्वस्त किया कि गुनहगारों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी। खबर लिखे जाने तक अमिलिया मे भारी पुलिस बल तैनात रही।

संस्कार भारती जिला इकाई का हुआ गठन गिरजा शंकर अध्यक्ष व शाश्वत बने महामंत्री

सहसों। संस्कार भारती जिला ईकाई की एक आवश्यक बैठक बुधवार को झूंसी स्थित गोधाम विहिप कार्यालय में आयोजित की गई। बैठक में संगठन के रीति नीति एवं विस्तार सहित विभिन्न बिंदुओं पर विचार विमर्श करते हुए प्रांतीय अध्यक्ष डॉक्टर गणेश प्रसाद अवस्थी के मौजूदगी में संगठन की पुरानी इकाई को भंग करके नई ईकाई का गठन किया गया। जिसमें नव मनोनीत पदाधिकारियों की घोषणा कर गिरिजा शंकर राजन को अध्यक्ष व धनंजय शाश्वत को महामंत्री मनोनीत किया। वहीं उपाध्यक्ष पद के लिए विकास इलाहाबादी, संतोष समर्थ एवं अमित यादव मनोनीत हुए जिम्मेदारी दी गई। संगठन में मंत्री पद के लिए जितेंद्र जलज, मुक्ति नारायण तिवारी एवं मोहिनी श्रीवास्तव को नामित किया गया। गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी कमलेश पांडेय कमल को कोषाध्यक्ष एवं साहित्य कला प्रमुख के रूप में राधा शुक्ला को नियुक्त किया गया। इसी प्रकार प्रशांत भरूहिया प्रयागी को सोरांव तहसील का संयोजक की जिम्मेदारी सौंपी गई। बैठक में प्रमुख रूप से विभाग संयोजक सुशील राय, महानगर अध्यक्ष योगेंद्र मिश्रा, विश्वविद्यालय अध्यक्ष इंदु शर्मा, महानगर महामंत्री विभव शंकर मिश्र, रामानंद शुक्ला एवं संदीप दुबे सहित संगठन के आदि सदस्य उपस्थित रहे।

शुभालय अर्पाटमेंट सोसायटी की अध्यक्ष बनी प्रीति सिंह भदौरिया और उपाध्यक्ष मनोज कुमार

झूंसी। कटका स्थित शुभालय होम ओनर्स वेलफेयर एसोसिएशन (सिटीजन शुभालय ग्रुप हाउसिंग परिसर) सोसायटी का गठन मंगलवार को किया गया। इसके तहत प्रीति सिंह भदौरिया पत्नी जेएस भदौरिया निर्विवरोध अध्यक्ष निर्वाचित हुईं। उपाध्यक्ष पद पर मेनाज कुमार निर्वाचित हुए हैं। इसी प्रकार सचिव बीना देवी पत्नी अरुण पांडेय निर्वाचित हुई हैं। उप सचिव विवेक सिंह और कोषाध्यक्ष के पद पर डॉ.पुनीत कुमार अग्रवाल निर्वाचित हुए हैं। कार्यकारिणी सदस्य श्वेता श्रीवास्तव,अर्पिता नैयर,सरिता देवी,डॉ.मनोज कुमार उपाध्याय और राजकुमार मौर्य बनाए गए हैं। बाद में सभी को पद एवं गोपनीयता की शपथ भी दिलाई गई।

सीमा गर्ग बनीं अध्यक्ष और प्रज्ञा कपूर सचिव

प्रयागराज। इनरव्हील क्लब ऑफ इलाहाबाद का अधिष्ठापन समारोह मंगलवार को हुआ। क्लब की पूर्व अध्यक्ष रेनू केला ने नई अध्यक्ष सीमा गर्ग को कॉलर पहनाकर जिम्मेदारी सौंपी। सचिव प्रज्ञा कपूर, कोषाध्यक्ष सीमा सिंघल, गीता चतुर्वेदी को संपादिका व अल्का अग्रवाल को आईएसओ का पदभार सौंपा गया। क्लब की संस्थापक सदस्य सुषमा कपूर को औनरी एक्टिव सदस्य बनाकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर प्रिया नारायण, किरण चावला, नुपूर कपूर, आराधना, मंजुला गर्ग, रेखा आदि मौजूद रहीं।

शिक्षक को ट्रैफिक चौराहे पर बुलाकर पीटा

प्रयागराज। एक शिक्षक को फोन कर ट्रैफिक चौराहे के पास बुलाया गया और मारपीट कर लहूलुहान कर दिया। पीड़ित ने कैंट थाने में गोलू यादव, पीयूष, सर्वेश, प्रसाद व तीन अज्ञात के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई है। बलिया के भीमपुरा सरयां डीहू निवासी प्रदीप कुमार यादव डायट हॉस्टल में रहकर शिक्षक की ट्रेनिंग कर रहे हैं। तहरीर दी है कि उनके मोबाइल पर एक अज्ञात नंबर से कॉल आई और ट्रैफिक चाराहे के पास बुलाया गया। वह पहुंचे तो पहले से ही घात लगाए आरोपियों ने डंडे और रॉड से हमला कर दिया। लोगों ने एक हमलावर गोलू को पकड़ लिया।

टैगोर टाउन में पांच निर्माण सील किए गए

प्रयागराज। प्रयागराज विकास प्राधिकरण ने मंगलवार को टैगोर टाउन में पांच अवैध निर्माण सील कर दिया। पीडीए के प्रवर्तन दल ने जवाहर लाल नेहरू रोड पर अनिल गोस्वामी, कर्नलगंज इंटर कॉलेज के पीछे उमेश केसरवानी, प्रमोद सिंह, चर्च लेन में आनंद कुमार महाजन और टैगोर टाउन बैंक रोड पर असित अजेला का निर्माण सील किया।

कड़ी सुरक्षा के बीच करबला में दफन हुए ताजिये

जुलूस के दौरान अखाड़ों ने दिखाए करतब, शेखपुर में राजा उदय के प्रतिनिधि ने की पूजा, फिर निकला जुलूस

नम आंखों से कर्बला में दफ्न किए गए ताजिए

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। मोहर्रम के दसवें दिन आज बुधवार को कर्बला में ताजिए नम आंखों से दफन किए गए।नगर में अंजुमन जुलूस निकालकर ताजियेदार कर्बला पर पहुंचें,इस दौरान सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम प्रशासन द्वारा किए गए।बता दे कि मुस्लिम समुदाय के लोगों के लिए बेहद गम भरा मोहर्रम का महीना होता है।पैगंबर मोहम्मद साहब की नवासे इमाम हुसैन और उनके 72 साथी कर्बला की जंग में शहीद हुए थे जिनकी याद में यह मोहर्रम त्यौहार मनाया जाता है। पट्टी नगर क्षेत्र में 5 ताजियेदारों द्वारा ताजिया जुलूस निकाला गया जिनमें से एक बेलसंडी गांव, एक चिक पट्टी मोहल्ला, दो पुरानी पट्टी से और एक ताजिया गल्ला मंडी से निकाला गया। सभी चैकिया पट्टी चैराहे पर एकत्रित हुई और सभी ताजियादारों ने अपने अपने करतब दिखलाए। चैक पर करतब दिखलाने के बाद एक साथ कर्बला के लिए प्रस्थान किए।इस दौरान सुरक्षा व्यवस्था में पुलिस मुस्तैद रही। एडिशनल एसपी दुर्गेश कुमार सिंह ने सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेते पूरे तहसील क्षेत्र मे नजर आए। एसडीएम पट्टी तनवीर अहमद, सीओ पट्टी आनंद कुमार राय,कोतवाल पट्टी आलोक कुमार सिंह क्षेत्र में भ्रमणशील रहे और अराजकताओं पर पैनी नजर बनाए रखा। इस दौरान भारी संख्या में पुलिस बल सभी चैराहों तैनात नजर आए।

नगर में अंजुमन द्वारा निकाला गया जुलूस।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। कड़ी सुरक्षा के बीच मोहर्रम की दसवीं पर कई अखाड़ों द्वारा ताजिये निकाले गये। देर शाम मिलान के बाद करबला में ताजिये दफन किये गये। जुलूस के दौरान विभिन्न अखाड़ों द्वारा करतब दिखाये गये। अंजुमनों द्वारा जंजीरी मातम किया गया तो लोको अखाड़े द्वारा हैरतअंगेज कारनामे दिखाये गये। इस दौरान चैक घंटाघर पर लंगर का भी आयोजन किया गया। अकीदतमंदों को जर्दा, बिरयानी, पुलाव खिलाया गया व शरबत पिलाया गया।

चेहल्लुम पर करतब दिखाने के लिये सभी अखाड़ों ने अपनी-अपनी झांकियां निकालीं। मक्के और मदीनों तथा दुलदुल घोड़े की झांकी को भी पूरे मनोयोग से सजाया गया था। अखाड़ों में करतब दिखाने वाले युवाओं ने लाठी, भाला, तलवार व चाकूओं से हैरतअंगेज प्रदर्शन किये। जुलूस में सैकड़ों की संख्या में बच्चे, बूढ़े और महिलाएं सभी शामिल लोग शामिल रहे। सभी अखाड़े शहर के विभिन्न मार्गों से होते हुए चैक घंटाघर पर एकत्र हुए और हैरतअंगेज प्रदर्शन करते हुए करबला की तरफ जाते रहे। सुरक्षा व्यवस्था के लिये पुलिस प्रशासन द्वारा पूरी तरह से सुरक्षा व्यवस्था चैकस रही। उधर नगर पालिका ने चैक से लेकर करबला तक सफाई व चूना डाल रखा था। बता दें कि शहर के ताजिये चिलबिला स्थित करबला में दफन किये जाते हैं। वैसे तो पूरे जनपद में 761 ताजिये निकले हैं लेकिन विशेष सतर्कता कुण्डा क्षेत्र में देखी गई जहां भारी पुलिस बल तैनात किया गया।

कुण्डा प्रतिनिधि द्वारा कुण्डा का चर्चित गांव शेखपुर जो मुहर्रम के त्योहार पर सुर्खियों में आ जाता है वहां आज पुलिस कि निगरानी मे हाइवे के बगल बने हनुमान मंदिर पर पूजा संपन्न हुयी। राजा उदय सिंह के प्रतिनिधि ने हार फूल और प्रसाद चढाकर पूजा सम्पन्न किया। बताते चलें कि यह वही मंदिर है जहाँ पहले भण्डारे का आयोजन किया जाता था जिस पर मामला न्यायालय तक पहुचा और न्यायालय के आदेश की जिला प्रशासन आपने विवेक से निर्णय करे, उसके बाद जिला प्रशासन ने इस भण्डारे पर रोक लगा दिया, उसके बाद से हर साल मुहर्रम पर पुलिस राजा भदरी को हाउस अरेस्ट कर दिया जाता है।

बिजली के तार से छू गया अलम, युवक की मौत

अखंड भारत संदेश

कुण्डा, प्रतापगढ़। बाबूगंज रेलवे फाटक से गुजर रहा अलम के जुलुस मे उत्साही युवक जो बड़े से पाइप मे झंडा लगाकर चल रहा था, लोहे का डंडा उत्साह मे हाई वोल्टेज तार से छु गया जिससे उसकी चपेट मे आने से युवक बुरी तरह झूलस गया। आनन फानन मे लोग उसे लेकर कुण्डा सीएचसी भागे जहाँ चिकित्सकों बमने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक कुण्डा थाना क्षेत्र के मझिलगाँव के मियाँ का पूरवा का रहने वाला वासिफ उम्र 34 साल था। मौत की खबर सुनकर शेखपुर और मझिलगाँव के लोगों ने बाजा बंद करवा दिया और शांति से ताजिया दफन कर अपने घर लौट गये।

नेशनल हाइवे पर बैरिकेडिंग को लेकर एसडीएम सख्त

राजमार्ग पर दो स्थानों पर उत्पन्न कर रहे हैं अवरोध

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। नेशनल हाइवे पर बैरिकेडिंग लगाकर सुगम यात्रा में बाधा डाल रहे लोगो के विरुद्ध कार्रवाई के लिए एसडीएम ने कोतवाल को आदेश दिया है। एनएच पर नियमों को दरकिनार कर हो रही मनमानी की शिकायत लोगो ने उपजिलाधिकारी से की थी।

स्थानीय कोतवाली क्षेत्र के नगर स्थित लखनऊ-वाराणसी राजमार्ग पर मदरमेरी व सरोजनी कॉन्वेंट स्कूल के सामने बैरिकेडिंग लगाकर लोगो की यात्रा में बाधा पैदा की जा रही है,जो एनएच के नियमों के विरुद्ध है।नेशनल हाइवे पर विना उच्चाधिकारियों के अनुमति के बगैर बैरिकेडिंग लगाना नियम विरुद्ध कार्य है। फिर भी कुछ लोग नियमों को दरकिनार करते हुए राष्ट्रीय राजमार्ग पर लोगो की सुगम यात्रा में अवरोध पैदा कर रहे हैं। जबकि एनएच पर किसी भी प्रकार के ब्रेकर के साथ कोई अन्य अवरोध न किया जाए जिससे की लोगो की यात्रा में बाधा उत्पन्न हो,लेकिन यहां तो लगभग पांच सौ मीटर की दूरी पर दो स्थानों पर बैरिकेडिंग लगाकर लोग अपनी मनमानी साबित करना चाहते है या फिर दबंगई? लोगो की मनमानी की वजह से यात्रा में अवरोध पैदा होने के साथ सड़क दुर्घटानाओं की भी संभावनाएं बढ़ती हुई दिखाई दे रही है। लोगों की शिकायत को गंभीरता से लेते हुए एसडीएम एनएच पर अवरोध उत्पन्न करने वालों के विरुद्ध सख्त दिखाई दिए। उपजिलाधिकारी ने उक्त लोगो पर कार्रवाई हेतु एसएचओ को आदेश दिया है।

नेशनल हाईवे पर लगी बैरीकेडिंग।

बाइक समेत कीमती सामान चुरा ले गए चोर

पट्टी, प्रतापगढ़। कोतवाली क्षेत्र के रमईपुर नेवादा गांव में घर के सामने खड़ी बाइक के साथ ही अज्ञात चोर घर के भीतर से मोबाइल व कीमती सामान चुरा ले गए। पीड़ित ने मामले की तहरीर पुलिस को दी है। गांव के रहने वाले इस्माइल पुत्र हबिलाल ने कोतवाली पुलिस को शिकायती पत्र देकर आरोप लगाया है कि बुधवार की रात अज्ञात चोर उसके घर के भीतर घुस गए और घर के भीतर से मोबाइल समेत अन्य कीमती सामान के साथ ही घर के सामने खड़ी प्लैटिना बाइक चुरा ले गए। सुबह जब घटना की जानकारी हुई तो पीड़ित आवक रह गया। मामले की शिकायत लेकर पीड़ित कोतवाली पहुंचा और अज्ञात चोरों के विरुद्ध चोरी की तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। शिकायती पत्र के आधार पर पट्टी कोतवाली पुलिस मामले की जांच कर रही है।

संदिग्ध परिस्थितियों मे पंखे से लटकता मिला युवक का शव, परिजनों में मचा कोहराम

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगंज थाना क्षेत्र के केरावडीह शेरवानीपुर निवासी हुमायु पुत्र नसीर (34) वर्षीय की मंगलवार की देर रात लगभग 9 बजे घर के अंदर कमरे मे पंखा से साड़ी के सहारे लटकता शव मिलने से हड़कंप मच गया। सूचना पर पहुंची नवाबगंज पुलिस ने शव की लिखा पढ़ी करके थाने ले गई जंहा लिखा पढ़ी करके रात मे ही जिला अस्पताल भेज दिया।

घटना के बारे मे बताया जाता है कि मृतक हुमायु की पत्नी लगभग 6-7 माह पहले किसी दूसरे के साथ चली गई जिसके एक लड़का व दो लड़की है, जिसमें लड़का घर के बाहर से अचानक गायब हो गया, जिसका आज तक पता नहीं चल सका। घर पर इन दिनों मृतक की साली लगभग 5 महीना से रह रही थी। मंगलवार को गांव मे प्रेम साहू के यहां तेरही पर मृतक के परिजन लोग खाना खाने गये थे। लौटकर घर आये तो देखा कि हुमायु का शव पंखा के सहारे साडी के फंदे से लटक रहा है। परिजनों मे कोहराम मच गया। घटना के वक्त मृतक हुमायु की दोनो बेटी घर पर मौजूद थी। अपने पिता को चिल्ला चिल्ला कर ऐसा करने से मना कर रही थी, लेकिन अपने मासूम बच्चो पर पिता को जरा सा दिल नही पसीजा और अपनी इहलीला समाप्त कर ली। पुलिस ने शव को कब्जे मे लेकर पी एम को भेज दिया। मृतक की मां नब्बा पड़ोस के स्कूल मे नौकरी करती थी जो कुछ माह पहले नौकरी छोड़ दिया था जिसकी आर्थिक स्थिति काफी नाजुक है। इस बाबत थाना प्रभारी धीरेन्द्र ठाकुर का कहना है कि पीएम रिपोर्ट आने के बाद घटना की सही कारण पता चलेगा। घटना की जाँच पड़ताल की जा रही है।

हिस्ट्रीशीटर समेत दो आरोपियों को पुलिस ने दबोचा, भेजा जेल

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने हिस्ट्रीशीटर समेत दो लोगों को गिरफ्तार करने में कामयाबी हासिल की है। कोतवाली लालगंज के दरोगा दीपक कुमार यादव बुधवार सुबह करीब साढ़े आठ बजे फोर्स के साथ गश्त पर निकले थे। इसी बीच हिस्ट्रीशीटर अपराधी पंचलाल वर्मा के मेढ़ावां नहर की पुलिया के पास होने की मुखबिर से सूचना मिली। दरोगा ने पुलिस बल के साथ घेराबंदी करके पंचलाल वर्मा पुत्र देवतादीन वर्मा निवासी पूरे रमन मेढ़ावां को धर दबोचा। तलाशी के दौरान उसके पास से चार देशी बम की बरामदगी भी हुई है। वहीं दरोगा राजेन्द्रराम ने सुबह नया का पुरवा बेलहा के पास से वांछित सत्यम पुत्र छोटे लाल सरोज निवासी खरावां सराय भागमानी को मुखबिर की सूचना पर घेराबंदी करके गिरफ्तार किया। कोतवाल नीरज यादव ने बताया कि हिस्ट्रीशीटर पंचलाल पर तीस मुकदमें दर्ज हैं। गिरफ्तार दोनों आरोपियों को जेल भेज दिया गया है।

आधा दर्जन के खिलाफ मारपीट का केस दर्ज

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। पुरानी रंजिश को लेकर हुई मारपीट की घटना में पुलिस ने आधा दर्जन लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। सेवकी का पुरवा मनीपुर मनुहार गांव की सरिता पत्नी रमेश ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि रंजिश के चलते रायबरेली जनपद के सलोन बहादुरपुर गांव निवासी मन्नू पत्नी मुकेश पुत्र कमला, इन्द्रपाल पुत्र शिवलाल, सीमा पत्नी लालचंद्र, पुष्पा पुत्री कमला व लालचंद्र ने उसके घर के समीप पहुंचे और गाली देने लगे। विरोध करने पर आरोपियों ने उसे तथा उसके परिवार के लोगों को मारापीटा और जान से मारने की धमकी दी। कोतवाल नीरज यादव का कहना है कि जांच के बाद आधा दर्जन के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है।

अधिशाषी अधिकारी को हाईकोर्ट से मिली राहत

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर पालिका के निलम्बित अधिशाषी अधिकारी राम अचल कुरील को हाईकोर्ट से राहत मिलने की खबर है। वैसे अभी हाईकोर्ट का आदेश नहीं आ पाया है, लेकिन 16 जुलाई को उच्च न्यायालय से स्टे मिलने की चर्चा अधिवक्ता के माध्यम से मिली है। आदेश आने पर नगर पालिका का कार्य सुचारु रुप से चलने लगेगा। दो सप्ताह से नगर पालिका के ईओ के न होने से पालिका के सभी वित्तीय कार्य ठप पड़े हैं। यहां तक कि नगर पालिका के कर्मचारियों को अभी तक वेतन नहीं मिल पाया है। बता दें कि उच्च न्यायालय ने 11 जुलाई को जिलाधिकारी संजीव रंजन का भी अधिवक्ता ने हवाला दिया था जो इनके कार्यों से संतुष्ट बताये गये हैं। अधिवक्ता की मानें तो इसको भी संज्ञान में लेते हुए न्यायालय ने अधिशाषी अधिकारी को राहत दी है।

पति ही निकला पत्नी का कातिल, ससुर से बात करना लगा नागवार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिले के बाघराय थाना क्षेत्र के हरिहरपुर गांव में 13 जुलाई को महिला की गला रेतकर हत्या के मामले में पुलिस ने उसका अनावरण कर दिया है। बताया जाता है कि इस सम्बन्ध में ललिता नामक महिला ससुर से बात करती थी और उन्हें खाना-पीना देती थी। इससे पति के दिमाग में शक का बीज अंकुरित हुआ और उसने ही अपनी पत्नी को मारने की योजना बनाई। पुलिस ने आज इसका खुलासा करते हुए बताया कि मृतका के पति राम कुमार पटेल ने ही अपनी पत्नी की हत्या कर दी थी। घटना के बाद एसपी द्वारा बनाई गई टीमों ने सर्विलांस के जरिये राम कुमार को पकड़ा और उससे पूछताछ की तो उसने सारी घटना कबूल कर ली। पुलिस ने घटना में प्रयुक्त हथियार व एक खून से लथपथ एक बोरी भी बरामद की है। पुलिस ने मृतका के पति को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

एसडीएम ने मेला समिति के साथ की बैठक

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। 22 जुलाई से 19 अगस्त तक चलने वाले सावन मेले की तैयारी व मंदिर पर आने वाले शिव भक्तों को कोई दिक्कत न हो इसके लिए एसडीएम ने मेला सेवा समिति के कार्यकर्ताओ के साथ बैठक की जिसमें अधिकारियों को दिशा-निर्देश दिया। इस दौरान मेला सेवा समिति के अध्यक्ष व मुख्य पुजारी सहित मंदिर के कार्यकर्ता मौजूद रहे। पौराणिक स्थल बाबा बेलखरनाथ धाम पर मंगलवार को उपजिलाधिकारी पट्टी तनवीर अहमद ने सेवा समिति के अध्यक्ष व मुख्य पुजारी के साथ ही समिति के कार्यकर्ता के साथ बैठक की। जिसमें एक माह तक चलने वाले सावन मेले की तैयारीयों का जायजा लिया तथा मेले में पानी, बिजली ,सड़क,व पुलिस व्यवस्था सहित तमाम व्यवस्थाओं को चुस्त दुरुस्त रखने के लिए अधिकारियों को दिशा निर्देश दिए। उपजिलाधिकारी ने कहा कि जलाभिषेक करने वाले शिव भक्तों व मेले में दुकानदारों को कोई असुविधा न हो इसका ध्यान रखा जाए। बैठक में खंड विकास अधिकारी बेलखरनाथ राजीव पांडे, थानाध्यक्ष दिलीपपुर विवेक कुमार मिश्रा, एडीओ पंचायत राजू भारतीय मेला सेवा समिति के अध्यक्ष मदन सिंह व मुख्य पुजारी विश्वनाथ गिरी मौजूद रहे।

डॉ0 अजीजुल सरदार ने विद्यालय में किया स्मार्ट टीवी का योगदान

स्कूल की प्रार्थना सुनकर मिलती है खुशी: डा0 अजीजुल

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मॉडल उच्च प्राथमिक विद्यालय कटरा गुलाब सिंह मान्धाता अपने उत्कृष्ट शैक्षिक गतिविधियों के लिए जाना जाता है। विद्यालय की दैनिक गतिविधियों से प्रभावित होकर डॉक्टर अजीजुल सरदार जो मूल निवासी कोलकाता के हैं।

कटरा गुलाब सिंह में विद्यालय के निकट 15 वर्षों से एक छोटा सा डेंटल क्लिनिक चलाते हैं। दिन प्रतिदिन विद्यालय की गतिविधियों को देखते रहते हैं। डॉक्टर अजीजुल को विद्यालय में प्रतिदिन होने वाले प्रार्थना सभा से बहुत प्रभावित हैं। प्रार्थना सभा में बच्चों के द्वारा दिया गया प्रस्तुतीकरण से भी बहुत प्रभावित हैं। बतौर डॉक्टर अजीजुल कहते हैं कि सुबह-सुबह विद्यालय की प्रार्थना सुनकर मुझे बहुत अच्छा लगता है साथ ही इस विद्यालय में बहुत अधिक बच्चे नामांकित हैं। बहुत दूर-दूर से बच्चे पढ़ने आते हैं और सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ रहे हैं। प्रधानाध्यापक मोहम्मद फरहीम से बहुत खुश हैं। कहते हैं कि प्रधानाध्यापक का समर्पण है जो आज यह विद्यालय दिन दूनी रात चैगुनी कर रहा है और इन्हीं सब गतिविधियों से खुश होकर मैं एक छोटा सा स्मार्ट टीवी का योगदान किया है ।जिससे ग्रामीण अंचल के नन्हे मुन्ने बच्चे शैक्षिक गतिविधियों से लाभान्वित होंगे। भूपेंद्र सिंहजिला बेसिक शिक्षा अधिकारी तथा प्रभाकर यादव खंड शिक्षा अधिकारी मांधाता ने प्रधानाध्यापक फरहीन एवं बच्चों को बधाई दी है।

उच्च प्राथमिक विद्यालय को टीवी देते डा0 अजीजुल सरदार।

बिजली की भीषण कटौती से तड़प रहे लोग

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। इन दिनों संसदीय क्षेत्र कौशाम्बी के ब्लाक कालाकांकर से जुड़े पावर हॉउस कालाकांकर मे बिजली की अधा धुंध कटौती को लेकर ग्रामवासी त्राहि त्राहि हो रहे है जिसमे बच्चे बूढ़े सभी ब्याकुल हो रहे है। पानी के न बरसने से लोग भीषण गर्मी से बेहाल हो रहे है गर्मी से राहत पाने के लिए न तो वारिश हो रही है और न ही तापमान मे कोई परिवर्तन हो रहा हैं ऐसे मे लोग पसीना पसीना हो रहे है गर्मी से राहत पाने के किये पेड़ पौधे के नीचे खड़े होकर थोड़ी बहुत राहत ले रहे है। बुधवार को 34 डिग्री तापमान होने से दोपहर को बन्द हुई बिजली शाम चार बजे आई। बिना बिजली के दोपहर मे लोग तड़पते रहे स्थानीय लोगो ने जिलाधिकारी राजीव रंजन के साथ कौशाम्बी सपा सांसद पुष्पेंद्र सरोंज का ध्यान इस ओर आकृष्ट कराते हुए कालाकांकर पावर हॉउस की बिजली कटौती को बंद कराने की मांग की है जिससे भीषण गर्मी से लोगो को राहत मिल सके।

भगवान की शरणागति ही जीवन का सर्वोत्तम उपाय: जगद्गुरु रामानुजाचार्य

रामानुज आश्रम में भक्तों ने किया स्वागत वंदन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। हरिशयनी एकादशी के पावन पर्व पर रामानुज आश्रम में रामानुज संप्रदाय विश्व की सर्वोच्च पीठ अष्ट भू वैकुंठो में एक तोताद्रिमठ नागूनेरी के पीठाधिपति परम पूज्य वैष्णव अनंत विभूषित जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्री श्री 1008 स्वामी श्री मधुरकवि वानमामलयै आए, जहां ढोल मंजीरा घंटा घड़ियाल एवं वेद मंत्रों के मध्य वैष्णव भक्तों द्वारा स्वागत बंदन किया गया।

धर्माचार्य ओमप्रकाश पांडे एवं नारायणी रामानुजदासी ने आपका पाद्य प्रछालन माल्यार्पण करते हुए आरती पूजन अर्चन किया, तत्पश्चात पादुका पूजन का कार्यक्रम वेदोक्त रीति से स्वामी जी के साथ पधारे आचार्यों ने स्वामी श्रीकांत के नेतृत्व में संपन्न कराया। स्वामी जी ने कहा कि आज हरि शयनी एकादशी है यह भगवान हरि का दिन है ।भगवान अपने वचन को निभाने के लिए आज से कार्तिक मास शुक्ल पक्ष की एकादशी तक एक स्वरूप में क्षीरसागर में तथा दूसरे स्वरूप में सुतल लोक में राजा बलि के यहां वास करते हैं। भगवान की शरणागति ही जीवन का सर्वोत्तम उपाय है। यह अवध क्षेत्र है प्रभु श्री राम की नगरी है। इस अवसर पर नारायणी रामानुज दासी विश्वम प्रकाश पांडे, इंजीनियर पूजा पांडे, डॉ अवंतिका पांडे, डॉक्टर अंकिता पांडे, देवेंद्र ओझा एडवोकेट, राजेश रामानुज दास जनकलली, रामानुजदासी संतोष भगवन, कमला श्रीवास्तव, सुभद्रा रामानुज दासी लक्ष्मी मिश्रा, अनीता पांडे, दीपक रामानुज दास, आरती तिवारी, कन्हैया सिंह, तनु सिंह, बिट्टो सिंह, ओपी यादव सहित अनेक भक्तगण उपस्थित रहे।

जगदगुरु रामानुजाचार्य मधुरकवि वानमामलयै का स्वागत करते अनुयायी

स्थापना दिवस पर पौधरोपण व साक्षरता संगोष्ठी का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के पचीसवें स्थापना दिवस पर यहां पौधरोपण तथा साक्षरता को लेकर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये गये। महासंघ की तहसील इकाई के तत्वाधान में तहसील तथा अस्पताल कैम्पस में पौधरोपित हुआ। वहीं नगर के चिल्डेट्रन पैराडाइज स्कूल में साक्षरता जागरूकता पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता तहसील इकाई अध्यक्ष विकास मिश्र व संचालन महामंत्री साकेत मिश्र ने किया। बतौर मुख्य अतिथि विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं प्रधान संघ के पूर्व महामंत्री आदर्श मिश्र ने कहा कि पत्रकारिता की स्वस्थ परम्परा में सदैव सामाजिक सरोकार को जीवन्तता मिला करती है। मुख्य वक्ता प्रदेश उपाध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने कहा कि पत्रकारिता के क्षेत्र में चुनौतियां ही उसका आदर्श मापदण्ड है। अध्यक्षीय उदबोधन में तहसील अध्यक्ष विकास मिश्र ने कहा कि लेखन व पत्रकारिता के क्षेत्र में सदैव राष्ट्रीय निर्माण को लेकर सकारात्मकता होनी चाहिए। इस मौके पर वरिष्ठ पत्रकार चंद्रशेखर तिवारी, डॉ. आशीष सिंह, सुरेन्द्र तिवारी सागर, शैलेन्द्र मिश्र, अनिल महेश, मुकेश तिवारी, लवलेश शुक्ल, मनोज सिंह, विनोद सिंह, सुशील सिंह बघेल, शत्रुघ्न पाण्डेय, आशुतोष मिश्र, राजेश पाण्डेय, आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, मनोज त्रिपाठी, अखिलेश मिश्र, जगत वर्मा, सुनील सिंह, प्रमोद सिंह बाबा, शिवकरन चतुर्वेदी, गौरीशंकर त्रिपाठी, मुकेश सिंह, सुरेश मिश्र मदन, राजेन्द्र मिश्र, जाकिर अली, संजय शुक्ल, अनूप त्रिपाठी, संजीव त्रिपाठी, सरवर आलम, उमेश तिवारी, संतोष तिवारी, राकेश त्रिपाठी, शास्त्री सौरभ, दीपेन्द्र तिवारी, सुमित त्रिपाठी, प्रेम मिश्रा, अजय यादव, शुभम श्रीवास्तव, राजकुमार मिश्र, राघवेन्द्र मिश्र रामू, जितेन्द्र तिवारी, राहुल मिश्र, प्रदीप कुमार मिश्र, राजीव तिवारी, आईपी मिश्र, अशोकधर द्विवेदी, बाबा नरेन्द्र ओझा, धर्मेन्द्र मिश्र, प्रशांत मिश्र, सूरजपाल, अरविन्द दुबे, शिवम मिश्र, अभय शुक्ला, यादवेन्द्र तिवारी, अरूण शुक्ल, मो. अमीन, सुनील वैश्य आदि रहे।

लालगंज में स्थापना दिवस पर पौधरोपण करते महासंघ के पदाधिकारी।

जमीनी विवाद में दो पक्ष में चले लाठी कुल्हाड़ी तीन लहूलुहान

लंबे समय से अधिकारियों को एप्लीकेशन देकर मामले के निस्तारण की लोग कर रहे थे मांग

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। चरवा थाना क्षेत्र के उदाथु गढ़वा गांव में बुधवार की सुबह 8:00 बजे दो पक्षों के बीच खूनी संघर्ष हो गया है इस संघर्ष में दोनों पक्ष के तीन लोग लहूलुहान हो गए हैं घायल अवस्था में तीनों को इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है घटना के बाद गांव में तनाव की स्थिति है और इस हमले के पीछे थाना पुलिस की भूमिका पर सवाल खड़े हो गए हैं लंबे समय से मामले का निस्तारण कराए जाने की एप्लीकेशन थाना पुलिस को दी जा रही थी लेकिन मामले का निस्तारण नहीं हो सका और एक पक्ष के लोग बुधवार की सुबह विवादित जमीन पर मेड बांधने पहुंच गए जिस पर दूसरे पक्ष के लोग मेड बांधने से रोकने के लिए पहुंच गए देखते देखते गाली गलौज शुरू हो गया और दोनों पक्ष से लाठी कुल्हाड़ी निकल आई और एक दूसरे पर हमला बोल दिया गया है जिससे तीन लोगों को गंभीर चोटे आई हैं सूचना पाकर मौके पर ग्रामीणों की भीड़ लग गई मामले की सूचना पुलिस को दी गई मौके पर पहुंची पुलिस ने कार्यवाही का आश्वासन देकर लोगों का आक्रोश समाप्त कराया है।

जानकारी के मुताबिक चरवा थाना क्षेत्र के उदाथु गढ़वा गांव निवासी रामबाबू वा श्याम बाबू का अपने ही गांव के भारत लाल मौर्या से जमीन का विवाद चल रहा है दोनों के बीच जमीनी विवाद को लेकर पहले भी कई बार विवाद की स्थिति बन चुकी है मामला थाना और तहसील दिवस तक पहुंचा है लेकिन पुलिस और राजस्व टीम की ढुलमुल रवैया के चलते जमीन के विवाद का निस्तारण नहीं हो सका है। विवाद का निस्तारण ना होने के बाद भी भारत लाल मौर्य के पुत्र उमेश मौर्य अपने परिवार के अन्य लोगों को लेकर विवादित जमीन में मेड बांधने बुधवार की सुबह खेत पर पहुंच गए इस बात की जानकारी दूसरे पक्ष के रामबाबू और श्यामबाबू को लग गई जिस पर रामबाबू और श्याम बाबू के छह पुत्र संदीप मनदीप आकाश विकास कुलदीप भुवनेश्वर मौके पर पहुंचकर मेड बांधने का विरोध करने लगे देखते देखते दोनों पक्ष के बीच गाली गलौज होने लगा और दोनों पक्षों की ओर से लाठी कुल्हाड़ी चलने लगी इस हमले में आशीष पुत्र श्याम बाबू और दूसरे पक्ष के मनराखन व अश्विनी के सिर में गंभीर चोटे आई हैं घटना स्थल पर खून खराबा देखकर हड़कंप मच गया मामले की सूचना ग्रामीणों को लगी तो मौके पर लोगों की भीड़ लग गई।

मामले की सूचना पुलिस को दी गई मौके पर पहुंची पुलिस ने दोनों पक्षों को कार्यवाही का आश्वासन देकर मामले को शांत कराया है लेकिन हमले के बाद दोनों परिवार के बीच तनाव की स्थिति बनी हुई है इस मामले में थाना पुलिस ने पहले ही विवाद का निस्तारण कर दिया होता तो बुधवार को गांव में खून खराबा ना होता।

बाहरी लोगों का अड्डा बना पीडब्ल्यूडी कॉलोनी

कौशांबी। लोक निर्माण विभाग द्वारा जनपद मुख्यालय मंझनपुर के सिराथू रोड में कर्मचारियों के रहने के लिए करोड़ों रुपए खर्च कर सरकारी आवास का निर्माण कराया गया लेकिन लोक निर्माण विभाग के इस कॉलोनी में विभाग के अधिकतर कर्मचारी नहीं रहते हैं विभागीय कर्मचारी भी प्रयागराज में रहना चाहते हैं अधिकतर कर्मचारियो ने प्रयागराज में निवास बनाया हैं कर्मचारियों के जनपद मुख्यालय तैनाती स्थल में ना रहने से विभागीय व्यवस्था भी चौपट है लोक निर्माण विभाग की इस कालोनी को बाहरी लोगों को किराए पर उठा दिया गया है यहां तक कि लोक निर्माण विभाग की इस कालोनी में चोर उचक्के जुआरी शराबियों का भी अड्डा बन गया है। प्रेम मोहब्बत के बहाने लोक निर्माण विभाग की इस कॉलोनी में मनचलो का जमावड़ा लगता है और तमाम सरकारी कार्यालय में ड्यूटी देने वाले लोगों ने इस कालोनी को अपना अड्डा बना लिया और ड्यूटी छोड़कर के दिन दुपहरी यहां पर अपने प्रेमी के साथ बन्द कमरे में कई कार्यालय के लोग मौजूद मिलते हैं। यहां से संगठित अपराध की घटनाओं को भी अंजाम दिया जाता है पुलिस से लेकर विभागीय लोगों की इस कॉलोनी में रहने वाले लोगों की गतिविधियों पर नजर नहीं है।

मंझनपुर मुख्यालय सहित पूरे जिले में मनाया गया मोहर्रम का त्यौहार

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। जनपद मुख्यालय मंझनपुर सहित ग्रामीण नगर क्षेत्रों में मोहर्रम के त्योहार पर ताजिया दारो ने जुलूस निकाला और मातम मनाया एक मोहर्रम से लेकर दस मोहर्रम तक हर रोज किसी न किसी के घरों से अलम, ताबूत, जुलजनाह इमाम हुसैन और उनके 71 साथियों की याद में निकाले जाते रहे। दस मोहर्रम को ताजिया को ले जाया गया और दफ्न किया गया। दस मोहर्रम को इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की याद में अलग अलग इमाम बारगाह में मसायब बयान किए गए सभी जूलूस कर्बला में एकत्रित हुए जहा अलविदाई नौहा पे जवान बूढ़े बच्चों ने सीना जनी व जंजीर जनी की और उनके एकत्तत साथियों की याद में ताजिया को दफन किया गया।

जनहित समिति संगठन की मासिक बैठक सम्पन्न

नेवादा कौशाम्बी। जनहित कारिणी समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेश केशरवानी के आदेशानुसार प्रदेश अध्यक्ष सुशील जैन (एडवोकेट) ने अपने प्रयागराज समिति के पदाधिकारियों के साथ जिला कौशाम्बी मे जिला अध्यक्ष रामबाबू केशरवानी की अध्यक्षता मे बुधवार को तिल्हापुर मोड़ स्थित कार्यालय पर मासिक बैठक कर जनहित के विषय मे दिशा निर्देश दिया उन्होने बताया कि समिति मे रिक्त स्थानों पर पदाधिकारियों को समय से सुनिश्चित किया जाय व बहुत सारी जानकारियां दी इस मौके पर प्रयागराज टीम से प्रतापगढ़ जिला अध्यक्ष अमरनाथ वर्मा, गुड्डू सिंह, दीपक सिंह, प्रदीप सिंह, तथा कौशाम्बी के कार्यकर्ता महामंत्री मदन केशरवानी, संगठन मंत्री डा.गनेश प्रसाद, कोषाध्यक्ष सुनील केशरवानी, नगर अध्यक्ष बृजेन्द्र केशरवानी, बीरेन्द्र शर्मा व आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

उठती है आज मय्यते सुलताने कर्बला होता है दफ्न शाहे शहीदाने कर्बला

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। करारी कस्बा सहित ग्रामीण क्षेत्रों में एक मोहर्रम से लेकर दस मोहर्रम तक हर रोज किसी न किसी के घरों से अलम, ताबूत, जुलजनाह इमाम हुसैन और उनके 71 साथियों की याद में निकाले जाते रहे। दस मोहर्रम बुधवार को इमाम बारगाह से कर्बला गंजे शहीदा ताजिया को ले जाया गया और लविदाई नौहों के साथ दफ्न किया गया। करारी कस्बा के हजरत गंज, अंसार गंज, नया गंज, चमन गंज,में दस मोहर्रम को इमाम हुसैन अलै हिस्सलाम की याद में अलग अलग इमाम बारगाह में मसायब बयान किए गए। और कदीमी नोहा बयान करते हुए अलग अलग वार्ड के सभी जूलूस कर्बला में एकत्रित हुए जहा अलविदाई नौहा पे जवान बूढ़े बच्चों ने सीना जनी व जंजीर जनी की और गंजे शहीदा में ईमाम हुसैन अलैहिस्सलाम और उनके एकत्तत साथियों की याद में ताजिया को दफन किया गया।

मांझियांवा गांव में बड़ी अकीदत से दस मोहर्रम का जुलूस निकाला गया

कौशाम्बी। जुलूस निकालने से पहले दिलदार हुसैन के इमाम बारगाह में इमाम हुसैन अ. के मसायब बयान किया गया। कौसर हुसैन उर्फ गरीब आलम ने हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी इमामबारगाह में इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के एकत्तर की शहादत को पेश किया, शहादत बयां होते ही आजादारों की आंखों से आंसू जारी हो गए मजलिस के फौरन बाद ताजिया अलम, जुलजनाह, बरामद हुए मातम करते हुए धीरे-धीरे जूलूस कर्बला पहुंचा। नौहा बयान करते हुए सोनू, गरीब आलम ,शीमू ,राजू ने पढ़ा उठती है आज मय्यते सुलताने कर्बला होता है दफ्न शाहे शहीदाने कर्बला। गंजे शहीदा में ताजिया को अलविदाई नौहां पढ़ते हुए दफ्न कर दिया गया। इसी तरह लहना, रसूलपुर सोनी ,अंडाहरा, अमुरा सराय सय्यद अली,अगियौना ,मोलानी आदि गांव में इमाम हुसैन की याद में ताजिया उठा कर गंजे शहीदा में दफ्न किया गया।

क्यों मानते है दस मोहर्रम :1400 साल पहले मुहर्रम के महीने की 10 तारीख को ही पैगम्बर मोहम्मद के नाती इमाम हुसैन अपने एकत्तर साथियों के साथ शहीद हुए थे.उसी गम में मुहर्रम की 10 तारीख को ताजिए निकाले जाते हैं. इस दिन शिया समुदाय के लोग मातम करते हैं. मजलिस पढ़ते हैं, काले रंग के कपड़े पहनकर शोक मनाते हैं। यजीद नाम का शक हर उस बुरे कामों को करता था जो न इस्लाम इजाजत देता है और न ही किसी धर्म में किसी पर जुल्म करने की इजाजत है लेकिन यजीद के हर बुरे कामों पर एतराज कर लोगों को सही रास्ता दिखाने वाले इमाम हुसैन आज भी मर कर ज़िंदा है और यजीद का कोई नाम लेने वाला बाकी न रहा।

जमीन बेचकर ले ली रकम कब्जा करने पर कर रहे विरोध

कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के शाहजादपुर गांव में श्वेता देवी पत्नी नवल कुमार वा ममता देवी पत्नी सुनील कुमार ने अपने रिश्तेदार ओमप्रकाश पुत्र छेदुवा उर्फ छेद्दु निवासी तलैयापुर मजरा शहजादपुर तहसील सिराथू थाना कोखराज से आराजी संख्या गाटा 439 से 230 वर्ग मीटर जमीन पंजीकृत रजिस्ट्री 2 लाख 50 हजार रुपए देकर के 8 दिसंबर 2023 को पंजीकृत बैनामा लिया था खरीदी गई जमीन का तहसील से दाखिल खारिज भी हो चुका है उक्त जमीन महिलाओं के नाम अभिलेखों में दर्ज है लेकिन खरीदी गई जमीन पर जमीन विक्रेता ओमप्रकाश और उनके भाई उमेश कुमार वा महेश कुमार जमीन पर खरीददार महिलाओं को कब्जा नहीं करने दे रहे निर्माण नहीं करने दे रहे इससे अधिक इनकी क्या गुंडई होगी कि जमीन बेचकर पैसा लेने के बाद कब्जा नहीं करने दे रहे हैं महिलाओं और उनके परिवार के साथ साथ गाली गलौज मारपीट कर रहे हैं खरीदी गई जमीन कब्जा करने पहुँचे महिला के पति नवल के ऊपर प्राण घातक हमला कर दिया मारपीट से नवल को गंभीर चोट लग गयी जमीन बेचने वाले ओमप्रकाश और उनके भाई खुलेआम गुंडई पर उतारू हैं लेकिन पुलिस मामले में तमाशा देख रही है जिससे कभी भी बड़ी वारदात हो सकती है धोखाधड़ी फ्रॉड करके ढाई लाख रुपया लेने वाले ओमप्रकाश और उनके भाइयों पर मुकदमा दर्ज कराए जाने की मांग को लेकर पीड़ित परिवार के लोग जिला अधिकारी और पुलिस अधीक्षक से मिले हैं और उन्हें संपूर्ण प्रकरण बताते हुए फ्रॉड करने वाले ओम प्रकाश और उसके भाइयों पर मुकदमा दर्ज करा कर गिरफ्तारी किए जाने की मांग की गई है।

समय से ड्यूटी की पाबंद नहीं हैं आयुर्वेदिक अस्पताल की महिला चिकित्सक

जिला अस्पताल के डॉक्टर से मुलाकात में मशगूल चिकित्सक से मरीजों को नहीं मिलता इलाज

आयुर्वेदिक अस्पताल में गंदगी का साम्राज्य

कौशांबी। आयुर्वेदिक अस्पताल तिल्हापुर गांव में चारों ओर गंदगी का साम्राज्य है बैक्टीरिया कीटाणुओं से अस्पताल भरा है यहां पहुंचे लोग बीमारियों का शिकार हो रहे हैं साफ सफाई का यहां अभाव है लेकिन उसके बाद भी आयुर्वेदिक अस्पताल में फैली गंदगी की साफ सफाई की व्यवस्था अस्पताल की चिकित्सक नहीं कर रही है जिससे उनकी लापरवाही का अंदाजा लगाया जा सकता है बताया जाता है कि यह चिकित्सक कभी-कभी अस्पताल पहुंचती है प्रतिदिन उपस्थिति नहीं होती है जिससे अस्पताल की व्यवस्था चौपट हो चुकी है मामला बेहद गंभीर है और जिला अधिकारी को मामले को गंभीरता से लेकर लापरवाही करने वाली चिकित्सक पर कठोर कार्रवाई किए जाने की जरूरत है।

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। आयुर्वेदिक अस्पताल तिल्हापुर गांव में चिकित्सक फार्मासिस्ट वार्ड ब्वय की तैनाती होने के बाद भी यह अस्पताल पूरी तरह से बकवास साबित हो रहा है इस अस्पताल में मरीजों को इलाज नहीं मिल रहा है अस्पताल के डॉक्टर ड्यूटी के समय अस्पताल में मौजूद नहीं मिलती हैं उन्होंने इस अस्पताल को घर बना लिया है जब मर्जी हुई अस्पताल पहुंच गई और जब मर्जी हुई अस्पताल से वापस लौट गई अस्पताल आने-जाने का उनका कोई समय निर्धारित नहीं है इतना ही नहीं अस्पताल पहुंचने के वक्त उनके साथ दूसरे लोगों का जमावड़ा लगा रहता है अस्पताल पहुंचने के बाद भी आयुर्वेदिक अस्पताल की डॉक्टर मरीज को इलाज में समय नहीं दे पाती है बल्कि साथ में मौजूद दूसरे डॉक्टर से वातालाप में समय व्यतीत करती हैं अस्पताल की चौपड़ व्यवस्था के चलते इस अस्पताल में अब मरीजों की संख्या भी दिनों दिन कम होती जा रही है मरीजों का आयुर्वेद अस्पताल में विश्वास कमजोर हो रहा है जिसका लाभ चिकित्सक और फार्मासिस्ट उठाते हैं मरीजों को मिलने वाली आयुर्वेदिक दवाइयां को वह घर उठा ले जाते हैं और वहां उस दवाइयां के बिक्री कर धन वसूली करते हैं अस्पताल में फर्जी आंकड़ा दर्ज कर मरीज को दबाए वितरण दिखाई जा रही है यदि अस्पताल के रजिस्टर में दर्ज मरीजों के आंकड़े की उच्च स्तरीय जांच कराई गई तो चिकित्सक और फार्मासिस्ट के कारनामे का खुलासा होना तय है बीते दिनों आयुर्वेद के जिला कार्यालय से चित्रकांडी वटी दवाई भेजी गई इस दवाई का वितरण नहीं हुआ अस्पताल से दवा गायब हो गई है बताया जाता है कि फार्मासिस्ट और चिकित्सक के घर दवाइयां पहुंच गई है मरीजों की शिकायत के बाद मंगलवार को जब अस्पताल की हकीकत जानने के लिए मौके पर पहुंच कर देखा गया की 11:00 के बाद महिला अस्पताल की डॉक्टर अनीता सिंह जिला अस्पताल के डिप्टी सीएमओ की कार में अस्पताल पहुंची है और अस्पताल पहुंचकर दोनों डॉक्टर के कमरे में बैठकर वातालाप में मशगूल रहे अस्पताल में कुछ मरीज दवाई लेने के लिए पहुंचे थे लेकिन उन्हें दवाइयां नहीं दी गई है यह कहकर मरीजों को वापस कर दिया गया कि अस्पताल में दवाई नहीं है जब मरीज ने चिकित्सक से बात करने का प्रयास किया तो चिकित्सक के पास समय नही था जिला अस्पताल के डिप्टी सीएमओ से वातालाप में मशगूल रही और उनकी वातालाप में मरीजों ने खलल डाल दिया जिससे आयुर्वेदिक अस्पताल की महिला चिकित्सक अनीता सिंह का पारा गर्म हो गया अनुशासन हीन चिकित्सक मरीजों का इलाज करने की बजाए उन पर भड़क गई और उनसे कहने लगी कि अस्पताल में बिना उनके आदेश के कैसे प्रवेश कर लिया है चिकित्सक का यह कारनामा स्वास्थ्य नियमावली के विपरीत है आखिर सरकार ने मरीजों के इलाज के लिए चिकित्सक की तैनाती की है लेकिन चिकित्सक मरीजों का इलाज करने के बजाय अस्पताल परिसर में जिला अस्पताल इमरजेंसी वार्ड के चिकित्सकों से वातालाप कर रही हैं दूर दराज के अस्पताल में जिला अस्पताल के चिकित्सकों के पहुंचने के पीछे क्या मंशा है दोनों डॉक्टरों के द्वारा एक साथ अस्पताल में मौजूद होने के पीछे कारण क्या है यह बड़ी जांच का विषय है जिला अस्पताल छोड़कर के डॉक्टर तिल्हापुर गांव 50 किलोमीटर दूर पहुंच रहे हैं यह बड़ी जांच का विषय है इस संबंध में आयुर्वेदिक चिकित्सालय के जिला प्रभारी से वार्ता की गई है उन्होंने कहा कि यदि अस्पताल में चिकित्सक समय से नहीं पहुंचते हैं तो यह गंभीर विषय है और इस पर कठोर कार्रवाई की जाएगी इस संबंध में जिला अस्पताल के मुख्य चिकित्सा अधीक्षक से भी वार्ता कर उन्हें इमरजेंसी के डॉक्टर डिप्टी सीएम ओ के कारनामे की जानकारी दी गई है।

मुहर्रम के जुलूस में हजरत इमाम हुसैन की सदाओं से गूंज उठा क्षेत्र

अखंड भारत संदेश

कोखराज कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के मलाक भायल सहित बिभिन्न गाँव मे बुधवार को मोहर्रम का जुलूस निकाला गया मुहर्रम जुलूस के मौके पर पुलिस प्रशासन द्वारा कडे सुरक्षा के इंतजाम किए गए थे पुलिस की ब्यवस्था के बीच मोहर्रम मनाया गया।मोहम्मद साहब के नवासे (नाती)(हजरत इमाम हुसैन)व उनके 72 साथियों की शहादत को याद करते हुए 10 दिन तक मजलिसो का प्रोग्राम किया गया ताजिया दारों ने हजरत इमाम हुसैन की याद में मजलिस मनाई जिसमें उनकी जीवनी पर वर्णन किया गया। और उनके मार्ग दर्शन पर चलने की बात की गई। मोहर्रम के पर्व पर जगह-जगह पर ताजिया जुलूस की सुरुवात किया गया मुहर्रम गम और दुख का महीना माना जाता है सभी ने देश प्रदेश में अमन चैन के लिए दुआ की ।दुआ के बाद सलाते-सलाम पढा गया और लोगों में लगर वितरण किया गया शांतिपूर्ण तरीके से मोहर्रम का जुलूस संपन्न हुआ कोखराज क्षेत्र के मलाक भायल से तजियादारो ने या हुसैन या मोहम्मद की याद में नोहा पढ़ कर जुलूस निकाला जुलूस राला कर्बला में और रास्ते में जगह जगह शरबत भी बट रहा था जुलूस में ताजियादार एहसान अली, इस्लाम उल्ला, मोहम्मद शहबान, सुल्तान, सेबू, गुड्डू, राशिद, मुमताज, इत्मीनान, अकरम आदि सैकड़ों लोगों ने ताजियादारी में हिस्सा लिया मौके पर पुलिस प्रशासन भी जिम्मेदारी के साथ मोहर्रम के जुलूस में तत्पर रहा।

भरवारी मोहर्रम जुलूस में हजारों लोग हुए शामिल

भरवारी कौशाम्बी। मोहर्रम के पर्व पर ताजिया दरों ने मातम मनाया और ताजिया का जुलूस निकालकर देर शाम कर्बला में दफन किया है रोही दर्वेशपुर मुरादपुर खल्लाबाद भरवारी सभी जगह की ताजिया नगर पालिका परिषद भरवारी कस्बा के ईद गाह से उठकर पुरानी बाजार होकर गौरा रोड़ में अनिल केसरवानी के यहां पर ताजिया दारो को जलपान कराने के बाद वापस करबला मे जाकर दफन किया गया हैं वही प्रशासन की तरफ से चौकी इंचार्ज भरवारी प्रभारी निरीक्षक कोखराज क्षेत्राधिकारी सिराथू भारी पुलिस फोर्स के साथ मोहर्रम की व्यवस्था में लगे रहे चप्पे चप्पे पर पुलिस के जवान मुस्तैद रहे मोहर्रम जुलूस में मुसलमानों के साथ-साथ हिंदू समाज के लोग भी शामिल हुए पूर्व चेयरमैन कैलाश केसरवानी एवम प्रदेश सचिव सपा के पूर्व चेयरमैन गंगा प्रसाद केसरवानी संतोष केसरवानी गुलाम हुसैन जिला महासचिव सपा प्रेम नारायण केसरवानी कृष्ण कुमार केसरवानी तमजीद अहमद कांग्रेस पार्टी मेहबूब आलम उर्फ सज्जू मुस्ताक अहमद अनीश चच्चा मुन्नान हुसैन पार्षद मोइन अहमद रसीद अहमद दिलीप कुमार आदि लोग रहे।

18 जुलाई को होगा प्रयोगशाला प्राविधिज्ञ संघ का द्विवार्षिक चुनाव

कौशांबी। स्वास्थ्य विभाग में प्रयोगशाला प्राविधिज्ञ संगठन के सदस्यों द्वारा दिनांक 18 जुलाई दिन गुरुवार को अपराहन दो बजे संयुक्त जिला चिकित्सालय / स्वशाषी राज्य चिकित्सा महा विद्यालय कौशाम्बी परिसर में संगठन का चुनाव कराने का निर्णय लिया गया है। निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण चुनाव कराने के लिए मुख्य चिकित्सा अधिकारी कौशांबी को प्रार्थना पत्र देकर सदस्यों को चुनाव मे प्रतिभाग करने के लिए उक्त दिनांक को अपराह्न 01 बजे चिकित्सालयों से कार्यमुक्त करने के साथ ही उपरोक्त अंकित दिनांक, समम, स्थान पर पर्यवेक्षक एवं नामित अधिकारी को उपस्थित रहने के लिए निर्देशित किए जाने की मांग की गई है।

हजरत इमाम हुसैन की सदाओं से गूंज उठा गाँव

टेढ़ीमोड़ कौशाम्बी। सिराथू क्षेत्र के झंडापुर शहजादपुर ननमई गाँव मे बुधवार को मोहर्रम के मौके पर पुलिस प्रशासन द्वारा कडे सुरक्षा के इंतजाम के बीच मोहर्रम मनाया गया।मोहम्मद साहब के नवासे (नाती)(हजरत इमाम हुसैन)व उनके 72 साथियों की शहादत को याद करते हुए 10 दिन तक मजलिसो का प्रोग्राम जारी रहा।ताजिया दारों ने हजरत इमाम हुसैन की याद में मजलिस मनाई जिसमें उनकी जीवनी पर वर्णन किया गया। और उनके मार्ग दर्शन पर चलने की बात की गई। और सरकार की गाइडलाइन को ध्यान में रखते हुए ताजिया दारों ने तिरंगा झंडा लगा कर ताजिया जुलूस की सुरुवात किया। मुहर्रम महीने के 10 वें दिन को आशुरा कहा जाता है जो कि गम और दुख का महीना माना जाता है सभी ने देश प्रदेश में अमन चैन के लिए दुआ की ।दुआ के बाद सलाते-सलाम पढा गया।और लोगों में लगर वितरण किया गया शांतिपूर्ण तरीके से मोहर्रम संपन्न हुआ है।

शांति और सौहार्द के बीच मना त्याग व बलिदान का पर्व मुहर्रम

अझुवा कौशांबी। हजरत इमाम हुसैन की शहादत की याद में मुस्लिम समुदाय द्वारा मनाया जाने वाला मोहर्रम शांति सौहार्द ,भाईचारा के बीच मनाया गया। आदर्श नगर पंचायत अझुवा वार्ड नंबर 6 कृष्ण नगर ,वार्ड नंबर 7 मौलाना आजाद नगर,ग्राम सभा नांदेमई में बुधवार मोहर्रम के अवसर पर हजरत इमाम हुसैन की शहादत की याद में ताजिया व आलम निकल गया शांति व्यवस्था बनाए रखने हेतु जगह-जगह सैनी कोतवाली पुलिस तैनात रही है मुस्लिम समुदायों द्वारा ताजिया निकाल कर विभिन्न कौशल एवम करतब का प्रदर्शन किया गया।

संपादक की कलम से

हिंसा पर राजनीति खतरनाक है

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जुमले आपदा में अवसर को पूरी गंभीरता के साथ भाजपा नेताओं ने चरितार्थ करना शुरू कर दिया है। अमेरिका में चुनाव प्रचार कर रहे पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पर हुए हमले को भाजपा ने अपनी विचारधारा को बढ़ाने के अवसर के तौर पर देखा और राहुल गांधी पर नए सिरे से हमला बोलने की शुरूआत कर दी। न्यूज चैनलों की दुनिया में सबसे तेज होने का दावा करने वाले चैनल पर भाजपा आईटी सेल के प्रमुख अमित मालवीय ने अमेरिका में डेमोक्रेट्स नेताओं की ओर से डोनाल्ड ट्रंप के खिलाफ इस्तेमाल की गई भाषा और भारत में कांग्रेस नेताओं की ओर से प्रधानमंत्री मोदी के लिए इस्तेमाल की गई भाषा के बीच समानताएं बताईं और एक गंभीर आरोप लगाया कि कांग्रेस के नेता और खासकर नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ हिंसा को बढ़ावा दे रहे हैं। अमित मालवीय ने ऑन एयर यह भी कहा कि 'इससे पहले कि कांग्रेस यह दावा करे कि उनके नेताओं की हत्या हुई, मैं उन्हें याद दिलाना चाहता हूं कि उनकी हत्या उनके राजनीतिक फैसलों के कारण हुई।' हैरानी की बात यह है कि यह बात केवल उस कार्यक्रम तक सीमित नहीं रही, बल्कि जो एंकर इस कार्यक्रम को संचालित कर रहा था, उसने अपने सोशल मीडिया एकाउंट पर इस बयान को जस का तस पोस्ट करके बताया कि अमित मालवीय ने ऐसा कहा है। इस बात के दो ही अर्थ हो सकते हैं, पहला तो यह कि हाथी की खिचड़ी खाकर मगन होने वाले इस तथाकथित एंकर-पत्रकार को भारत की लोकतांत्रिक विरासत और शहादत की शून्य समझ है, तभी उसने भाजपा नेता के बयान को कार्यक्रम के बाद सोशल मीडिया के जरिए प्रचारित किया। दूसरा अर्थ यह है कि एंकर समेत पूरा चैनल भाजपा के कांग्रेस विरोधी एजेंडे को बढ़ावा देने के लिए औजार की तरह इस्तेमाल हो रहा है। अब यह कांग्रेस के सोचने का विषय है कि वह अपने प्रवक्ताओं को इस चैनल पर बैठने की अनुमित दे या न दे, क्योंकि चैनल ने तो अपना पक्ष जाहिर कर ही दिया है। वैसे इस चैनल पर चुनाव के वक्त प्रियंका गांधी का साक्षात्कार भी प्रसारित हुआ था और इसकी मालिक के साथ उनकी तस्वीरें भी सामने आईं। प्रियंका गांधी के साक्षात्कार से चैनल को टीआरपी मिली होगी, लेकिन कांग्रेस को आखिर में क्या मिल रहा है, इस पर आत्ममंथन अगर कांग्रेस करे और यह समझे कि सियासी मकड़जाल में फंस चुके मीडिया में अपना बचाव वह किस तरह करे, तो शायद फिर भाजपा के एजेंडे का जवाब दिया जा सकता है। बहरहाल, कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने अमित मालवीय की बर्खास्तगी की मांग प्रधानमंत्री से की है, वहीं कांग्रेस के मीडिया प्रभारी पवन खेड़ा ने प्रधानमंत्री मोदी से पूछा है कि क्या वह उनके विचार का समर्थन करते हैं। उन्होंने एक्स पर पोस्ट कर कहा, बीजेपी के इस बड़बोले नेता के अनुसार महात्मा गांधी, इंदिरा गांधी, सरदार बेअंत सिंह और छत्तीसगढ़ का पूरा कांग्रेस नेतृत्व राजनीतिक फैसलों के कारण हत्या के लायक था।' पवन खेड़ा ने भाजपा की मानसिकता पर भी सवाल उठाए। कांग्रेस की इस निंदा पर भाजपा या प्रधानमंत्री मोदी कोई जवाब देते हैं या नहीं, यह पता चल ही जाएगा। लेकिन दस सालों में बन चुके नए भारत के इस सच को देखकर भविष्य के भारत की तस्वीर का अनुमान लगाना कठिन नहीं है। राहुल गांधी ने भारत के ऐसे भविष्य की ओर ही आगाह करते हुए दो साल पहले केंब्रिज विवि में कहा था कि -पूरे देश में केरोसिन छिड़क दी गई है, केवल चिंगारी लगाने की देर है। उन्होंने भारत जोड़ो यात्रा में नफरत के बाजार में मोहब्बत की दुकान का जो नारा दिया था, उसके मायने कितने गहरे थे, ये बात आज और खुलासे के साथ समझी जा सकती है। राहुल गांधी की बात पर भाजपा नेताओं को तब भी आपत्ति थी और वे उन पर देशविरोधी बात कहने का आरोप लगाते थे। भाजपा नेता आज भी राहुल गांधी को ही कटघरे में खड़ा कर रहे हैं। जबकि राहुल गांधी बार-बार हर तरह की हिंसा के खिलाफ ही बात करते आए हैं। अभी कुछ वक्त पहले राहुल गांधी तीसरी बार मणिपुर गए थे और उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी से फिर से अपील की थी कि वे इस राज्य में शांति बहाली के लिए खुद आएं और हालात को समझें। राहुल गांधी की यही राजनीति और देश के मौजूदा हालात पर उनका सटीक विश्लेषण भाजपा को शायद चुभता है, इसलिए उनके विरोध के लिए बार-बार मौके तलाशे जाते हैं। डोनाल्ड ट्रंप पर हमला ऐसा ही एक मौका था। लेकिन राहुल गांधी पर ऊंगली उठाकर हालात सुधारे नहीं जा सकते। इसका बड़ा उदाहरण बिहार है, जहां विकासशील इंसान पार्टी के मुखिया और इंडिया गठबंधन के नेता मुकेश सहनी के पिता की बेरहमी से हत्या कर दी गई। इस घटना के बाद नीतीश कुमार के राज में कानून व्यवस्था पर सवाल उठने लगे हैं, लेकिन भाजपा नेता अजय आलोक ने कहा कि सभ्य समाज में ऐसी घटनाएं हो जाती हैं। भाजपा नेता अपराधी को पकड़ लेने का दावा कर रहे हैं, पर सवाल यही है कि आखिर हिंसा के लिए समाज में जगह बनाने का काम क्यों हो रहा है और इसे सामान्य क्यों लिया जा रहा है।

फिर आतंकी हमलें, सैनिकों का बलिदान व्यर्थ न जाये

-: ललित गर्ग:-

लगातार जम्मू-कश्मीर में बढ़ रही आतंकी घटनाएं चिन्ता का कारण बन रही है। डोडा जिले में एक आतंकी हमले में कैप्टन समेत सेना के चार जवानों और जम्मू कश्मीर के एक पुलिसकर्मी का बलिदान अब यही दर्शा रहा है कि शांति एवं अमन की ओर लौटा जम्मू-कश्मीर एक बार फिर आतंकवादी आघातकारी घटनाओं की भेंट चढ़ रहा है, इन घटनाओं का माकुल जबाव नहीं दिया गया तो यह घाटी एक बार फिर खूनी घाटी बन जायेगी। क्योंकि कुछ ही दिनों पहले कठुआ में एक सैन्य अफसर सहित पांच जवान आतंकियों का निशाना बन गए थे। इसके पहले भी जम्मू संभाग में ही सेना के कई जवान आतंकियों से लोहा लेते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान दे चुके हैं। ये बहुत चिंतित करने वाले त्रासद एवं घिनौने घटनाक्रम हैं कि पिछले कुछ समय से कश्मीर घाटी के साथ-साथ जम्मू संभाग में भी आतंकियों की गतिविधियां बढ़ती जा रही हैं। हाल की कुछ घटनाओं से तो यह भी लगता है कि आतंकियों ने जम्मू संभाग को अपनी गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बना लिया है। एक ऐसे समय जब जम्मू कश्मीर में विधानसभा चुनाव कराने की तैयारी हो रही है, तब आतंकियों का सक्रिय होना और सफलतापूर्वक अपने मनसूबों को कामयाब करना गंभीर चिंता का विषय है।

ज्यादा चिन्ताजनक यह है कि पाकिस्तान प्रशिक्षित आतंकी न केवल घुसपैठ कर रहे हैं, बल्कि अपनी गतिविधियों को अंजाम देने और इस क्रम में सेना को निशाना बनाने में भी सफल हो रहे हैं। सरकार को उन खूनी हाथों को खोजना होगा अन्यथा खूनी हाथों में फिर खुजली आने लगेगी। हमें इस काम में पूरी शक्ति और कौशल लगाना होगा। आदमखोरों की मांद तक जाना होगा। अन्यथा हमारी खोजी एजेंसियों एवं सेना की काबिलीयत पर प्रश्नचिन्ह लग जाएगा कि कोई दो-चार व्यक्ति कभी भी पूरे प्रांत की शांति और जन-जीवन को अस्त-व्यस्त कर सकते हैं, हमारी संवेदनाओं को झकझोर सकते हैं। संवेदनाओं एवं भावनाओं को झकझोर भी रहे हैं, जब आतंकवादी हमलों में शहीद जवानों के पार्थिव शरीर तिरंगे में लिपटे घर की ड्योढ़ी पर आते हैं तब कारुणिक माहौल को देखकर दिल दहल उठता है क्योंकि देश के लिए अपना सर्वोच्च लुटा देने वाला जवान किसी का बेटा, किसी का पति और किसी का पिता होता है। हर आंख में आंसू होते हैं। किसी की गोद, किसी की मांग सूनी हो जाती है। देशवासी सोचने को विवश हैं कि वे शोक संत्पत परिवार के साथ करुणा और पीड़ा को कैसे बांटें।

डोडा वारदात की जिम्मेदारी लेने वाले ह्यकश्मीर टाइगर्सह्न जैसे आतंकी संगठनों की ताजा बौखलाहट की एक बड़ी वजह जम्मू-कश्मीर में राजनीतिक प्रक्रिया की बहाली को लेकर बढ़ी सरगर्मी है। राज्य में लोकप्रिय सरकार के गठन के लिए अगले चंद महीनों में ही विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। ऐसे में, आतंकियों की बेचैनी समझी जा सकती है कि जिस तरह लोकसभा चुनाव में घाटी में लोग मतदान केंद्रों पर उमड़ पड़े और दशकों पुराना रिकॉर्ड टूटा, अगर विधानसभा चुनाव में लोगों का उत्साह और बढ़ा, तो जिन ह्यस्लीपर सेल्सह्न की बदौलत वे दहशत का अपना पूरा कारोबार चलाते हैं, वे भी मुख्यधारा के प्रति आकर्षित होकर, उनके खिलाफ हो सकते हैं। इसलिए उन्होंने घाटी के बजाय जम्मू संभाग में अपनी सक्रियता बढ़ाई है, ताकि लोकतांत्रिक प्रक्रिया को बाधित किया जा सके और सीमा पार के आकाओं से मदद हासिल करने का सिलसिला जारी रहे।

जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 की समाप्ति के बाद हुए पहले लोकसभा चुनाव में रिकॉर्ड मतदान से पाकिस्तान बौखलाया है। इसी का परिणाम है लगातार हो रहे आतंकी हमलें। इन हमलों ने आंतरिक सुरक्षा के लिये नये सिरे से चुनौती पैदा की है। जम्मू में रियासी, कठुआ और डोडा के आतंकी हमले चिन्ता का बड़ा कारण बने है। जम्मू-कश्मीर का माहौल सुधरने के बाद वहां के बाजार, पर्यटक स्थल गुलजार हुए हैं और राज्य की अर्थव्यवस्था सुधर रही है। इसलिए देशद्रोही नहीं चाहते कि कश्मीर में शांति आए और वहां पर निर्वाचित सरकार काम करे। केन्द्र में गठबंधन वाली मोदी सरकार के सामने यह एक बड़ी चुनौती है। क्या इन आतंकी घटनाओं को केन्द्र सरकार ने गंभीरता से नहीं लिया है जो सरकार पाकिस्तान में घूस कर बदला ले सकती है, वह सरकार अब तक शांत क्यों है ऐसा क्यों हो रहा है, इसकी तह तक जाने की जरूरत है। आतंकी जिस तरह अपनी रणनीति बदलकर सुरक्षा बलों को कहीं अधिक क्षति पहुंचाने में समर्थ दिखने लगे हैं, वह किसी बड़ी साजिश का संकेत है। एक ओर सीमा पार से होने वाली आतंकियों की घुसपैठ पर प्रभावी नियंत्रण करना होगा, वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान को नए सिरे से सबक भी सिखाना होगा। यह इसलिए अनिवार्य हो गया है, क्योंकि पिछले कुछ समय में आतंकी हमलों में बलिदान होने वाले सैनिकों की संख्या कहीं अधिक बढ़ी है।

पाकिस्तान सत्ता प्रतिष्ठानों की मदद से यह आतंक का खेल फिर शुरू कर रहा है। कहीं न कहीं दिल्ली में बनी गठबंधन सरकार को यह संदेश देने की कोशिश की जा रही है कि पाक पोषित आतंकवादी जम्मू-कश्मीर में शांति एवं अमन को कायम नहीं रहने देंगे। एक आंकड़े के अनुसार पिछले तीन वर्ष में करीब 50 जवानों को अपना बलिदान देना पड़ा है। यह बिल्कुल भी स्वीकार्य नहीं। आतंक को करारा जवाब केवल तभी नहीं दिया जाना चाहिए, जब एक साथ बड़ी संख्या में सुरक्षा बलों के जवानों को बलिदान देना पड़े। वास्तव में हमारे एक भी सैनिक का बलिदान व्यर्थ नहीं जाना चाहिए। डोडा की घटना के बाद यह जो कहा जा रहा है कि सैनिकों के बलिदान का बदला लिया जाएगा, उसे न केवल पूरा करके दिखाया जाना चाहिए, बल्कि आतंकियों, उनके आकाओं और उन्हें सहयोग-समर्थन देने वालों पर ऐसा करारा प्रहार किया जाना चाहिए, जिससे वे अपनी हरकतों से हमेशा के लिए बाज आएं। पाकिस्तान भले ही आर्थिक संकट और राजनीतिक अस्थिरता से जूझ रहा हो, लेकिन वह जम्मू कश्मीर में पहले की तरह ही आतंकवाद को बढ़ावा देने में लगा हुआ है। उसकी घरेलू व विदेश नीति ह्यकश्मीरह्न पर ही आधारित है। चूंकि इसकी भरी-पूरी आशंका है कि चीन उसे उकसाने में लगा हुआ होगा, इसलिए भारत को कहीं अधिक सतर्क रहना होगा।

केन्द्र सरकार ने कश्मीर में विकास कार्यों को तीव्रता से साकार किया है, न केवल विकास की बहुआयामी योजनाएं वहां चल रही है, बल्कि पिछले 10 सालों में कश्मीर में आतंकमुक्त करने में भी बड़ी सफलता मिली है। बीते साढ़े तीन दशक के दौरान कश्मीर का लोकतंत्र कुछ तथाकथित नेताओं का बंधुआ बनकर गया था, जिन्होंने अपने राजनीतिक स्वार्थों के लिये जो कश्मीर देश के माथे का ऐसा मुकुट था, जिसे सभी प्यार करते थे, उसे डर, हिंसा, आतंक एवं दहशत का मैदान बना दिया।

संविधान विरोधी छवि को बदलने की कवायद

- राजेंद्र शर्मा

यह विचित्र नहीं है कि इमरजेंसी में ज्यादतियां आदि सहने वालों तथा कुर्बानियां देने वालों को 'श्रद्धांजलि' अर्पित करने के लिए 'संविधान हत्या दिवस' मनाने का ख्याल मोदी निजाम को दो कार्यकाल पूरे होने के बाद ही आया है। वैसे, संघ-भाजपा के मामले में यह अचरज की बात हर्गिज नहीं है कि जिन चीजों को वे राजनीतिक रूप से भुनाना चाहते हैं, उन्हें लेकर उनकी पीड़ा सामान्य मानवीय प्रकृति से उल्टी ही चलती है

इससे मुखर विडंबना दूसरी नहीं होगी। जिस दिन अखबारों की सुर्खियों में मोदी सरकार के इसके फैसले की खबर छपी कि, 'अब हर साल 25 जून को 'संविधान हत्या दिवस' मनाया जाएगा', उसी दिन के अखबारों में एक और बड़ी सुर्खी दिल्ली के मुख्यमंत्री केजरीवाल को सुप्रीम कोर्ट द्वारा कथित शराब घोटाले से जुड़े ईडी द्वारा बनाए गए धनशोधन मामले में, अंतरिम जमानत दिए जाने की थी। इसके साथ, उसी दिन के अखबारों में छपी एक और खबर को भी जोड़ लें जो बताती थी कि कथित शराब घोटाले से जुड़े भ्रष्टाचार के मामले में, जिसकी जांच सीबीआई कर रही है, अरविंद केजरीवाल की ही न्यायिक हिरासत 25 जुलाई तक के लिए बढ़ा दी गई थी। सरल शब्दों में कहें तो बाद वाली दो खबरों का संयुक्त रूप से अर्थ यह था कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा तथाकथित शराब घोटाले के मामले में दिल्ली के मुख्यमंत्री के खिलाफ साक्ष्यों को प्रथम दृष्टद्दया नाकाफी करार देकर, उन्हें जमानत दे दिए जाने के बावजूद, मोदी सरकार ने इसका पुख्ता बंदोबस्त कर रखा था कि वह जेल से बाहर नहीं निकल पाएं। और नरेंद्र मोदी की ही तरह, अपने स्तर पर जनता द्वारा लगातार तीन बार चुने गए एक शीर्ष कार्यपालिका अधिकारी के साथ इस तरह का तानाशाहीपूर्ण सलूक करने वाली सरकार का ही फैसला है कि, "अब हर साल 25 जून को 'संविधान हत्या दिवस' मनाया जाएगा!" वाकई, इससे मुखर विडंबना दूसरी मुश्किल से ही मिलेगी। यह शायद ही कोई मानने को तैयार होगा कि 25 जून 1975 को इंदिरा गांधी द्वारा देश में आंतरिक आपतकाल लगाए जाने की याद दिलाने के लिए 'संविधान हत्या दिवस' मनाए जाने के इस फैसले के पीछे, वाकई मौजूदा सत्ताधारियों की संविधान और संवैधानिक जनतंत्र को बचाने की चिंता है, जिसका कि दावा इस संबंध में प्रधानमंत्री तथा गृह मंत्री समेत, सत्ताधारी कुनबे की ओर से किया जा रहा है। वास्तव में इसे संयोग हर्गिज नहीं माना जा सकता है कि पिछले ही दिनों हुए आम चुनाव में भाजपा और उसके नेतृत्ववाले एनडीए को जबर्दस्त धक्का लगने के बाद और जनता द्वारा भाजपा को पिछले दो चुनावों में मिले अकेले पूर्ण बहुमत से बहुत पीछे धकेल दिए जाने के बाद ही, अचानक भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार को 'संविधान हत्या दिवस' मनाने के जरिए, संविधान बचाने की चिंता सताने लगी है। यह सब कितना अचानक है, इसे सिर्फ दो तथ्यों से समझा जा सकता है। पहला, 25 जून को 'संविधान हत्या दिवस' मनाने की गजट अधिसूचना, 12 जुलाई को जारी की गई, यानी इस साल की इमरजेंसी की सालगिरह के निकल जाने पूरे ढाई हफ्ते बाद। इमरजेंसी जो भी, जैसी भी थी, उसके चरित्र के संबंध में क्या इस दौरान कोई ऐसा नया रहस्योद्दघाटन हुआ है या नये सच सामने आए हैं, जो ठीक इस मुकाम पर मोदी सरकार को इसका इलहाम हुआ है कि 'संविधान हत्या दिवस' मनाना जरूरी है! वास्तव में, ऐसा भी नहीं है कि 25 जून को जब इमरजेंसी की ताजातरीन सालगिरह गुजरी थी, मोदी और उनकी सरकार को इमरजेंसी की याद ही नहीं रही हो। उल्टे खुद प्रधानमंत्री मोदी से शुरू कर, वर्तमान सत्ताधारियों ने अपने हिसाब से जी-भर कर इमरजेंसी पर हमले किए थे। वास्तव में इस सब के पीछे भ्रमित या सचेत रूप से भ्रम फैलाने की नीयत से फैलाई गई, यह गलतफहमी और थी कि इस 25 जून को इमरजेंसी के पचास साल हो रहे थे। इस सबके बावजूद, मोदी सरकार को जब उसके हिसाब से इमरजेंसी के पचास साल हो रहे थे, उस मौके पर भी 'संविधान हत्या दिवस' मनाने की बात नहीं सूझी। और इस आइडिया के आने में ढाई हफ्ते और निकल गए! दूसरी बात यह कि क्या यह विचित्र नहीं है कि इमरजेंसी में ज्यादतियां आदि सहने वालों तथा कुर्बानियां देने वालों को 'श्रद्धांजलि' अर्पित करने के लिए 'संविधान हत्या दिवस' मनाने का ख्याल मोदी निजाम को दो कार्यकाल पूरे होने के बाद ही आया है। वैसे, संघ-भाजपा के मामले में यह अचरज की बात हर्गिज नहीं है कि जिन चीजों को वे राजनीतिक रूप से भुनाना चाहते हैं, उन्हें लेकर उनकी पीड़ा सामान्य मानवीय प्रकृति से उल्टी ही चलती है यानी जहां सामान्यतः वक्त जैसे-जैसे गुजरता है, मानवीय पीड़ा घटती जाती है, उनकी गढ़ी हुई पीड़ा बढ़ती ही जाती है। इसलिए, हैरानी की बात नहीं है कि जहां दस साल पहले मोदी राज को इमरजेंसी की चुभन इतनी महसूस नहीं होती थी कि इसका रेचन करने के लिए अलग से एक राष्टद्वीय दिवस मनाना शुरू किया जाता, दस साल गुजरने के बाद उसे 'संविधान हत्या दिवस' मनाना अत्यंत आवश्यक लग रहा है।

दिल्ली: छोटे बच्चों में तेजी से फैल रही एचएफएमडी बीमारी, जानें लक्षण क्या

नई दिल्ली। दिल्ली में छोटे बच्चों को हाथ, पैर और मुंह की बीमारी अपनी चपेट में तेजी से ले रही है। चिकित्सकों ने बताया कि एचएफएमडी एक आम वायरल बीमारी है जिससे सबसे ज्यादा बच्चे प्रभावित होते हैं। हाथ, पैर और मुंह का रोग (एचएफएमडी) मुख्य रूप से शिशुओं और छोटे बच्चों में फैल रहा है। लक्षणों की बात करें, तो इसमें बुखार, गले में खराश, मुंह में छाले और हाथों और पैरों पर चकत्ते दिखते हैं। इस तरह के रोग विभिन्न प्रकार के एंटरोवायरस के कारण होते है, जिसमें सबसे आम तौर पर कॉक्ससैकीवायरस अ16 और एंटरोवायरस 71 जैसे वायरस होते है। गुरुग्राम के फोर्टिस मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट के प्रिंसिपल डायरेक्टर और एचओडी, पीडियाट्रिक्स डॉ. कृष्ण चुघ ने आईएएनएस को बताया, "हम रोजाना इसके 4 से 5 मामले देख रहे हैं, जो हमारे द्वारा देखे जाने वाले औसत मामलों से बहुत अधिक है।" उन्होंने कहा, "यह मामले खासतौर पर 1-7 वर्ष तक की आयु के बच्चों में देखने को मिल रहे है।" ज्यादातर संक्रामक बीमारियां आमतौर पर बुखार से शुरू होती है, जिसके साथ अक्सर गले में खराश और अस्वस्थता जैसा महसूस होता है। इसके बाद मुंह, हाथों की हथेलियों और पैरों के तलवों पर दर्दनाक घाव या छाले दिखाई देते हैं। ये घाव बच्चों को काफी परेशान कर सकते है, जिससे बाद बच्चों के लिए खाना-पीना मुश्किल हो जाता है। हाथों और पैरों पर दाने, छोटे लाल धब्बे या छाले के रूप में दिखाई दे सकते हैं। कुछ मामलों में, विशेष रूप से एंटरोवायरस 71 के साथ, यह बीमारी वायरल मैनिंजाइटिस या एन्सेफलाइटिस जैसी अधिक गंभीर जटिलताओं को जन्म दे सकती है। वायरस नजदीकी संपर्क, श्वसन बूंदों (खांसने, छींकने) और दूषित सतहों या मल के संपर्क में आने से फैलता है। संक्रामकता का उच्च स्तर वहां पाया जाता है जहां छोटे बच्चे इकट्ठा होते हैं, इसमें डेकेयर और स्कूल भी शामिल है। सर गंगा राम अस्पताल में संक्रामक रोगों के वरिष्ठ सलाहकार और प्रमुख डॉ अतुल गोगिया ने आईएएनएस को बताया, "यह कुछ दिनों में खुद ही खत्म हो जाता है और दो सप्ताह या उससे भी कम समय में बच्चा ठीक हो जाता है। इससे बचाव के लिए बच्चों को अन्यों के संपर्क में आने से बचाना है।" उन्होंने कहा, "गर्म और आर्द्र मौसम वायरस के पनपने के लिए आदर्श वातावरण बनाता है, जिससे यह वृद्धि होती है। यह बरसात के मौसम में चरम पर होता है।" दिल्ली के सीके बिड़ला अस्पताल में नियोनेटोलॉजी एवं बाल रोग निदेशक डॉ. पूनम सिदाना ने कहा, "पिछले कुछ दिनों से केरल में टोमैटो फ्लू नामक महामारी फैलने की खबरें आ रही हैं।

नये कानून से बुजुर्ग मां-पिता की सुध लेने की सार्थक पहल

- ललित गर्ग -

देश में वृद्धों के साथ उपेक्षा, दुर्व्यवहार, प्रताड़ना बढ़ती जा रही है, बच्चे अपने माता-पिता के साथ बिल्कुल नहीं रहना चाहते, वे उनके जीवन-निर्वाह की जिम्मेदारी भी नहीं उठाना चाहते हैं, जिससे भारत की बुजुर्ग पीढ़ी का जीवन नरकमय बना हुआ है, वृद्धजनों की पल-पल की घुटन, तनाव, जीवन-निर्वाह करने की जटिलता एवं उपेक्षा को लेकर समय-समय पर जहां न्यायालयों ने अपनी चिन्ता जतायी है, वहीं सरकार ने कानून बनाकर बुजुर्गों को उन्नत एवं शांति देने के प्रयास किये हैं, लेकिन इसके बावजूद वृद्ध लोगों का जीवन कष्टमय एवं जटिल बना हुआ है। वृद्ध माता-पिता की देखभाल एवं भरण-पोषण की जिम्मेदारी से मुंह मोड़ने की घटनाएं तेजी से बढ़ी हैं। अदालतों में गुजारा-भत्ते से जुड़े विवाद बड़ी संख्या में सामने आ रहे हैं। यही वजह है कि केंद्र सरकार वृद्ध माता-पिता की देखभाल के लिये बाध्य करने वाले 2007 के कानून में बदलाव लाकर, इसका दायरा बढ़ाने के मकसद से नये कानून लाने की तैयारी में है। माता-पिता और बुजुर्गों की देखभाल से जुड़े वर्षों पुराने कानून को प्रभावी व व्यावहारिक बनाने की कोशिश निश्चित रूप से सामाजिक एवं पारिवारिक ताने-बाने में वृद्धों को सम्मानजनक जीवन देने की सार्थक एवं सराहनीय कोशिश है।

इस समय देश में करीब 10.5 करोड़ बुजुर्ग लोग हैं और 2050 तक इनकी संख्या 32.4 करोड़ तक पहुंच जाएगी। भारत सहित 64 ऐसे देश होंगे जहाँ 30 प्रतिशत आबादी 60 वर्ष से अधिक उम्र की होगी। एकल परिवार के दौर में बुजर्गों की देखभाल और भरण पोषण एक बड़ी समस्या के तौर पर उभर रही है ऐसे में, केंद्रीय मंत्रिमंडल ने बुजुर्गों की देखभाल के लिये मेंटिनेंस ऐंड वेलफेयर ऑफ पैरंट्स ऐंड सीनियर सिटिजन ऐक्ट 2007 में संशोधन की पहल की है, नये बिल के मुताबिक अब घर के बुजुर्गों की जिम्मेदारी सिर्फ बेटे ही नहीं, बल्कि बहू-दामाद, गोद लिए गए बच्चे, सौतेले बेटे और बेटियों की भी होगी। बिल लाने का मकसद बुजुर्गों का सम्मान सुनिश्चित करना है। पहले वृद्ध माता-पिता अपनी संतानों से दस हजार रुपये तक का गुजारा भत्ता पाने के हकदार थे। बताया जा रहा है कि नये विधेयक के अनुसार अब माता-पिता का गुजारा भत्ता बच्चों की आर्थिक हैसियत से तय होगा। वहीं बच्चों के साथ कटुता कम करने के प्रयासों में माता-पिता व बुजुर्गों को त्यागने अथवा दुर्व्यवहार पर बच्चों को दी जाने वाली सजा में कमी करने की भी तैयारी है। ऐसा सामाजिक संगठनों से विमर्श के बाद किया गया है। क्योंकि लंबी सजा से माता-पिता और बच्चों के संबंधों में ज्यादा खटास बढ़ती है। कहा जा रहा है कि सरकार बजट सत्र में इस विधेयक को पेश कर सकती है। दरअसल, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय ने बुजुर्गों की देखभाल से जुड़े 2007 के कानून में बदलाव की पहल तब की, जब समाज में बुजुर्गों की अनदेखी व दुर्व्यवहार के मामले तेजी से बढ़े हैं। भारतीय संस्कृति एवं सभी धार्मिक ग्रंथों में माता पिता को भगवान का रूप माना गया है और उनकी निःस्वार्थ सेवा करने की बात कही गयी है, लेकिन इसके बावजूद कई लोग अपने बुजुर्ग माता-पिता की सेवा करना तो दूर उल्टा उन्हें परेशान करते रहते हैं। इसलिये विभिन्न राज्यों की सरकारें बुजुर्ग आत्म-सम्मान के लिये नये कानून बना रही है। उत्तरप्रदेश में योगी सरकार अब बुजुर्ग मां-बाप की संपत्ति हड़प कर उन्हें बेदखल करने वाले बच्चों के खिलाफ सख्त कानून लाने की तैयारी कर रही है। इसके तहत माता-पिता की संपत्ति हड़प कर उन्हें घर से बाहर निकलने वाले बेटे-बेटियों की खैर नहीं होगी। कुछ दूसरी तरह से असम सरकार ने वृद्धों की उपेक्षा पर विराम लगाने की दृष्टि से ही राज्य कर्मचारियों के लिए नवंबर में दो विशेष अवकाश शुरू किए हैं, ताकि वे अपने माता-पिता या सास-ससुर के साथ समय बिता सकें।

मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने अपनी घोषणा में परिवार के महत्व पर जोर दिया। 6 और 8 नवंबर को मिलने वाली ये विशेष छुट्टियां कर्मचारियों को उनके बुजुर्ग माता-पिता या सास-ससुर से जुड़ने के लिए हैं। इसका उद्देश्य परिवार के वरिष्ठ सदस्यों के प्रति सम्मान और देखभाल दिखाना है। मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने अपनी घोषणा में परिवार के महत्व पर जोर देते हुए कहा है कि ह्यमाता-पिता का आशीर्वाद हमारे जीवन के लिए आवश्यक है। एक आदर्श नागरिक के रूप में, अपने माता-पिता की भलाई सुनिश्चित करना हमारी जिम्मेदारी है।ह्न

असम सरकार ने पूर्व में राज्य विधानसभा ने असम कर्मचारी माता-पिता जिम्मेदारी एवं जवाबेदही तथा निगरानी नियम विधेयक, 2017 या प्रणाम विधेयक भी पारित कर चुकी है। इसका मकसद यह सुनिश्चत करना है कि राज्य सरकार के कर्मचारी अपने वृद्ध हो रहे माता-पिता या शारीरिक रूप से अशक्त भाई-बहन की देखभाल करें नहीं तो उनके वेतन से पैसे काट लिए जाएंगे। पूरे देशभर के लोग इस कानून को असम सरकार का एक अच्छा कदम बताया। नियमों के तहत अगर कोई व्यक्ति (सरकारी कर्मचारी) उसपर निर्भर माता-पिता की देखभाल नहीं करता तो उसके कुल वेतन का 10 प्रतिशत हिस्सा काट लिया जाएगा और वह राशि माता-पिता के खाते में डाल दी जाएगी। दिव्यांग (शारीरिक रूप से अशक्त) भाई-बहन होने की स्थिति में वेतन से 15 प्रतिशत तक हिस्सा काट लिया जाएगा।

अब केन्द्र सरकार द्वारा 2007 के कानून में बदलाव लाकर, नये विधेयक में इससे जुड़े कानून की व्यावहारिक दिक्कतों को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। हालांकि, मंत्रालय ने कानून में बदलाव की पहल वर्ष 2019 में कर दी थी। इसी साल लोकसभा में एक विधेयक भी पेश किया गया था। इसके व्यापक पहलुओं की पड़ताल के लिये विधेयक को बाद में संसदीय समिति के पास भेज गया था। संसदीय समिति की सिफारिशों के आधार पर सरकार ने एक बार फिर एक विधेयक को संसद में पेश किया था। लेकिन वह पारित नहीं हो पाया था। कालांतर 17वीं लोकसभा का कार्यकाल खत्म होने के कारण विधेयक निष्प्रभावी हो गया था। जिसके बाद अब सरकार नये सिरे से इस विधेयक को संसद में लाने की तैयारी में है। उल्लेखनीय है कि इस विधेयक में कई नये प्रावधानों को जोड़ा गया है। विधेयक में प्रत्येक जिले में बुजुर्गों की गणना, मेडिकल सुविधाओं से लैस वृद्ध आश्रम व जिला स्तर पर एक सेल गठित करने जैसे प्रावधान हैं।

संतान द्वारा बुजुर्गों की आवश्यकताओं को पूरा न करना गरिमा के साथ स्वतंत्र जीवन जीने जैसे मानवाधिकारों का हनन है। संयुक्त परिवारों के विघटन और एकल परिवारों के बढ़ते चलन ने इस स्थिति को नियंत्रण से बाहर कर दिया है। वृद्धों की उपेक्षा एवं दुर्व्यवहार के इस गलत प्रवाह को रोकने की दृष्टि से नया कानून प्रभावी कदम है, इससे बच्चों की अपने माता-पिता की उपेक्षा पर विराम लग सकेगा। सभी के लिये बुजुर्ग पीढ़ी के लिए सम्मान, सुरक्षा और कल्याण को सुनिश्चित करना प्राथमिकता होनी ही चाहिए। हम एक ऐसी दुनिया बनाएं जहाँ हर बुजुर्ग अपने बुढ़ापे को गरिमा, आत्मसम्मान, सुरक्षा और स्वस्थता के साथ जी सके। वृद्धों को बंधन नहीं, आत्म-गौरव के रूप में स्वीकार करने की अपेक्षा है। वृद्धों को लेकर जो गंभीर समस्याएं आज पैदा हुई हैं, वह अचानक ही नहीं हुई, बल्कि उपभोक्तावादी संस्कृति तथा महानगरीय अधुनातन बोध के तहत बदलते सामाजिक मूल्यों, नई पीढ़ी की सोच में परिवर्तन आने, महंगाई के बढ़ने और व्यक्ति के अपने बच्चों और पत्नी तक सीमित हो जाने की प्रवृत्ति के कारण बड़े-बूढ़ों के लिए अनेक समस्याएं आ खड़ी हुई हैं। यदि परिवार के वृद्ध कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं, रुग्णावस्था में बिस्तर पर पड़े कराह रहे हैं, भरण-पोषण को तरस रहे हैं तो यह हमारे लिए वास्तव में लज्जा एवं शर्म का विषय है। वर्तमान युग की बड़ी विडम्बना एवं विसंगति है कि वृद्ध अपने ही घर की दहलीज पर सहमा-सहमा खड़ा है, वृद्धों की उपेक्षा स्वस्थ एवं सृसंस्कृत परिवार परम्परा पर काला दाग है, यह आदर्श-शासन व्यवस्था के लिये भी शर्म का विषय है। इन त्रासद एवं डरावनी स्थितियों से वृद्धों को मुक्ति दिलाने के लिये नये कानून बनाने के साथ उसे सख्ती से लागू करने की भी अपेक्षा है।

मोहर्रम पर्वः इमाम हुसैन की शहादत को मुस्लिमों ने किया याद, निकाला ताजिया जुलूस

अखंड भारत संदेश

मऊ/चित्रकूट। नगर पंचायत मऊ में मोहर्रम पर्व यौमे आशुरा के मौके पर बुधवार को मुस्लिम समुदाय ने क्षेत्र में परम्परागत ढंग से ताजिया जुलूस निकाला। कस्बे में शांति व सौहार्द के साथ ताजिया जुलूस में अकीदतमंदों के साथ हिंदू आस्थावानों ने शामिल होकर कस्बे की वर्षों पुरानी परम्परा मजबूत की। कस्बा मुहर्रम कमेटी की अकबरी बेगम, इस्लामुद्दीन, शादाब गनी, कल्लन खां, बहादुर खां, इशरत अली की अगुवाई में बुधवार को अपरान्ह तीन बजे बड़े ग्राम चैक से ताजिया जुलूस निकला।

बुधवार को कस्बे के रामलीला मैदान से बाजार रोड होते हुए बस स्टॉप चैराहा से राष्ट्रीय राजमार्ग सीएचसी मार्ग से यमुना पथ के कर्बला पहुंचा। ताजिये का सुपुर्द-ए-खाक किया। जुलूस में शामिल मुस्लिम युवक जंजीर के साथ खूनी मातम से कर्बला के शहीदों को याद किया। मऊ के समाजसेवियों ने जगह-जगह लंगर लगाकर शर्बत व जलेबी तथा हलवा-पुलाव बांटा। ढोल-नंगाड़ों की थाप पर बच्चों व युवाओं ने या हुसैन के मातमी नारों से इमाम हुसैन की शहादत याद की। कहा जाता है कि मोहर्रम के महीने में हजरत इमाम हुसैन की शहादत हुई थी। हजरत इमाम हुसैन इस्लाम धर्म के संस्थापक हजरत मुहम्मद साहब के छोटे नवासे थे। हजरत इमाम हुसैन की शहादत की याद में मुहर्रम के महीने के दसवें दिन लोग मातम मनाते हैं, जिसे आशूरा कहा जाता है। आशूरा मातम का दिन होता है। इस दिन मुस्लिम समुदाय मातम मनाता है। मुहर्रम पर मुस्लिम समुदाय ताजिया निकालते हैं। इसे हजरत इमाम हुसैन के मकबरे का प्रतीक माना जाता है। लोग शोक व्यक्त करते हैं। अपनी छाती पीटकर इमाम हुसैन की शहादत याद करते हैं। नगर पंचायत मऊ में मोहर्रम के ताजिया जुलूस क्षेत्र के प्रमुख मार्गों से होकर निकला। चेयरमैन मऊ, नगर पंचायत मऊ के ब्रांड एंबेसडर शारदा अग्रहरि, जनसेवक विष्णु देव त्रिपाठी, शादाब गनी समेत सैकड़ों की तादाद में लोगों ने शिरकत कर साम्प्रदायिक भावना मजबूत की। इस मौके पर सीओ जयकरन सिंह, एसडीएम राकेश कुमार पाठक, थाना मऊ प्रभारी विनोद कुमार राय, क्राइम इंस्पेक्टर अभय राज प्रताप, एसआई कृपानंदन शर्मा, एसआई इंद्रजीत गौतम समेत भारी संख्या में पुलिस बल मौजूद रहा।

मऊ में ताजिया निकालते व राजापुर में अलाव कूदते अकीदतमन्द।

इसी क्रम में राजापुर कस्बे के शाही इमाम बाड़े से मुस्लिम समाज के लोगों ने हजरत इमाम हुसैन की शहादत में मोहर्रम की 9वीं तारीख को मध्य रात्रि में जलते अंगारों में कूदकर मातम मनाया। कस्बे के निर्धारित रास्तों से जुलूस निकाला। दोनों समुदाय के लोगों ने सौहार्दपूर्ण ढंग से हिस्सा लिया। मुस्लिम समाज की महिलाओं ने भारी तादाद में शरीक होकर मुस्लिम वर्ग के लोगों ने मोहर्रम की दसवीं तारीख को ताजिया जुलूस में शामिल होकर मातमी धुन से निर्धारित मार्गों से जुलूस निकाला। देर शाम कर्बला में खाक-ए-सुपुर्द किया।

बुधवार की शाम चार बजे ताजिया जुलूस इमाम बाड़े से होते हुए हनुमान मंदिर रोड, यमुना रोड, सरांय तलैया चैराहा, पश्चिम नाका व माधवगंज के बाद देर रात इमाम बाड़े में रखकर अंतिम फातिहा देकर कब्रिस्तान में बने कर्बले में खाक-ए-सुपुर्द किया। नगर पंचायत अध्यक्ष संजीव मिश्रा ने कहा कि कोई मजहब आपस में बैर करना नहीं सिखाता। दोनों समुदाय ने सौहार्द, प्रेम, सद्भावना के प्रतीक मोहर्रम की ताजिया, संविधान में हर समुदाय के लोगों को धर्म अनुसार त्यौहार मनाने की इजाजत है। हर समुदाय के लोग भाईचारे सौहार्दपूर्ण ढंग से आपसी भेदभाव मिटाकर त्यौहारों में शरीक होते हैं। समाज के विकास समेत देश-प्रदेश का विकास तभी संभव है, मुस्लिम समाज के अध्यक्ष अतहर नईम ने बताया कि इस्लामी मान्यता अनुसार सन 61 हिजरी 680 ईसवी में इराक के कर्बला में पैगंबर मोहम्मद साहब के नवासे हजरत इमाम हुसैन व कर्बला में इस्लाम के हित में जंग करते हुए हजरत इमाम हुसैन व उनके परिवार के लोग मोहर्रम की दसवीं तारीख में शहीद हुए थे। हुसैन की उसी कुर्बानी को याद कर मोहर्रम की दसवीं तारीख को मुसलमान अलग-अलग ढंग से शोक जाहिर करते हैं। मोहर्रम पर्व गमगीन होकर मुस्लिम समाज के लोग मनाते आ रहे हैं। जुलूस में नाजमा बेगम, नूरी खान, रेशम खान, गूंजा खान, रईस अहमद, मो अली उर्फ बाबूजी, आबिद अली, साबिद अली, मो रफीक कुरैसी, मो मेराजुल हक, मजीद कुरैसी के दरवाजों पर लंगर हुआ। जुलूस की व्यवस्था में ताजियेदार, शाबिर अली, मोहम्मद अली समेत इस्लाम नईम, वसीम कुरैसी, अकबर अली, हैदर अली, मो अली, रईस अहमद, मो अली, मदार कुरैसी, लाली खां, मुख्तार अली, मो महबूब, शमीम कुरैसी, मजीद कुरैसी, लाल मोहम्मद, मो हारून, मो अकरम, मो हारुन आदि ने ढोल-नंगाड़ों से जुलूस में शामिल रहे। सुरक्षा व्यवस्था तहसीलदार राम सुधारराम, प्रभारी निरीक्षक मनोज सिंह, एसआई अनिल कुमार, इमरान खान, सुरेन्द्र सिंह, अखलेश कुमार समेत भारी तादाद में पुलिस बल मौजूद रहा।

डीएम से गरीब अभिभावकों ने लगाई उम्मीद, महंगी शिक्षा ने तोड दी कमर

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। बढ़ती महंगाई व महंगी शिक्षा ने आम आदमी की कमर तोड़कर रख दी है। शिक्षा से ज्यादा विद्यालयों की मंहगी किताबें व मनचाही दुकानों से रिश्ता जोड़कर उसी दुकान से ड्रेस, किताबे आदि खरीदवाकर अभिभावकों को लूटने का अड्डा विद्यालय प्रबंधन बन गया है।

बुधवार को मप्र के भिंड जिले से एक मजदूर बच्चे की किताबों को खरीदकर बिल समेत जिलाधिकारी के पास पहुंचा। मजदूर ने कक्षा दो में पढ़ने वाले बच्चे की किताबें भिंड कलेक्टर संजीव श्रीवास्तव को दिखाई। किताबें व बिल दिखाते हुए बताया कि ये किताबें दो हजार 130 रुपये में मिली हैं। कलेक्टर संजीव श्रीवास्तव ने डीपीसी को निर्देश दिये कि संबंधित स्कूल की मान्यता निलंबित कर दी जाये। स्कूल को सात दिन का नोटिस देकर मान्यता निलम्बित कर दी है। जिलाधिकारी के तत्काल एक्शन में आने से ये खबर सुर्खियां बन गईं।

चित्रकूट में भी अभिभावक जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन से इसी एक्शन की उम्मीद लगाये हैं। शायद डीएम गरीबों की जेब में डांका डाल रहे शिक्षण संस्थाओं पर चाबुक चलाकर गरीब जनता की मेहनत की कमाई बचाने का काम करेंगे। यहां ऐसे-ऐसे स्कूल हैं कि फीस तो भारी-भरकम लेते हैं, लेकिन स्कूल मैदान व मानक अनुसार कमरे नहीं हैं। ऐसे में सर्वे करायें तो तमाम स्कूलों की मान्यता रद्द होने में समय नहीं लगेगा।

आधार सेंटर में परेशान ग्रामीण।

24 घंटे में चोर समेत बाइक बरामद

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर अपराधियों के खिलाफ जारी कार्यवाही में एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी व सीओ मऊ जयकरन सिंह की देखरेख में प्रभारी थाना मानिकपुर प्रभुनाथ यादव की अगुवाई में पुलिस ने 24 घंटे में चोरी का खुलासा कर चोर को चोरी की बाइक समेत गिरफ्तार किया। ज्ञात है कि 16 जुलाई को मारकुण्डी थाने के छेरिहा गांव के तीरथ पुत्र चुन्नीलाल ने थाने में सूचना दी कि वह दवा लेने सरकारी अस्पताल मानिकपुर आया था। उसकी मोटरबाइक अज्ञात चोर चुरा ले गये हैं। पुलिस ने मामला दर्जकर बाइक बरामदगी को दरोगा राजोल नागर को लगाया। दरोगा की टीम ने प्रयास कर जवाहरनगर चमरौड़ी राजाराम के घर के सामने से कुनाल साकेत पुत्र राजाराम जवाहरनगर को चोरी की मोटरबाइक समेत गिरफ्तार किया। बाइक बरामदगी पर धारायें बढाई। टीम में दरोगा राजोल नागर, सिपाही भाष्कर शुक्ला व जलील अहमद शामिल रहे।

आधार सेंटर में दलालों का बोलबाला

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिला मुख्यालय के गंगाजी रोड स्थित आधार सेंटर में अव्यवस्था व दलालों का बोलबाला है। मनमानी ढंग से सुविधा शुल्क वसूलकर 0 से 5 वर्ष के बच्चों के नये व अपडेट आधारकार्ड बनाये जा रहे हैं। दूरदराज के ग्रामीणों से भारी वसूली की जा रही है।

बुधवार को आधार सेंटर में अवैध वसूली का खुलासा हुआ। बताया गया कि बिना सुविधा शुल्क के आधार सेंटर में कोई काम नहीं होता। आधार केंद्र में बैठे कर्मचारी ग्रामीणों से दस रुपये का फार्म बाहर से खरीदकर लाने को कहते हैं। दस रुपये प्रति फार्म नंबर लगाने के नाम पर ग्रामीणों को बेवकूफ बनाते हैं। आधार सेंटर में बच्चों के आधारकार्ड बनाने व सुधारने में महीनों चक्कर लगवाते हैं। आधार सेंटर में दूर-दराज से आये लोगों को परेशान करते हैं। लोगों ने बताया कि आधार सेंटर में बैठे कर्मचारी अभद्र बर्ताव भी करते हैं।

मानिकपुर तहसीलदार बने चन्द्रकांत तिवारी

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। मानिकपुर तहसील के अधिवक्ताओं ने तहसीलदार के लूट के रवैये के प्रति विरोध-प्रदर्शन कर रहे थे। अधिवक्ताओं का विरोध-प्रदर्शन रंग लाया। अनशन की खबर का जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन ने संज्ञान लेते हुए मानिकपुर तहसील में तैनात तहसीलदार अखिलेश कुमार गुप्ता को तहसीलदार न्यायिक कर्वी तबादला कर दिया। उनकी जगह मानिकपुर तहसीलदार चंद्रकांत तिवारी को बनाया है। चंद्रकांत तिवारी पिछले महीने ललितपुर से तबादले पर चित्रकूट आये थे। अब उन्हें मानिकपुर तहसील भेजा गया है। मानिकपुर तहसीलदार का जल्द चार्ज ग्रहण करेंगे। इस बाबत मानिकपुर अधिवक्ता पंकज पटेल ने बताया कि जिलाधिकारी के निर्णय से अधिवक्ताओं में खुशी का माहौल है।

विधायक निधि से घटिया नाली निर्माण को पीडी ने जांचा, पहली बारिश में टूटी थी नाली

अखंड भारत संदेश

पहाड़ी/चित्रकूट। पहाड़ी कस्बा स्थित शांति देवी इंटर कॉलेज से डेढ़ सौ मीटर घटिया सामग्री से निर्माणधीन नाली का मौके पर परियोजना निदेशक सच्चिदानंद प्रसाद ने निरीक्षण किया। ग्रामीणों की शिकायत पर मुख्य विकास अधिकारी अमृतपाल कौर ने विधायक निधि से घटिया सामग्री से बनाई नाली की जांच के आदेश पर नवागंतुक परियोजना निदेशक सच्चिदानंद प्रसाद को सौंपी। जांच को पहुंचे परियोजना निदेशक ने नाली की गुणवत्ता मानकों की जांच की। मौके पर खुदवाकर देखा तो निचले स्तर पर मोरम, मानक के अनुसार नहीं मिली।

नाली की गुणवत्ता जांचते परियोजना निदेशक।

बुधवार को परियोजना निदेशक को निर्माण सामग्री अनुपात के अनुसार नहीं मिली। ग्रामीणों ने जांच अधिकारी को मौके पर दिखाते हुए कहा कि नाली निर्माण में भारी तादाद में क्रशर डस्ट व घटिया क्वालिटी की ईंट का प्रयोग कर नाली बनाई गई है। परियोजना निदेशक ने मौके से नमूना लेकर उच्चाधिकारियों को आख्या सौंपने का भरोसा दिया। ग्रामीण व प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि जांच अधिकारी को गुणवत्ता बाबत सहायक अभियंता आशुतोष कुमार व अवर अभियंता आरईएस जितेंद्र कुमार ने झूंठ बोलकर गुमराह करने का प्रयास किया। जांच अधिकारी ने एक नहीं सुनी। मौके पर मौजूद शिकायतकर्ता लवलेश यादव व ग्रामीणों के समक्ष खुदवाकर जांच कराई। मौके पर मानक अनुसार कार्य नहीं मिला। ग्रामीणों ने कहा कि जांच अधिकारी सच्चिदानंद प्रसाद ने ईमानदारी से जांच की है। जांच अधिकारी पर भरोसा जताया। शिकायत के बाद पहली बारिश में गुणवत्ताविहीन नाली कई जगह से टूट गई थी। जाहिर है गुणवत्ता से नाली निर्माण नहीं हुआ। इस बाबत परियोजना निदेशक ने कहा कि निर्माण कार्य में भारी गड़बड़ी मिली है। उच्चाधिकारियों को आख्या भेजी गई है।

महाप्रबंधक ने मानिकपुर रेलखंड का किया निरीक्षण

अमृत भारत स्टेशन योजना से चयनित मानिकपुर स्टेशन देखा

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। उत्तर मध्य रेलवे महाप्रबंधक उपेंद्र चंद्र जोशी ने मंडल रेल प्रबंधक प्रयागराज हिमांशु बडोनी के साथ प्रयागराज-मानिकपुर रेलखंड का निरीक्षण किया। महाप्रबंधक ने निरीक्षण प्रयागराज से मानिकपुर के बीच विंडो ट्रेलिंग से की। उन्होंने मार्ग में आने वाले रेल पथ व पास के सभी इंस्टालेशनो सिगनल, ओएचई, प्लेटफॉर्म पर सफाई आदि चलती गाड़ी मे लगे निरीक्षण यान की पिछली खिड़की से निरीक्षण किया। बुधवार को महाप्रबंधक ने

मानिकपुर स्टेशन देखते महाप्रबंधक उपेंद्र चंद्र जोशी।

अन्य संरक्षा बाबत कार्यों समेत राइडिंग गुणवत्ता खासतौर से प्वॉइंट व क्रॉसिंग पर ट्रैकज्योमेट्री इंडेक्स मे सुधार, ओएमएस (औसिलेशन मोनिटरिंग सिस्टम) विवरण, ओएचई की स्थिति, मार्ग के लेवल क्रॉसिंग गेटों की स्थिति, पटरी के आस-पास स्क्रैप की स्थिति, साफ-सफाई, वायरिंग या लूज इंस्टालेशन, मार्ग में आने वाले माइनर व मेजर ब्रिज समेत खंड में चल रहे आधारभूत संरचना कार्य का पिछली खिड़की से जायजा लिया। सम्बंधित अधिकारियों को पूर्ण दक्षता व संरक्षा मानकों का पालन करने के निर्देश दिये।

महाप्रबंधक उपेंद्र चंद्र जोशी ने अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत पुनर्विकास को चयनित मानिकपुर जंक्शन स्टेशन पर चल रहे विकास कार्यों की समीक्षा की। इस मौके पर मंडल रेल प्रबंधक ने मानिकपुर स्टेशन के क्रमवार विकास की योजना बाबत महाप्रबंधक को बताया। महाप्रबंधक ने स्टेशन का निरीक्षण कर चल रहे कार्यों व यात्रियों को उपलब्ध सुविधायें देखी। जोशी ने लोको पायलट/गार्ड रनिंग रूम देखा। रनिंग रूम के रख-रखाव को बेहतर करने के निर्देश दिये। निरीक्षण दौरान मुख्यालय से मुख्य इं एससी जैन, अपर मंडल रेल प्रबंधक/इंफ्रा नवीन प्रकाश, वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक श्रीकृष्ण शुक्ला, वरिष्ठ मंडल इं प्रथम अमित कुमार समेत अन्य विभागों के अधिकारी, निरीक्षक, पर्यवेक्षक मौजूद रहे।

कर्वी पुलिस ने छेडछाड के दो वांछित दबोचे

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर वांछित/वारंटी की गिरफ्तारी को जारी अभियान में कर्वी कोतवाल उपेन्द्र प्रताप सिंह की अगुवाई में निरीक्षक लाखन सिंह ने सिपाही विकास यादव के साथ अपहरण, छेडछाड व पॉक्सो एक्ट के वांछित अजय सोनकर पुत्र अच्छेलाल राघवपुरी व छेडछाड, गाली-गलौज, जान से मारने की धमकी 66 आईटी एक्ट के वांछित रोहित पुत्र कमलेश जोशी चैगलिया सीतापुर को गिरफ्तार किया है। टीम में निरीक्षक अपराध लाखन सिंह व सिपाही विकास यादव

प्रधान-सदस्य के रिक्त पदों पर होगे उपचुनाव

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिला निर्वाचन अधिकारी पंचायत शिवशरणप्पा जीएन ने बताया कि जिले के प्रधान, ग्राम पंचायत सदस्यों के रिक्त पदों पर न्यायालय के स्थगन आदेश से बाधित न हो पर उप चुनाव निर्धारित समय सारणी से कराये जाने है। बुधवार को बताया कि नाम निर्देशन पत्रों को जमा करने की अन्तिम तिथि 22 जुलाई, पत्रों की जांच 23 जुलाई, उम्मीदवारी वापसी व प्रतीक आवंटन 24 जुलाई, मतदान छह अगस्त व मतगणना आठ अगस्त को है। सदर ब्लाक के भारतपुर गांव में प्रधान पद आरक्षित अनुसूचित जाति महिला, मुकुन्दपुर के वार्ड 8 में सदस्य महिला, पहाड़ी ब्लाक के अतरौलीमाफी के वार्ड आठ में सदस्य पद अनारक्षित, बाबूपुर के वार्ड 13 में सदस्य पद अनुसूचित जाति, गड़ौली के वार्ड 13 में सदस्य पद अनुसूचित जाति महिला, ब्लाक मऊ के मंडौर के वार्ड 13 में सदस्य पद अनारक्षित, देवरा के वार्ड 13 में सदस्य पद अनारक्षित, हरदीकला के वार्ड तीन में सदस्य पद अन्य पिछड़ा वर्ग, ब्लाक मानिकपुर के बम्बिया के वार्ड सात में सदस्य पद अनुसूचित जाति महिला, चुरेह कसेरूवा के वार्ड 15 में सदस्य पद अनुसूचित जाति महिला, छेछरिहा खुर्द के वार्ड तीन में सदस्य पद महिला, कैलहा के वार्ड दो में सदस्य पद अनुसूचित जाति महिला व वार्ड छह में सदस्य पद अनारक्षित, ब्लाक रामगनर के भखरवार के वार्ड आठ में सदस्य पद अनारक्षित व डंडवार के वार्ड नौ में सदस्य पद अनारक्षित का चुनाव होना है।

इस बाबत 18 जुलाई को सार्वजनिक सूचना जारी की जायेगी। चुनाव संबंधी सभी कार्य ब्लाक मुख्यालय में होंगे। तय तिथियों के बीच सार्वजनिक अवकाश दिवसों पर भी कार्यालय खुले रहेंगे।

यमुना में ननद-भाभी की डूबने से मौत

नाविक ने युवक को बचाया, प्रशासनिक अमला मौके पर मौजूद

अखंड भारत संदेश

मऊ/चित्रकूट। नगर पंचायत मऊ के यमुना नदी में निर्माणाधीन मऊ महिला पुल के नीचे मऊ घाट में दो महिलाओं की डूबने से मौत हो गई। प्रशासनिक अमला मऊ के यमुना घाट पर मौजूद है। एनडीआरएफ से यमुना में डूबे शवों की खोज की जा रही है। सदर विधायक अनिल प्रधान ने घटना स्थल जाकर दुख जताया है। ये हादसा बुधवार को सवेरे आठ बजे मऊ घाट पर हुआ। बताया गया कि विवाह बाद मायन विसर्जन को नगर पंचायत मऊ के अम्बेडकरनगर से एक दर्जन महिलायें यमुना घाट गई थीं। रस्म पूरी करने के बाद महिलायें यमुना नदी में नहाने लगीं। अचानक दो महिलायें किरण (16) पुत्री कमलेश व कमलेश की बहू पुष्पा (24) पत्नी रामभरोस तथा कमलेश का भतीजा रामचरण (24) पुत्र दिनेश गहरे पानी में जाने से डूबने लगे। उन्हें डूबता देख महिलाओं ने शोर मचाना शुरू कर दिया। शोर सुनकर पास में नाव चला रहे युवक ने कूदकर युवक रामचरण को बचा लिया। इस बीच दोनों महिलायें यमुना में डूब गईं।

यमुना घाट पर महिलाओं की भीड व प्रशासनिक अमला।

परिजनों ने बताया कि कर्वी कोतवाली के रगौली गांव के कमलेश अपने बहनोई शिवमंगल के लड़के लवकुश की शादी में सपरिवार मऊ आये थे। शादी-विवाह के घर में खुशियां मातम में बदल गईं। मंगलवार को बारात लौटी थी। बुधवार को शादी की रस्म मायन विसर्जन को घर की महिलायें यमुना नदी में स्नान करने पहुंची थीं। अचानक ये हादसा हो गया। डूबने वाली महिलायें ननंद-भाभी थीं।

नगर पंचायत मऊ में अचानक हादसे ने सभी को झकझोर दिया है। दबी जुबान में कहा कि जब घाट पर नहाने को पर्याप्त पानी था तो आगे जाने की क्या जरूरत थी। प्रत्यक्षदर्शियों की माने तो ये हादसा निर्माणाधीन मऊ महिला पुल के पिलर नम्बर 34-33 के बीच हुआ है। घटना की सूचना पर मऊ थाना प्रभारी निरीक्षक विनोद कुमार राय व कस्बा इंचार्ज इन्द्रजीत गौतम पुलिस बल समेत मौके पर पहुंच गये। गोताखोरों से शव की खोज करा रहे हैं। मऊ एसडीएम राकेश कुमार पाठक ने भी मौके पर पहुंचकर हालात का जायजा लिया।

युवक की संदिग्ध मौतः घायल भाई ने रिश्तेदारों पर लगाया आरोप

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। निमंत्रण पर गये एक युवक की संदिग्ध दशा में मौत हो गई। अस्पताल में भर्ती छोटे भाई ने पिटाई से बड़े भाई की मौत की बात कही है। पुलिस ने हादसे में मृत्यु होना माना है। शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम को मर्चरी भेजा है।

ये घटना राजापुर थाने के बरुआ भट्ठा के पास बीती रात 11 बजे की है। अस्पताल में भर्ती छोटे भाई उमेश कुमार चिल्लीराकस ने बताया कि भाई मौला (45) बाइक से बड़े भाई लल्लूराम के साढू रामबाबू के यहां मटियारा पूजा में गये थे। वहां साला अवधेश अभद्र भाषा का प्रयोग लल्लूराम से करने लगा। विरोध पर भाई भोला से भी अभद्रता की। इसी बीच मप्र के कटनी के साढू गब्बर ने साले के पक्ष में विवाद शुरू कर दिया। इसे लेकर बड़े भाई मौला को बाइक में बैठाकर लौट रहा था। इसी बीच चारपहिया वाहन से पीछे लग गये। बरुआ भट्ठा के पास बाइक में ठोकर मार दिया। इससे गिरने पर मौत हो गई। इस बीच मारपीट कर बेहोशी दशा में छोड़कर भाग गये। सूचना पर पुलिस ने दोनों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया। डॉक्टरों ने मौला को मृत घोषित कर दिया। उमेश का इलाज जारी है। पुलिस ने शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम को मर्चरी भेजा। इस बाबत थानाध्यक्ष राजापुर मनोज कुमार ने बताया कि हादसे की जानकारी पर मौके पर गये थे। दोनों घायलों को जिला अस्पताल भेजा था। डॉक्टर ने मौला के मृत्यु की पुष्टि की। दुर्घटना की बात सामने आई है। तहरीर मिलने व पोस्टमार्टम रिपोर्ट पर कार्रवाई की जाएगी। मृतक के एक पुत्र व एक पुत्री तथा पत्नी शकुंतला देवी का रो-रोकर बुरा हाल है।

विदेश संदेश

ओमान में बंदरगाह पर तेल टैंकर पलटा, 13 भारतीयों समेत 16 लापता

दुबई। ओमान में बंदरगाह पर तेल टैंकर (जहाज) के पलट जाने से 13 भारतीयों सहित 16 लोगों का पूरा दल लापता है। किसी का भी अभी तक कोई सुराग नहीं लग पाया है। लापता लोगों में चालक दल के तीन सदस्य श्रीलंकाई हैं।

समुद्री सुरक्षा केंद्र (एमएससी) ने एक्स पर यह सूचना साझा की है। केंद्र के अनुसार, कोमोरोस के झंडे वाला एक तेल टैंकर बंदरगाह शहर दुकम के पास रस मदरका से 25 समुद्री मील दक्षिण-पूर्व में पलट गया। यह बंदरगाह ओमान के दक्षिण-पश्चिमी तट पर है। यह सल्तनत की प्रमुख तेल और गैस खनन परियोजनाओं के करीब है। इनमें एक प्रमुख तेल रिफाइनरी भी है। यह दुकम के विशाल औद्योगिक क्षेत्र का हिस्सा है। यह ओमान की सबसे बड़ी एकल आर्थिक परियोजना है।

लापता जहाज की पहचान प्रेस्टीज फाल्कन के रूप में की गई है। केंद्र ने कहा है कि लापता लोगों की तलाश जारी है। शिपिंग डेटा से पता चला है।

मिस्र-फ्रांस के राष्ट्रपति ने गाजा में युद्ध विराम के प्रयासों पर चर्चा की

काहिरा : मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल-फतह अल-सिसी ने अपने फ्रांसीसी समकक्ष इमैनुएल मैक्रॉन से गाजा पट्टी में युद्ध विराम को लेकर चर्चा की. दोनों ने फोन पर बातचीत की. जिसकी जानकारी मिस्र के राष्ट्रपति कार्यालय ने दी. शिन्हुआ समाचार एजेंसी के मुताबिक, मंगलवार (16 जुलाई) को कॉल के दौरान, सिसी ने मैक्रॉन को इजरायल और हमास के बीच मिस्र के मध्यस्थता प्रयासों के बारे में जानकारी दी. साथ ही मध्यस्थता की सफलता सुनिश्चित करने और फिलिस्तीनी एन्क्लेव में पर्याप्त मानवीय सहायता पहुंचाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों को एकजुट होने की जरूरत पर बल दिया.

मैक्रॉन ने इजरायल-फिलिस्तीन संकट को लेकर मिस्र के प्रयासों की सराहना की. दोनों नेताओं ने संघर्ष को बढ़ने से रोकने और क्षेत्र को और अधिक उथल-पुथल में जाने से रोकने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने के महत्व पर सहमति व्यक्त की.

राष्ट्रपति अब्देल-फतह अल-सिसी व इमैनुएल मैक्रॉन

बयान के अनुसार, दोनों नेताओं ने क्षेत्र में स्थायी सुरक्षा और स्थिरता हासिल करने के सर्वोत्तम तरीके के रूप में दो-राज्य समाधान को आगे बढ़ाने की आवश्यकता को दोहराया. मिस्र और कतर ने पिछले हफ़्ते वार्ता का एक नया दौर आयोजित किया. जिसमें अमेरिका ने भी भाग लिया,इसका उद्देश्य युद्ध विराम समझौता और इजरायल और हमास के बीच बंदियों की अदला-बदली का समझौता करना था. हालाँकि, इस दिशा में प्रगति बहुत कम हुई है।

अमेरिका: डोनाल्ड ट्रंप पर हमले की साजिश ईरान ने रची, मिली खुफिया जानकारी

वाशिंगटन: राष्ट्रीय सुरक्षा अधिकारियों के अनुसार शनिवार को पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की हत्या के प्रयास से कुछ सप्ताह पहले ही अमेरिका को एक मानव स्रोत से ईरान द्वारा डोनाल्ड ट्रंप की हत्या की साजिश के बारे में खुफिया जानकारी मिली थी. इसके बाद ट्रंप की सुरक्षा बढ़ा दी गई. हालांकि, अधिकारियों ने कहा कि इस ईरानी साजिश और शनिवार को ट्रंप की हत्या का प्रयास करने वाले 20 वर्षीय युवक के बीच कोई ज्ञात संबंध नहीं है।

अमेरिकी खुफिया सेवा और ट्रंप अभियान को ईरानी खतरे के बारे में सूचित किया गया था. परिणामस्वरूप सुरक्षा बढ़ा दी गई थी, जैसा कि एक अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा अधिकारी ने पुष्टि की है. ट्रंप और उनके पूर्व विदेश मंत्री माइक पोम्पिओ को 2020 के ड्रोन हमले के बाद से तेहरान से धमकियों का सामना करना पड़ रहा है. इस हमले में इराक में ईरान के कुद्स बल के नेता कासिम सुलेमानी की मौत हो गई थी।

अमेरिकी सीक्रेट सर्विस के प्रवक्ता एंथनी गुग्लिल्मी ने कहा कि उन्हें और अन्य एजेंसियों को लगातार नए संभावित खतरे की जानकारी मिल रही है और आवश्यकतानुसार संसाधनों को समायोजित करने के लिए कार्रवाई की जा रही है. उन्होंने कहा, 'हम किसी विशिष्ट खतरे पर टिप्पणी नहीं कर सकते, सिवाय इसके कि सीक्रेट सर्विस खतरों को गंभीरता से लेती है और उसके अनुसार कार्रवाई करती है।

व्हाइट हाउस की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद की प्रवक्ता एड्रिएन वॉटसन ने कहा कि अमेरिकी सुरक्षा अधिकारी वर्षों से पूर्व ट्रंप प्रशासन के अधिकारियों के खिलाफ ईरानी खतरों पर नजर रख रहे थे. संयुक्त राष्ट्र में ईरानी मिशन ने रिपोर्ट को 'निराधार और दुर्भावनापूर्ण' बताते हुए खारिज कर दिया और कहा कि ट्रम्प 'एक अपराधी हैं जिन पर मुकदमा चलाया जाना चाहिए और उन्हें कानून की अदालत में दंडित किया जाना चाहिए.।

पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने शनिवार को अपने ऊपर हुए हमले के बाद सोमवार (स्थानीय समय) को रिपब्लिकन नेशनल कन्वेंशन में अपनी पहली सार्वजनिक उपस्थिति दर्ज कराई।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा।

बांग्लादेश में छात्र आन्दोलन के मद्देनजर नेपाल दूतावास ने अपने छात्रों के लिए जारी किया अलर्ट

काठमांडू। बांग्लादेश में हिंसक छात्र आंदोलन के मद्देनजर नेपाली राजदूतावास की तरफ से अपने छात्रों के लिए एक अलर्ट जारी किया गया है। इसमें वहां पढ़ाई कर रहे नेपाली छात्रों को हॉस्टल से बाहर नहीं निकलने की सलाह दी गई है। ढाका में चल रहे छात्र आन्दोलन के क्रम में 7 छात्रों के मारे जाने के बाद स्थिति तनावपूर्ण हो गई है।

ढाका में स्थित नेपाली दूतावास ने वहां पढ़ाई कर रहे सैकड़ों नेपाली छात्रों के नाम एक अलर्ट जारी करते हुए अत्यावश्यक काम के अलावा अपने हॉस्टल से बाहर नहीं निकलने की सलाह दी है। दूतावास की प्रवक्ता रिया क्षेत्री ने बताया कि जिस तरह से छात्र आन्दोलन हिंसक रूप ले रहा है, उसको देखते हुए सभी नेपाली छात्रों को अपने हॉस्टल से बाहर नहीं निकलने के लिए कहा गया है। प्रवक्ता क्षेत्री ने बताया कि ढाका के सभी मेडिकल कॉलेजों में सैकड़ों की संख्या में नेपाली छात्र पढ़ाई कर रहे हैं। सभी छात्रों को अपनी सुरक्षा को लेकर सतर्क रहने और दूतावास से नियमित संपर्क में रहने को भी कहा गया है। उन्होंने बताया कि दूतावास की तरफ से भी नेपाली छात्रों से सभी मेडिकल कॉलेजों में संपर्क कर उनकी सुरक्षा पुख्ता की जा रही है। दूतावास ने नेपाली छात्रों के लिए इमरजेंसी हेल्पलाइन नंबर भी जारी किया है।

गौरतलब है कि बांग्लादेश में कोटा सिस्टम का विरोध करते हुए हजारों छात्र सड़कों पर उतर कर प्रदर्शन कर रहे हैं। पुलिस के साथ झड़प में अब तक सात विद्यार्थियों की मौत हो चुकी है, जिसके कारण स्थिति तनावपूर्ण हो गई है। हिंसक प्रदर्शन को देखते हुए प्रशासन ने सभी स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों को अगली सूचना तक के लिए बन्द करने का आदेश दिया है।

जून में 2 फीसदी पर स्थिर रही ब्रिटेन की मुद्रास्फीति, ब्याज दरों में संभावित कटौती में अनिश्चता

लंदन: यूके में जारी महंगाई के बीच राहत की खबर आई है. बुधवार को जारी आधिकारिक आंकड़ों से पता चला कि जून तक ब्रिटेन में मुद्रास्फीति बैंक ऑफ इंग्लैंड के टारगेट रेट 2 प्रतिशत पर स्थिर रही. यह नीति निमार्ताओं के लिए अगले महीने उधार लेने की लागत में कटौती करने के लिए पर्याप्त हो सकता है। मामले में यूके के नेशनल स्टैटिस्टिक्स डिपार्टमेंट ने कहा कि वार्षिक मुद्रास्फीति दर में सबसे अधिक वृद्धि रेस्तरां और होटलों से हुई, कुछ अर्थशास्त्रियों ने इस वृद्धि का क्रेडिट टेलर स्विफ्ट के ब्रिटेन दौरे को दिया. वहीं, सबसे अधिक गिरावट कपड़ों और जूतों में हुई, जिनकी महीने के दौरान व्यापक बिक्री हुई. पिछला साल जून की तुलना में फ्लैट रीडिंग उम्मीद से थोड़ी ज्यादा थी. ज्यादातर अर्थशास्त्रियों ने 1.9 फीसदी तक मामूली गिरावट का अनुमान लगाया था.

बैंक ऑफ इंग्लैंड पर रहेगी नजर

इससे पहले देश में कोरोना वायरस महामारी के दौरान सप्लाई चेन के मुद्दों के परिणामस्वरूप और फिर यूक्रेन पर रूस के आक्रमण के कारण ऊर्जा लागत बढ़ गई थी. अब देखना यह होगा कि क्या बैंक ऑफ इंग्लैंड 1 अगस्त को अपनी मुख्य ब्याज दर 5.25 प्रतिशत से कम करेगा. कुछ नीति-निमार्ता अभी भी महत्वपूर्ण सेवा क्षेत्र में मूल्य वृद्धि के पैमाने और वेतन वृद्धि की गति को लेकर चिंतित हैं, जिससे ब्याज दरों में जल्द कटौती होने पर मुद्रास्फीति के पुनः बढ़ने का जोखिम बढ़ जाता है.

कब तक टिकी रहेगी मुद्रास्फीति

एसेट मैनेजमेंट फर्म एबर्डन के डिप्टी चीफ ल्यूक बाथोलोम्यू ने कहा, "आज की मुद्रास्फीति रिपोर्ट बैंक ऑफ इंग्लैंड के अगस्त के दर निर्णय को अनिश्चित बनाए रखेगी. मौलिक रूप से सेवाओं की मुद्रास्फीति की निरंतर स्थिरता बैंक को यह सोचने पर मजबूर कर देगी कि मुद्रास्फीति 2 फीसदी के टारगेट पर कब तक टिकी रहेगी."

बैंक ऑफ इंग्लैंड ब्याज दरों को बढ़ाया

यूएस फेड और अन्य केंद्रीय बैंकों की तरह बैंक ऑफ इंग्लैंड ने भी मुद्रास्फीति में तेजी से वृद्धि का मुकाबला करने के लिए 2021 के अंत में ब्याज दरों को शून्य से बढ़ा दिया, जो 2022 के अंत में 11 प्रतिशत से अधिक हो गई. उच्च ब्याज दरें ने कर्ज अधिक महंगा बना दिया. इसने मुद्रास्फीति को कम करने में मदद की है, लेकिन उन्होंने ब्रिटिश अर्थव्यवस्था पर भी भार डाला है, जो महामारी के बाद से मुश्किल से बढ़ी है.

पीएम कीर स्टारमर का मिशन अर्थव्यवस्था में सुधार

प्रधानमंत्री कीर स्टारमर ने इस बात पर जोर दिया कि ब्रिटेन की आर्थिक वृद्धि को बढ़ाना उनकी लेबर सरकार का मुख्य मिशन होगा. उनकी सरकार बुधवार को आने वाले वर्ष के लिए अपनी योजनाओं की घोषणा करेगी. स्टारमर ने कहा कि संसद में किंग्स स्पीच में घोषित उपायों से ब्रिटेन की आर्थिक वृद्धि में तेजी आएगी और आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा देकर देश भर के लोगों के लिए धन का सृजन होगा।

भारत में नेपाल के राजदूत को फिलहाल दिल्ली में ही रहने का आदेश

काठमांडू,। भारत में नेपाल के राजदूत के कार्यकाल को कुछ दिनों के लिए बढ़ा दिया गया है। नेपाल में सत्ता समीकरण बदलने पर पिछली सरकार ने भारत समेत 11 देशों के राजदूतों को पद से बर्खास्त कर दिया था।

नेपाल सरकार ने भारत में रहे अपने राजदूत डा शंकर शर्मा की बर्खास्तगी के फैसले पर रोक लगा दी है। नेपाल की पिछली प्रचण्ड सरकार ने उन्हें पद से हटाते हुए दूसरे राजदूत की नियुक्ति कर दी थी। इस बीच देश में सत्ता समीकरण बदलने के साथ ही ओली सरकार ने दिल्ली में अपने राजदूत को अगले आदेश तक वहीं रहने को कहा है। नेपाल की विदेश मंत्री डा आरजू राणा देउवा के प्रस्ताव के बाद कैबिनेट बैठक में नए राजदूत की नियुक्ति के फैसले को वापस लेने और पुराने राजदूत डा शर्मा को तुरंत प्रभाव से दिल्ली में ही बने रहने का आदेश दिया गया है।

दिल्ली से वापसी की तैयारी कर रहे राजदूत डा शर्मा ने बताया कि उन्हें विदेश मंत्रालय की तरफ से अगले आदेश तक अपने पद पर बने रहने को कहा गया है। उन्होंने कहा कि उनकी विदाई की पूरी तैयारी हो चुकी थी और उनका सामान भी वापस काठमांडू भेजने के लिए बुक कर दिया गया था लेकिन अचानक नए फैसले के बाद अब उनको कुछ दिन और दिल्ली में ही रहना पड़ सकता है।

नेपाल की पिछली प्रचण्ड सरकार ने नेपाली कांग्रेस के साथ गठबन्धन टूटने के बाद उनके कोटे में रहे भारत, अमेरिका, यूके, कनाडा सहित 11 देशों के राजदूतों को पद से हटाने का फैसला किया था। इतना ही इन सभी देशों में नए राजदूत की नियुक्ति भी कर दी गई थी। भारत के लिए नए राजदूत के तौर पर पूर्व मुख्य सचिव लोकदर्शन रेग्मी को नियुक्त कर दिया गया था। गठबन्धन बदलने और ओली के प्रधानमंत्री बनने के बाद प्रचण्ड सरकार के कई फैसलों को बदला गया है, जिनमें पुराने राजदूतों की बर्खास्तगी और नए राजदूतों की नियुक्ति भी शामिल है।

नेपाल के प्रधानमंत्री ओली संसद में रविवार को पेश करेंगे विश्वास मत का प्रस्ताव

काठमांडू। नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली संसद के निचले सदन प्रतिनिधि सभा में रविवार को विश्वास मत का प्रस्ताव पेश करेंगे। नेपाल के संविधान में प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के 30 दिनों के अंदर विश्वास का मत हासिल करने का प्रावधान है। प्रधानमंत्री सचिवालय की तरफ से संसद सचिवालय को भेजे गए पत्र में रविवार (21 जुलाई) को विश्वास मत का प्रस्ताव पेश करने की जानकारी दी गई है। सीपीएन (यूएमएल) के प्रमुख सचेतक महेश बर्तौला ने बताया कि मंगलवार को ही संसद सचिवालय में मौखिक जानकारी दी गई थी। बुधवार को लिखित पत्र भी भेज दिया गया है। नेपाली कांग्रेस के समर्थन से प्रधानमंत्री बने सीपीएन (यूएमएल) के अध्यक्ष केपी शर्मा ओली को दो तिहाई सांसदों का समर्थन है। 275 सदस्यीय प्रतिनिधि सभा में बहुमत के लिए 138 सांसदों का समर्थन चाहिए। प्रतिनिधि सभा में सीपीएन (यूएमएल) के 78 और नेपाली कांग्रेस के 89 सदस्य हैं। ओली को समर्थन करने वालों में नेपाली कांग्रेस के अलावा राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी के 14, जनता समाजवादी पार्टी के 12, जनमत पार्टी के 6, लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी के 4 और नागरिक उन्मुक्ति पार्टी के 4 सांसद भी शामिल हैं।

प्रमुख प्रतिद्वंद्वी निक्की हेली का डोनाल्ड ट्रंप को 'मजबूत समर्थन'

वाशिंगटन। अमेरिका में राष्ट्रपति पद के लिए होने वाले चुनाव में रिपब्लिकन उम्मीदवार पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड जे. ट्रंप की राह और आसान हो गई। ट्रंप की अंतिम, प्राथमिक और प्रमुख प्रतिद्वंद्वी निक्की हेली ने मिल्वौकी में मंगलवार को रिपब्लिकन नेशनल कन्वेंशन के प्रारंभिक संबोधन में ट्रंप का समर्थन किया। यह सुनते ही ट्रंप और उनके साथी जेडी वेंस के चेहरे पर मुस्कान उभरी।

निक्की हेली ने रिपब्लिकन नेशनल कन्वेंशन की दूसरी रात कहा कि राष्ट्र की खातिर पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप को उनका 'मजबूत समर्थन' है। उल्लेखनीय है कि सुश्री हेली को ट्रंप का सबसे मजबूत प्रतिद्वंद्वी माना जाता है। कन्वेंशन में फ्लोरिडा के गवर्नर रॉन डेसेंटिस मौजूद रहे।

भारत-ब्रिटेन के मंत्रियों में प्रस्तावित एफटीए पर आगे बढ़ने पर हुई चर्चा

नई दिल्ली। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने इटली में ब्रिटेन के व्यापार मंत्री जोनाथन रेनॉल्ड्स से मुलाकात की। इस दौरान दोनों मंत्रियों ने भारत और ब्रिटेन के बीच प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर बातचीत को आगे बढ़ाने की योजना पर चर्चा की।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने बुधवार को जारी एक आधिकारिक बयान में बताया कि यह द्विपक्षीय बैठक इटली के रेजियो कालाब्रिया में जी- के व्यापार मंत्रियों की बैठक से इतर हुई। गोयल ने इटली में जी-7 व्यापार मंत्रियों की बैठक से इतर ब्रिटेन के व्यापार मंत्री से मुलाकात पर कहा कि अपने अच्छे मित्र जोनाथन रेनॉल्ड्स से फिर से मिलकर बहुत अच्छा लगा।

गोयल ने व्यापार और व्यापार के लिए यूके के राज्य सचिव के रूप में उनकी नियुक्ति पर उन्हें बधाई दी। वाणिज्य मंत्री ने इस दौरान द्विपक्षीय आर्थिक संबंधों को और गहरा करने की योजनाओं पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि हमारी बातचीत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हमारी चल रही एफटीए वार्ता है। उन्होंने पारस्परिक रूप से लाभकारी व्यवस्था को अंतिम रूप देने के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की। गौरतलब है कि पीयूष गोयल इटली में 16-17 जुलाई को आयोजित जी-7 व्यापार मंत्रियों की बैठक के आउटरीच सत्र में भाग लेने के लिए आधिकारिक दौरे पर हैं।

ओमान के तट के पास व्यापारिक जहाज डूबा, 16 नाविकों में 9 को बचाया गया, अन्य की तलाश जारी

नई दिल्ली: खाड़ी देश ओमान के तट के पास तेल टैंकर के डूबने से 13 भारतीय समेत 16 नाविक लापता हो गए थे. हालांकि नौ नाविकों को सुरक्षित बचा लिया गया है, जिनमें 8 भारतीय और एक श्रीलंकाई नागरिक है. ओमान में भारतीय दूतावास ने एक्स पर एक पोस्ट में बताया कि दूतावास स्थानीय अधिकारियों और भारतीय नौसेना के साथ रेस्क्यू ऑपरेशन का समन्वय कर रहा है. एमटी प्रेस्टीज फाल्कन जहाज 15 जुलाई को ओमान के तट के पास डूब गया था. आईएनएस तेग द्वारा 9 चालक दल को बचा लिया गया है, जिनमें 8 भारतीय और एक श्रीलंकाई नागरिक है. शेष चालक दल के सदस्यों को बचाने के लिए खोज और बचाव अभियान क्षेत्र में जारी है.

इससे पहले, बुधवार को दिल्ली में सरकारी सूत्रों ने ईटीवी भारत को बताया कि अफ्रीकी देश कोमोरोस का ध्वज वाला व्यापारी जहाज एमटी फाल्कन प्रेस्टीज (टळ ऋह्ळ्ङ्कल्ल ढ१ी२३ी) ने 14 जुलाई को लगभग 22:00 बजे ओमान के तट पर संकट की सूचना दी थी. जहाज पर चालक दल के 16 सदस्य सवार हैं, जिनमें से 13 भारतीय नाविक हैं. माना जा रहा है कि जहाज डूब गया है. ओमान में हमारा दूतावास स्थानीय अधिकारियों के साथ लगातार संपर्क में है. ओमान समुद्री सुरक्षा केंद्र (ओएमएससी) द्वारा नाविकों के लिए खोज और बचाव अभियान चलाया जा रहा है. भारतीय नौसेना भी खोज और बचाव अभियान में शामिल हो गई है.

मैरीटाइम सिक्योरिटी सेंटर के अनुसार, कोमोरोस के ध्वज वाले व्यापारिक जहाज में 16 सदस्यीय चालक दल था, जिनमें 13 भारतीय और तीन श्रीलंकाई नागरिक हैं. लापता नाविकों का पता लगाने के लिए खोज और बचाव अभियान चलाया जा रहा है. यह घटना सोमवार को रास मदरका से 25 समुद्री मील दक्षिण-पूर्व में हुई.

नेटको एफजेडई कंपनी का था जहाज

इक्वासिस मरीन डेटाबेस के अनुसार, एमटी फाल्कन प्रेस्टीज जहाज संयुक्त अरब अमीरात (यूईए) स्थित नेटको एफजेडई कंपनी का है. सूत्रों के अनुसार, यह जहाज छोटा था, जिसकी भार क्षमता लगभग 7,000 टन थी. जहाज को यूएई के हमरियाह ऑयल टर्मिनल बंदरगाह पर पहुंचना था.

भारत-ओमान के बीच रणनीतिक समुद्री संबंध

भारत और ओमान के बीच रणनीतिक समुद्री संबंध है जो इतिहास और आपसी हितों में गहराई से निहित है. इस संबंध में रक्षा सहयोग, आर्थिक साझेदारी और सांस्कृतिक आदान-प्रदान सहित विभिन्न पहलू शामिल हैं. भारत और ओमान के बीच समुद्री संबंध प्राचीन काल से हैं, दोनों देश अरब सागर के पार व्यापार करते हैं.

सदियों से दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान काफी महत्वपूर्ण रहा है. दोनों देशों के लोग भाषा, खान-पान और परंपराओं में समानताएं साझा करते हैं. भारत और ओमान नियमित रूप से संयुक्त सैन्य अभ्यास करते हैं, इसमें द्विपक्षीय नौसैनिक अभ्यास 'नसीम अल बहर' भी शामिल है. ये अभ्यास दोनों देशों की नेवी के बीच परस्पर संचालन और आपसी समझ को बढ़ाते हैं.

रक्षा स्मझौते: भारत और ओमान के बीच समुद्री सुरक्षा, सूचना साझा करना और प्रशिक्षण सहित कई रक्षा सहयोग समझौते हैं. ओमान भारतीय नौसेना के जहाजों के लिए दुक्म जैसे अपने बंदरगाहों तक पहुंच प्रदान करता है. यह पश्चिमी हिंद महासागर में भारत की उपस्थिति के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है.

भारत और ओमान के बीच व्यापार में तेल, गैस, खनिज, वस्त्र और कृषि उत्पादों सहित कई तरह के सामान शामिल हैं।